रहै जोकर परिवार

रहै जोकर परिवार

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

RAHAI JOKAR PARIWAR (रहै जोकर परिवार)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88811-54-5
दाम: 251/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2020)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक

ढेरपर बैसल फुलवारी लगौनिहार

संगे नव विहान अननिहारकेँ

अनुक्रम:

दहिबरी

तीन-चारि घन्टासँ गाममे हरविर्ड़ो उठल छल मुदा अपने कोनो भनक नहि बुझि पेलौं। हरविर्ड़ो ई उठल छल जे ‘जसमन्त बाबा अब-तबमे छैथ!’ तँए अन्तिम दर्शनक लेल सौंसे गाम गलो-गुल आ दौड़ो-बरहा लगि गेल छल। घटना तीन बजे बेरुका समैयक छी। भेल ई जे जसमन्त बाबाक पेटमे वायुक बढ़वाड़ि भऽ गेलैन जइसँ मन तेना औल-बौल करए लगलैन जे लोकक बीच मरैक डर सबहक मनमे पैस गेल। जसमन्त बाबाक देहक शक्ति सेहो जेना कमि गेलैन तहिना ठाढ़ भेलमे खसि पड़ला। एक तँ पेटक जनमारा गैस्टिकक प्रकोप, तैपर बेधड़क खसने देहमे तेना चोट लगि गेलैन जे चेतन शक्तिमे क्षीणता सेहो आबि गेलैन जइसँ एकाएक आँखि-मुँह दुनू बन्न भऽ गेलैन।

तीन रंगक आवाज गाममे उठि रहल छल। किछु गोरे जसमन्त बाबाकेँ मृत्यु घोषित करैत बजै छला जे ‘बाबा धोपचटेमे मरि गेला!’ एकर पूरक विचार सेहो जोड़ा रहल छल जे ‘बाबा सन धर्मात्माकेँ अहिना मृत्यु होइए। मरै बेर सेवा-ले केकरो मुँहतक्की नहि केलैन!’ आ किछु गोरे जसमन्त बाबाकेँ अब-तबमे रखि बजै छला जे ‘बाबा अब-तबमे छैथ, माने कखन छैथ आ कखन नहि छैथ तेकर कोनो ठेकान नहि!’ मुदा किछु गोरे अड़ि-अड़ि बजै छला जे ‘बाबा जीवित छैथ आ जीबे करता!’

अही तरहक विचारक बीच रखवारीवाली आ दीपवालीक बीच अपन-अपन विचारक चलैत कहा-कही सेहो शुरू भेल।

रखवारीवाली बाजल- “बाबाक अखन मरैबला उमेर थोड़े भेलैन अछि जे मरता। देहमे रोग भेने मनमे बेचैनी आबि गेल छैन।”

रखवारीवालीक बात सुनि दीपवाली बाजल- “बाबाकेँ आब लोकक कोन बात जे भगवानो नहि बँचा सकतैन!”

ओना, मरै-जीबैक बात जेते रखवारीवाली बुझै छैथ तेते दीपवाली नहि बुझै छैथ। जइसँ अपन-अपन धरणा मरै-जीबैक मनमे बनियेँ गेल छैन। ने रखवारीवाली अपना आँखिये बाबाकेँ लगसँ देखने छेली आ ने दीपेवाली, मुदा लोकक मुँहक सुनल बातसँ दुनूक कान तँ भरिये गेल छेलैन जइसँ दुनूक मनमे अपन-अपन बिसवास सेहो बनि गेल छैन। जीवन-मृत्युक किरदानी देखि रखवारीवालीक मनमे एहेन धारणा बनले छैन जे कुम्हारक बरतन जकाँ लोक काँच माटिक बनल अछि जे कनियोँ धक्का-धुक्की लगने फुटि जाइए! तैपर केतेको गोरेक मुहसँ सेहो सुनि चुकल छैली जे बाबा अब-तबमे छैथ। तहिना दीपवालीकेँ सेहो अपन विचारक धारणा मनमे बनल छैन। विचारक धारणा ई जे जहिना बच्चा जन्म लइए, धीरे-धीरे समैयक संग बढ़ैत-बढ़ैत बुढ़ होइए आ बुढ़सँ जखन झुनकुट बुढ़ होइए तखन पाकल कोनो अन्ने वा फले जकाँ झुना कऽ अपने खसि पड़ैए; से तँ अखन जसमन्त बाबा नहि भेल छैथ। जेकरा-जेकरा मुहेँ जसमन्त बाबाक समाचार दीपवाली सुनने छेली, ओ वएह सुनने छेली जे हवा-बसात लगने अहिना समैया रोग पकड़ैए आ समय पुरला पछाइत अपने छुटियो जाइए। ओना, जसमन्त बाबाक मरैक सम्भावना दीपवालीक मनसँ सोल्होअना मेटाएलो नहियेँ छेलैन, तखन मेटाएले जकाँ घँसा जरूर गेल छेलैन जइसँ रखवारीए-वाली जकाँ दीपोवालीक मनमे अपन जीवित वाण छेलैन्हे।

ओना, रखवारियोवाली आ दीपोवालीकेँ गामक लोक बुझिते छैन जे बिनु जड़ि-सिरक झगड़ाऊ मनुक्ख छैथ। तँए हिनका दुनूक

बीचक झगड़ाक फरिछौटमे तेसर अपन काज बरदा नहियेँ पड़ए चाहैए। मुदा आजुक माहौल दोसर रंग भेने, दुनू गोरेक बीच कहा-कही भेने अनेको लोक दुनूक बात सुनि जमो भेल आ फरिछबैले तैयार सेहो भेल। ओना, बिनु बजौले सभ छल, किए तँ सभ जसमन्त बाबाक दर्शन करए जा रहल अछि। तइ बीचमे दुनू गोरेक कहा-कहा, बीच सड़केपर भेने, फरिछौटक परिस्थिति बनि गेल। दीपवालीक बात सुनि रखवारीवाली बजली-

"भगवानोक ठीकेदारी अहींकेँ अछि..!"

बिना लगामक घोड़ा जकाँ दीपवाली हीनहीनाइत जवाब देलकैन-

"भगवान भगवान छैथ, लोकक कहाकहीमे ओ किए औता, लोक बड़ बेसी हएत तँ भक्त बनि सकैए, उपासक बनि सकैए, तैठाम जे ई भगवानक दोख लगबै छथिन से हिनका अपना-सन भेलैन?"

रखवारियोवाली बेलगामक घोड़ा जकाँ हीहीयाइत बाजल-

"अपना सन नइ भेल तँ की अहाँ सन भेल?"

अपना सन भेल कि अहाँ सन भेल, तेकर अर्थ दीपवालीकेँ दोसरे लगि गेलैन। किए तँ दीपवालीकेँ बुझल जे अण्डी तेलक दीपक इजोत आँखिकेँ कडुअबैए मुदा गोटक तेल वा मटिया तेलक इजोत ओहन प्रकाश दइए जइसँ अन्हार दुनियाँकेँ लोक प्रकाशित देखैए।

रखवारीवाली आ दीपवालीक बीचक जे गप-सप्पक क्रम छल ओ अपने अगरबत्ती जकाँ मसल्ला सठने मिझा गेल।

सात बजे साँझक समय। काल्हिये चैत सम्पन्न भेल आ आइ बैशाख चढ़ल, तँए सात बजे साँझ रहितो माघक तेसर साँझ सन अन्हार नहि छल, छल पहिल ओहन साँझ जकाँ जे सूर्य तँ पाट लऽ

लेने छला मुदा अकासमे लाली दिने जकाँ पसरल छल। बेरुका समैयक काजक बिसरजन करबाक समय देखि अपनो खेतसँ दरबज्जापर एबे कएल छेलौं कि कानमे भनक लागल। मुदा तैयो अपन ऐगला प्रक्रियाक भाँजक तैयारीमे जुटले रहलौं। माने एक उखड़ाहा काजक बिसरजन आ दोसर काजक बीचक जे समय होइए तइसँ प्रवेश करैले जे लोक अपन तैयारी करैए, आ तैसंग दिनक बिसरजन आ रातिक आगमन बीच जे अपन नित्य क्रिया अछि, तइमे लागि गेलौं। कलपर (चापाकल) मुँह-हाथ धोइते रही कि पत्नी लगमे आबि बजली-

"जसमन्त बाबा नहि बँचता।"

पत्नीक बात सुनि मन एकाएक हहरए लगल। हहरए ई लगल जे एकाएक जसमन्त बाबाकेँ की भऽ गेलैन जे पत्नी एहेन बात बजली। मुदा लगले फेर अपने मन कहलक जे पहिने जान तखन ने जहान। काजसँ आएले रही तँए देहोक थकान आ मनोक थकान भइये गेल छल। जइसँ ऐगला काज देख, सँझुका उखड़ाहाक काज देखि मन असकताइते छल। तैबीच पत्नीक मुँहक समाचार- 'जसमन्त बाबा आब नहि बँचता', आरो मनकेँ मथए लगल। ओना, ऐगला काज पकड़ैक जिज्ञासा मनमे ओहिना उत्सुका रहल छल जे जीवन तँ कर्मे–काजे–ले मनुक्खकेँ प्राप्त भेल अछि। जे (कर्म) जिनगीक संग चलैत-चलैत जीवन मुक्त करैए, तँए कर्म जखने जीवनसँ छुटल कि मृत्यु भेल। माने मुक्तिक अवरोध भेल। जीवन मुक्त तँ तखने ने भेटैए जखन जीवन भरिक काजक अन्तिम सीमाक काज समाप्त होइए...। मनमे नव-नव विचार जगने मनक थकान तँ लगले मेटा गेल, मुदा देहक थकान कनी-मनी कमि जरूर रहल छल मुदा सोल्होअना मेटाएल नहि छल। जेकरा मेटाएब जरूरी छेलए-हे। किए तँ जखने पैछला काजक थकान देहकेँ पकड़ने रहत

तखने ऐगला काज करैक ओ उत्साह नहियेँ औत, जइ उत्साहक जरूरत आगूक काज लेल होइत अछि। काजोक अपन-अपन उत्साह होइ छै किने। जे कियो उत्साहित भऽ अपन काज करै छैथ हुनका काजक सफलताक जेते आशा रहै छैन तेते अनउत्साहित लोकक काजक नहियेँ होइ छैन। थोड़-थाड़ जे देहक थकान मनसँ छुटि देहकेँ पकड़ने छल, ओकरा मेटबैक खियालसँ पत्नीकेँ कहलयैन-

“जसमन्त बाबा ऐठाम जाएब, तइ बीचमे अहाँ जलखै-चाहक ओरियान करू।”

पत्नी आँगन दिस बढ़ली आ अपने हाँइ-हाँइ मुहोँ-कान धोइत रही आ मने-मन विचारितो रही जे जसमन्त बाबाक समाचार तँ अपना परिवारमे ने सुनलौं, जे सतो भऽ सकैए आ फुसियो भइये सकैए। ओना, कोनो उड़न्ती समाचार ने सोल्होअना सत होइए आ ने सोल्होअना असत्ते होइए। ओइमे किछु-ने-किछु कमी-बेसी होइते अछि। मुदा ई तँ भेल शतप्रतिशत् विचार। मुदा बीचमे, माने एक प्रतिशतसँ लऽ कऽ निनानबे प्रतिशत तकक विचार दुनूक जोड़ुआ चलिते अछि। माने ई जे कोनो विचार–बात वा समाचार–निनानबे प्रतिशत सत् रहल आ एक प्रतिशत फुसि रहल। तहिना कोनो निनानबे प्रतिशत फुसि रहल आ एक प्रतिशत सत् रहल। ओना, तहूमे बुझब कठिन नहि अछि। किए तँ जेकर मात्रा बेसी रहल ओइ अनुकूल लोक अपन विचार बना लइ छैथ। मुदा असल झमेल ओइठाम शुरू होइए जैठाम कम मात्राक दूरी रहैए, माने कोनो एकावन प्रतिशत रहल आ कोनो उनचास प्रतिशत। कहलो जाइए जे लंकामे जे बड़ छोट ओ उनचास हाथ..! भाय, गिनतीमे एक-सँ-उनचास सीढ़ी ऊपर भेल आ भेल सभसँ छोट, से केना भेल? जिनगीक कियो निनानबे सीढ़ी चढ़ि गेला, एक सीढ़ी चढ़ैमे माने

शत-प्रतिशत जीवन धारण करैमे जँ कोनो कारणे नहि चढ़ि सकला, तँ हुनका संग की न्याय हेबा चाही..? मुदा लगले मन फुटि बाजल-

“परीछाक परिणाम सेहो दू-दिसिया होइते अछि, कियो निच्चासँ प्रथम होइए तँ कियो ऊपरसँ। एहनो तँ सम्भव होइते अछि।”

मनक थकान हेट भेने आ देहक थकान मेटेने मन सोल्होअना फरहर भऽ गेल। तैबीच पत्नी जलखै नेने दरबज्जापर पहुँच चुकल छेली। अपनौं लोटामे पानि लेलौं आ दरबज्जा दिस बढ़लौं। लग पहुँचते पत्नी जलखै चौकीपर रखि आँगन दिस बढ़ैत बजली-

“चाहो लगिचाएले अछि।”

पत्नीक सूत्रवद्ध काज देखि अपनो मन सुतिया लगल। सुतिया ई लगल जे एक तँ गामक श्रेष्ठजन जसमन्त बाबा छैथ, हुनकर समाचार छिऐन, तैठाम अपन की दायित्व बनैए? झलफलाएलमे ने विचार झलफलाइत अबैए, मुदा अकलवेरा समयमे से तँ नहि होइए। आँखिक सोझमे जसमन्त बाबा छैथ, तखन अपने किए विचारैमे देरी लगैत। सएह भेल। जलखै नीक जकाँ सठलो नइ छल, पत्नी चाह अननौं ने छेली कि तइ बिच्चेमे मन मानि गेल जे अपन पत्नीक मुहेँ अपना घरमे जसमन्त बाबाक सम्बन्धमे सुनलौं, हुनको तँ परिवार छैन्हे, तँए उचित बनैए जे गामक लोकक बातक फेड़मे नहि पड़ि हुनके ऐठाम जा बात बुझिऐ। देरीए सही मुदा ठौरपर तँ पहुँचब।

पहिल साँझक प्रकाश समाप्त भऽ दोसर साँझक अन्हार पसैर चुकल छल। घर-घर दीप-बाती जरियो रहल छल आ जरौलो जा रहल छल। चाह पीब पान खा जसमन्त बाबा ऐठाम विदा भेलौं। रास्तामे केते गोरे टोकबो केलैन जे अन्हारमे केतए जाइ छी, मुदा सभकेँ एक्के उत्तर दैत- लगले अबै छी, कहैत रास्तामे केतौ ने

रूकलौं। जसमन्त बाबाक दरबज्जापर जाइसँ पहिने जसमन्त बाबाक ममियौत भातीज पहुँच चुकल छलैन। भाय, समृद्ध परिवारमे समृद्धताक जे-जे कारण अछि ओइमे अति आवश्यक जे अछि, पहिने ओकर भरपाइक बेवस्था हेबा चाही किने...।

जसमन्त बाबाक ममियौत भातीज किसानी जिनगीसँ सभ दिन जुड़ल रहला तँए कृषि सम्बन्धित जे आवश्यक काज अछि तेकरा सम्हारैत ममियौत भातीज अपन परिवारक भार पत्नीकेँ सुमझा अपने जसमन्त बाबा-ऐठाम आएल छला। परिवारक अधिकांश, खासकऽ पुरुख वर्ग बाबाक संग लहेरियासराय गेल रहथिन। हमरा देखिते सुबुधनाथ बजला- "आउ-आउ, भाय!"

ओना, सुबुधनाथसँ एक-दू बेर भेँट भेल छल मुदा गप-सप्प नहि भेल छल, तँए चेहरासँ चिन्है छेलिऐन मुदा गप-सप्प नहि भेने अनभुआर तँ रहबे करैथ। सुबुधनाथक बात सुनि मन परिवारक बेवहारपर पहुँच गेल। यएह ने परिवारक जीवित संस्कृति भेल जे दोस्त होथि कि दुश्मन, शुभचिन्तक होथि कि अशुभचिन्तक, जँ दरबज्जापर पहुँच गेला तँ हुनका उम्रानुकूल अभिवादन करैत ऐगला गप-सप्पक मुँह आदरपूर्वक बना दिऐन। विचारभेद, काजभेद अपन विचार-बीच वा काजक बीच अछि, तइले अनोन-बिसनोन हएब नीक थोड़े हएत। ओना, सुबुधनाथक अभिवादन सुनि मनमे दू रंगक विचार उठल। पहिल उठल जे सुबुधनाथक परिचय नीक जकाँ बुझि ली, आ दोसर उठल जे जइ काजे आएल छी पहिने से बुझि ली। असमंजसमे पड़ल मने बजलौं-

"जसमन्त बाबाक की समाचार छैन?"

सुबुधनाथ बजला- "एक डेढ़ घन्टा हमरो एना भेल अछि, तइसँ पहिनहि चरिचकिया गाड़ीसँ समांग सभ लहेरियासराय लऽ गेलैन, तँए आँखिक देखल तँ कोनो समाचार नहि अछि मुदा अबिते

जे सुनलौं से कहि सकै छी।”

सुबुधनाथक बात सुनि मनकेँ मनबए लगलौं जे अखन तँ दूटा मुख्य आधार भेटिये रहल अछि। पहिल, अपन पारिवारिक सम्बन्धसँ सुबुधनाथ भातीज छथिन, दोसर, जखन हुनका दरबज्जापर बैस गप-सप्प कऽ रहलौं अछि तखन सत् छोड़ि झूठ केना हएत। बजलौं-

“हँ हँ, अहूँ तँ आने गामसँ आएल छी, तँए जँ घन्टा-दू-घन्टा देरियोसँ एलौं तँ ओ समैयेपर आएब भेल। तइ संग परिवारक लोक भेने परिवारेजन सभसँ ने जे सुनलौं सएह कहब।”

सुबुधनाथ बजला- “दुनू भाँइयो आ काकियो संगे गेल छैथ, मुदा दुनू पुतोहुओ आ धियो-पुता सभ अछिए। हुनके सभसँ जे सुनलौं से कहै छी।”

परिवारक बात सुनि मन मानि गेल जे परिवारक बात छी, तँए जे हएत से साँचे हएत। भाय, ऐठाम ई नइ बुझब जे परिवारक माने पत्नी आ पत्नियेँक आदेश भेल परिवारक आदेश आ वृद्धजन वा श्रेष्ठजनक कान तक भलेँ ओ विचार पहुँचए वा नहि पहुँचए। ऐठाम परिवारक माने बुझब जे जे परिवारक जे धड़गत धार पकैड़ चलैए ओकरा समयानुकूल बनबैत सम्मिलत धार बना चलब...। बजलौं-

“हँ, हँ, अहूँ सएह ने कहि सकै छी। जसमन्त बाबाक शरीरमे की भेलैन से आन थोड़े सोल्होअना बुझि सकैए। ओ तँ अपनेटा बुझि सकै छैथ।”

सुबुधनाथ बजला-

“अखन करीब आठ बजैत हएत। अढ़ाइ-तीन बजे बेरुपहर पेटमे दर्दक प्रकोप भेलैन से तेते उग्र भऽ गेलैन जे वेहोश भऽ खसि पड़ला।”

वायुक प्रकोपसँ जसमन्त बाबा अचेत भेला, ई कोनो बड़

भारी रोग नहि भेल। रोगक थाह पेबिते मन थेहगर भेल। बजलौं-

"जखनसँ सभकियो लहेरियासराय गेला तइ बीचक तँ कोनो समाचार नइ ने अछि।"

सुबुधनाथ बजला- "नहि।"

'नहि' सुनिते बजलौं- "अखन जाए दिअ। जँ गर भेटत तँ अखने हमहूँ जा कऽ भेँट करबैन।"

उठि कऽ विदा भेलौं। चैतक रान्हल लोक बाइस-तेबाइस बना बैशाखमे खेबे करै छैथ, भरिसक सहए ने असैर केलकैन..? मुदा लगले दोसर विचार उठि गेल जे खाइ-पीबैमे जसमन्त बाबा एकजुत्ती लोक, अपन मनोनुकूल चलैबला लोक छैथ, तखन खाइ-पीबैमे कोनो गड़बड़ भेल हेतैन से सम्भव नहि अछि, तखन की भेलैन? मुदा रोगक तँ सोल्होअना जानकार रोगिये भऽ सकै छैथ। जेना-जेना डेग घरमुहाँ बढ़ि रहल छल तेना-तेना मनमे अन्हार सेहो पसरल जा रहल छल। अपनो उमर आब ओहन नइ रहल जे अमावसिया सनक अन्हार रातिमे भरि-भरि राति ओहन सड़कपर पैडिलबला साइकिल बिना इजोतमे चलबै छेलौं, से आब थोड़े रहल। आब कि ट्रेण्ड ड्राइवरक ओ महत् रहल, आब तँ अनट्रेण्ड पाछूसँ धक्का मारि ट्रेडक दोख लगा अपनाकेँ ट्रेण्ड बनबैक ट्रेण्ड बनियेँ गेल अछि। मुदा डरे जँ रास्ता चलबे छोड़ि देब तखन तँ घरेमे दिन-राति घुरियाएल रहब..! किछु फुरिये ने रहल छल जे की करी वा की नहि करी। रातिक दस बाजि गेल। रंग-बिरंगक विचार मनमे उठिये रहल छल। कखनो-कखनो ईहो उठि जाइ छल जे जँ जसमन्त बाबा मरि गेला तँ अन्तिम जीवित दर्शन नहियेँ भऽ पौत। कखनो ईहो हुअए जे एते रातिमे लहेरियासराय विदा हएब आ रास्तामे किछु अपने भऽ गेल तखन की हएत? असमंजसमे पड़ल मने विचार केलौं जे घन्टा-डेढ़-घन्टाक रास्ता लहेरियासराय अछि, तैबीच जे जेबो करब आ

ईहो भाँज नहि बुझल अछि जे प्राइवेटमे केतौ छैथ आकि सरकारी अस्पतालमे छैथ। से नहि तँ साढ़े तीन बजे जे पहिल बस पटना-ले गामसँ खुजैए, तेकरा पकैड़ चलि जाएब। साढ़े चारि-पाँच बजे दरभंगा पहुँचब। दिनक समय रहत कोनो-ने-कोनो भाँज लगिये जाएत।

पाँच बजे भोरमे दरभंगा बस स्टेण्डसँ टेम्पू पकैड़ लहेरियासराय विदा भेलौं। संजोग बनल, जसमन्त बाबाक छोट बेटा- देवकान्त चौकेपर भेँट भऽ गेला। पुछलयैन-

“बाबाक की समाचार छैन?”

देवकान्त बजला- “पेटमे गैसक प्रकोप छेलैन। अबिते डॉक्टर साहैब प्रतिकार केलैन। थोड़बे कालक पछाइत मन हल्लुक भऽ गेलैन। अखन नीक छैथ। आइये घुमियो जाएब।”

देवकान्तक बात सुनि मन मानि गेल जे एलहा साफल भेल। देवकान्तक संगे गेलौं। जसमन्त बाबाकेँ देखिते गोड़ लगलयैन। बैसलौं। तइ बीच देवकान्त चाहो दोकानसँ अनलैन। दुनू गोरे चाहो पीबए लगलौं आ गपो-सप्प करए लगलौं। कहलयैन-

“बाबा! अहाँ तँ संयमित लोक छी, तखन एना..?”

जसमन्त बाबाक मन सोल्होअना शान्त रहैन। बजला-

“बौआ सुरेश, अपने मन धोखा देलक।”

‘अपने मन धोखा देलक’ सुनि अचम्भित भऽ गेलौं जे ई की बाबा कहलैन..! शंका उठल। शंका ई उठल जे भरिसक जसमन्त बाबाक रोग अखनो ओहिना जीवित छैन। मुदा खनहन मन देखि ईहो शंका हुअए जे जँ मन नीक नइ रहितैन तँ एते असथिर केना भेल रहितैथ। कछमछ-कछमछ करबे करितैथ। नीक हएत जे गप-सप्पकेँ आगू बढ़ाबी, अपने सभ भाँज लगि जाएत। पुछलयैन- “से

की बाबा?”

जसमन्त बाबा बजला- “बुझले छह जे परसुका रान्हल, माने चैतक रान्हल काल्हियो लोक खेलक आ केते गोरे आइयो बैशाखमे खाएत।”

बजलौं-

“हँ, से तँ खेबे करत!”

जसमन्त बाबा बजला-

“अही बीचमे ने मन धोखा देलक।”

‘मन धोखा देलक’ जसमन्त बाबाक मुहसँ बेर-बेर निकलै छेलैन, मुदा मन की धोखा देलकैन से बुझिये ने पेब रहल छेलौं। तँए मन औना रहल छल जे जसमन्त बाबा बुझि गेला। बुझिते मुस्कुराइत बजला-

“बौआ सुरेश! अरबा चाउरक भात, रोड़गरसँ उलौल राहरिक दालि आ दही दऽ कऽ पुतोहु बरी बनौने छेली। खाइले जखन बैसलौं तँ दहिवरी देखि मन अतीतमे वौआ गेल।”

बजलौं-

“की अतीतमे मन वौआ गेल?”

जसमन्त बाबा बजला-

“दहिवरी खेबामे तेतेक स्वादिष्ट छल जे अपन जीवनक बीतल सुआद सभ मोन पड़ि गेल।”

पुछलयैन-

“की जीवनक बीतल सुआद सभ मोन पड़ि गेल?”

जसमन्त बाबा बजला- “पहिल बेर सासुरमे दुरागमन दिन एहेन खेने रही, दोसर बेर समधियौरमे खेने रही आ तेसर बेर संगीक

संग संगी ऐठाम खेने रही। तही सभमे मन वौआ लगल। हाथकेँ मुँह देखले रहै, रसे-रसे तेते खुआ गेल जे बेसम्हार भऽ गेल।"

किछु भाँजपर विचार चढ़िये रहल छल। बजलौं-

"खेबे एहेन छी जे लोक सभ दिन खाइए, तखन केना..?"

अपन विचार खोलैत जसमन्त बाबा बजला-

"खेबेकाल मन वौआ अपन सासुरो, समधियौरो आ दोसोक ऐठाम पहुँच गेल तँए बेठेकान भोजन भऽ गेल। घन्टा एके-डेढ़ेक पछाइत पेट तनए लगल। चीत गरे सुति पेटकेँ केतबो अराम देलिऐ, मुदा ज्वालामुखी जकाँ तरसँ गैसक बुमकला पेटमे छुटए लगल। उठि कऽ ठाढ़ भेलौं कि खसि पड़लौं।"

बजलौं-

"अखन मन केहेन अछि?"

जसमन्त बाबा बजला-

"आब सोल्होअना बुलन्द छी। डॉक्टर सहाएबक हिसाब-बारी देवकान्त कऽ लइए, पछाइत सभ संगे चलब।"

बजलौं-

"बड़बढ़ियाँ।"

❑

शब्द संख्या : 2560, तिथि : 12 मार्च 2020

सघन बन

भोरमे अनचोके नीन टुटिते लाल भाइक मुहसँ अनायासे निकललैन-

“बाप रे! जीब कठिन अछि..!”

ओना, नीक जकाँ लाल भाइक भक् टुटल नइ रहैन, भकुआएलमे मुहसँ निकललैन। ओछाइनपर सँ उठि ठाढ़ भेल रहैथ। तइसँ किछुए पहिने पत्नी उठि घर बहारि रहल छेलखिन।

पतिक बात सुनि सुचित्रा भौजी मने-मन विचारि लेली जे भरिसक सपनाएल मन छैन तँए मुहसँ एहेन बोल निकललैन। एहनो भऽ सकैए जे सपना देखिते समय नीन टुटि गेल हेतैन, तहूसँ एना बजला अछि। ..मुँहक बातकेँ, सपनेक बात बुझि सुचित्रा भौजी झुठियाबए लगली। ओना, मनमे ईहो उठैत रहैन जे सुतैकाल, ओछाइनपर अबैसँ पहिने नीक जकाँ हाथ-पएर नइ धोने हेता तँए सपनेला अछि। फेर भेलैन जे जँ हाथ-पएर धोनौं होथि आ ओछाइनकेँ नीक जकाँ झाड़ि कऽ नहि ओछौने होइथ? मुदा अपने मन रोकैत कहलकैन जे ओछाइन तँ अपनेसँ झाड़ि कऽ ओछौने रही..! लगले फेर दोसर विचार जगलैन, एहनो तँ भइये सकैए जे पैशाव करि कऽ नहि सुतल होइथ।

अनिसचित विचार सुचित्रा भौजीक मनमे उठने निसचित विचार जगबे ने केलैन।

घर बाहरब छोड़ि सुचित्रा भौजी लाल भाइक चेहरापर नजैर देलैन। बसियाएल फूल जकाँ लाल भाइक चेहरा मौलाएल सन बुझि

पड़लैन। पतिक चेहरा देखि सुचित्रा भौजी किछु पुछैसँ पहिने परहेज करैत सोचली जे दिनक वा खाइ-पीबै राति तकक जँ बात रहैत तँ निर्भिक भऽ पुछलो जा सकइ छल मुदा लगले बिछानपर सँ निनाएल उठबे केलाह हेन। ई तँ ओहन अवस्था छी जखन कियो समाधि सम्पन्न करैत उठै छैथ। ई अवस्था दुनियाँ-दारीसँ हटल रहैक होइए, तइ बीच दुनियाँ-दारीक ओहन विषये किए सोझामे औत जे एना चौंक कऽ बजला..? ...किछु बजैसँ परहेज करैत सुचित्रा भौजी अपन मुँह बन्ने रखली।

लाल भायकेँ ओछाइनपर सँ उठिते पत्नीपर, माने घर बहारैत सुचित्रापर नजैर पड़ि गेने चेत एते चेतनशील भइये गेल रहैन जइसँ मनमे उठैत अनेको दृश्यकेँ मनेमे दाबि अनमनस्क भेल विचारि लेलैन जे मनक देखल दृश्यकेँ मने-मन किए ने मँथली जे आखिर एहेन दृश्य मनमे आएल केना? देखल दृश्य जँ दोहरा कऽ अबैए तँ ओ उचित भेल मुदा बिनु देखल ओहन दृश्य जँ अबैए तँ ओहन दृश्यक रूप मनमे बनल केना? तँए अनमनस्क ठाढ़ भेल लाल भाय विचारए लगला। भोरक सपना। भोरक सपना तँ सत् होइते अछि, की दृश्य देखलौं? यएह ने देखलौं जे जीवन विचड़नक बीच सघन बन पहुँच गेलौं, जइमे सुन्दर-सुन्दर गाछो-बिरीछ, झड़नो-पहाड़ आ बाघ-सिंह आ भालु सन जानवरो अछि। तइ बीच जीब केना सकै छी? जी-बन माने जिनगी बना जीब कठिन अछिए। मुदा लगले मन ठोस गबाही दैत कहलकैन जे कठिन जरूर अछि मुदा असम्भव अछि, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। जँ से रहैत तँ फेर जीवक जीवन अछि की नहि..!

चौंकल मन लाल भाइक छेलैन्हे, अपन पूर्वज मोन पड़लैन। राजा हरिश्चन्द्र सपनेमे ने राज-पाट सभ बोहा लेलैन। मुदा ई विचारबे ने केलैन जे राज-पाट राजवासीक छिऐक आकि अपन खतियानी

छी..!

लगले लाल भाइक मन मोड़ लेलकैन। मोड़ ई लेलकैन जे भोरमे सपना देखलौं। मुदा भोरक सपना कहब केकरा? जँ समयपर सुतल रहितौ, जइसँ नीन पुरि गेल रहैत आ उठैसँ पहिनहि भोरमे जँ सपना देखने रहितौं तखन, एक बात होइत। मुदा भरि राति आन-आन काजमे बाँझल रही आ भोरमे पलखैत भेलापर अराम करए ओछाइनपर गेलौं कि नीनक संग सपनो चलि आएल, एहेन सपनाकेँ कोन सपना कहब? ई तँ भेल जे विद्यालयमे नाओं लिखौलौं आ स्नातकक सुख मनमे नाचए लगल वा आमक आँठी रोपलौं आ मने-मन आम-चूरा खाए लगलौं..! असल सपना तँ ओ ने हएत जे विद्यालयमे प्रवेश केलौं आ एक-एक अक्षरकेँ सीखि ओकरा जोड़-घटाउ, गुणा-भाग करैत स्नातकक श्रेणीमे पहुँच अपनाकेँ स्नातकक सुख देब। आकि तुलसीकृत रामायणिक एक पाँति- ‘दैहिक दैविक भौतिक तापा, रामराज्य कबहुँ नहि व्यापा...।’ रटि लोकक बीच प्रवचन केना दऽ सकै छी। आम-चूरा खाइसँ पहिने, चूरा केना बनैए आ आममे सुअदगर रस वा गुद्दा केना अबै छै; तेकरा जखन मनमे मथि लेब तखन ने मैथिली शब्द बुझबै। तैबीच बुलेट गोलीसँ टिटही मारू आ गुलेतीक गुल्लीसँ सिंहक शिकार खेलै जाउ...। तुलसी बाबा तमसा कऽ रामायणमे ई पाँति लीखि देलैन सेहो बात नहियेँ अछि। ओ देह आ आत्माक स्पष्ट व्याख्या करैत लिखला अछि। खाएर जे अछि ओ रामायणिक बात भेल। किए तँ तुलसी दास सेहो सगुन रूप रामेकेँ पूज्य मानि जीवन भरि पूजन करैत रहला आ कबीरो दास रामेकेँ पूज्य मानि जीवन भरि पूजन करैत रहला मुदा दुनूक राम एके छैथ वा गुण-शीलक हिसाबसँ दू छैथ ओ तँ वएह दुनू गोरे अपन पनचैतियो करता आ कातमे बैस आत्मारामो देखबे करता। तइसँ लाल भायकेँ कोन मतलब छैन। हुनकर मन तँ अपने

भोरक चक्रमे भौराएल छैन। तइ बीच सुचित्रा पुन: लगमे आबि बजली-

“घरेक बरेड़ी मने-मन गनैत रहब आकि भोर भेल दुनियोँ गनए जाएब..?”

पत्नीक बात सुनि लाल भायकेँ तामस नहि उठलैन। नइ उठैक कारण भेलैन जे भौराएल शब्द पत्नीक मुहसँ सुनलैन। भौंरे ने दिनक अन्तिम पहरमे कमलक सिनेह पेब, अपने-आपकेँ समरपित करैत बिसरभोर होइत भोरक पहर कमलकेँ छोड़ि दुनियाँ देखए उड़ैए। ओना, लाल भाइक मन कमल आ भ्रमरक बीच जरूर गेलैन मुदा बेसी काल टिकलैन नहि। लगले अपन सपनाक दृश्य सोझहामे फेर आबि गेलैन। अपन मनक सपनाकेँ मनेमे दाबि विचारए लगला। जँ अपन मनक सपनाकेँ पत्नीक सोझमे खोलब आ ओ अँगने-अँगने टहैल-टहैल परसादी बाँटए लगती, माने आन-आनकेँ कहती, अनेरे होत्-सँ-होतान हएत। किए तँ कम आँट-पेटक लोकक कानमे, कोनो गम्भीर विचार वा पैघ विचार, गेने अनेरे कान कुकुअए लगैए आ जेहो विचार लोककेँ कहैबला नहि रहल सेहो विचार लोकक बीच बीआ-वाण (छिटा) भऽ जाइए। पत्नीपर सँ मन हटि लाल भायकेँ अपन सपनापर आबि गेलैन। अबिते मन कहलकैन जे अपने तँ सपनाक अस्सल विचार किछु बुझि नहि रहल छी, आ दोसरकेँ पुछि जँ बुझि नहि लेब तखन अनेरे मनमे बोझ बनल रहत जइसँ ने कोनो काज करैमे मन लागत आ ने असथिरे रहि पएत। जँ बलजोरी किछु करबो करब तँ नीको-अधला बनि सकिते अछि। सघन बोनकँ कातसँ देखिते जहिना मन डरेबो करैए आ हेराइक सम्भावना सेहो रहैए तहिना लाल भाइक मनमे भऽ रहल छेलैन। ने किछु करैत बनि रहल छेलैन आ ने किछु नहि करैत बनि रहल छेलैन। गुन-धुनमे पड़ल मनमे उठलैन जे जाबे मनुक्ख अपन गुन-धुनकेँ धुनकीमे धुनि

रूइया जकाँ हल-हलका नइ लेत ताबत अकासमे उड़ि केना सकैए। तइले ते कोनो ज्ञानी, जानकारसँ पुछिये कऽ ने ओकर गुणनक्रिया कऽ सकै छी।

सौनक मेघ जकाँ लाल भाइक मन उमैड़ कऽ घुमड़लैन। घुमैड़ते विचार उठलैन जे अपन परिवारे नहि, गामोक लोक गुरुकाकार्कें सपनोक पारखी आ जीवनोक पारखी बुझै छैन तँए हुनकासँ पुछि लेब बेसी नीक हएत...। लाल भाइक मन मानि गेलैन जे गुरुकाकार्कें अपन पेटोक सभ बात आ सपनोक सभ दृश्य सुनौलासँ किछु-ने-किछु रास्ता भेटबो करबे करत। जँ संतोषप्रद, सवुरगर विचार भेटत तँ ओइपर अमल करब आ जँ से नहि भेटत तँ या तँ आगू बढ़ि दोसरोकेँ पुछबैन वा ताधैर अमलमे नहि आनब जाधैर सपनाक फलाफलक आगमन नहि हएत।

गुरु कक्काक असल नाम ज्ञानदेव छिऐन, जे लाल भाइक पितियौत बाबाक सम्बन्धमे लगै छैन। जहिना आनो-आन लोककेँ माता-पिता वा समाजक देल छठियारीक नाओं तर पड़ि जाइए आ कर्मगत वा बेवसायगत नामक सिरजन भऽ जाइए, तहिना ज्ञानदेव काकार्कें सेहो भेलैन। 'ज्ञानदेव' नाम बुढ़े-पुरान टा जनै छैन, माने छठियारी रातिक देल नाम, बाँकी नवको पीढ़ी आ पुरानो पीढ़ीक ओहन लोक जिनका ज्ञानदेव कक्काक छठियारीक नाम नहि बुझल छैन, गुरुए-कक्काक रूपमे जनै छैन। ओना, तइमे एकटा विशेष बात ईहो भऽ गेल छैन जे अपन छोट भैयारियो आ जे बेटा-भातीजक अंगीतमे छैन सेहो आ जे तेसर पीढ़ीक नाति-पोताक अंगीतमे छैन सेहो, सभ गुरुए काका कहै छैन।

लाल भाय गुरुकाका ऐठाम अपन सपनाक विचार करैक खियालसँ विदा भेला। पत्नीकेँ किछु ने ओइ विषयमे कहलैन।

कहलैन खाली एतबे जे कनी गुरुकाका-ऐठाम एकटा काजे जाइ छी।

ओना, सुचित्रा भौजी सेहो, जखनसँ लाल भाइ ओछाइनपर सँ उठला आ मनक संग चेहरो मौलाएल-मौलाएल सन बुझि पड़लैन तखनसँ मने-मन हिनके-दे सोचि रहल छेली, मुदा 'हँ-हूँ' किछु बाजि नइ रहल छेली।

भिनसरक आठ बजे समय। फागुन मास, तँए समयमे मस्ती आबि गेल छल। गुरुकाका पार्वतीपुरक घटनापर विचार कऽ रहल छला। अजीव घटना पार्वतीपुर महंथानाक अछि..! कहियासँ महंथाना स्थापित भेल से तँ नहि बुझल अछि मुदा पाँच पुस्तसँ, लगभग डेढ़ साए बर्खसँ तँ जरूर बुझल अछि। अखन जे महंथानाक महंथ छैथ हुनकर नाओं शंकरदास छिऐन। हिनकासँ पूर्व शंकरदेव दास छला। शंकरदेव दाससँ पहिने महादेव दास छला। महादेव दाससँ पहिने देवदास छला आ देवदाससँ पहिने शंकरदास छला। अखन जिला-जवारमे सभसँ नमहर पार्वतीए-पुरक महंथाना अछि, जे देशक राजधानी जकाँ अछि। अखन तक पार्वतीपुर स्थानक चलैन रहल अछि जे महंथजी गाइयक दूधसँ दुनू साँझ नहाइ छैथ। घटना ई भेल जे परसू रातिमे महंथजीकेँ अपने चोरी भऽ गेलैन। ऐठाम अष्टघातुक मूर्तिक चोरी नहि, जीवित महंथजीक चोरी भऽ गेलैन। अजीव घटना तँए अछि।

गुरु कक्काक मनमे सिनेमाक रील जकाँ पार्वतीपुरक महंथक घटना चलए लगलैन। ओना, आँखिक देखल घटना छेलैन नहि। किए तँ आँखिक देखल वा कानेक सुनल कोनो वस्तु वा घटना किए ने होउ मुदा देखला पछाइत वा सुनला पछाइत मन तँ मनन करिते अछि। तहिना गुरुकाका सेहो ओकर जोड़-घटाउ-गुणा-भाग कऽ रहल छला। घटना भेल केना? चारिम दिन करीब चालीस-पचासटा

दाढ़ी-केश बढ़ौल बबाजीक रूपमे बैग-एटैची नेने अयोध्यासँ जनकपुरक तीर्थयात्री कहि पार्वतीपुर-स्थानपर पहुँचल। एक तँ अयोध्या वासी, एकर माने साकेत नहि बुझब, दोसर जनकपुरक तीर्थयात्री, तँए स्थानमे नीक जकाँ आगत-भागत सभकेँ भेलैन। ने खाइ-पीबैक कमी स्थानमे आ ने खुऔनिहार-पीयौनिहारक कमी। सभकेँ रहैक नीक बेवस्थो भेलैन। साँझक करीब आठ बजे साए-डेढ़ साए यात्री फेर पहुँचल। सबहक आगत-भागत नीक जकाँ भेलैन। निसभेर रातिमे घटना भेल। महंथजी ला-पता भऽ गेला। दिनमे, जे तीर्थयात्रीक समूह छल ओ स्थान पकैड़ लेलक आ जेते पहिलुका सभ छला सभकेँ साए-साए बेर कान पकैड़ उठा-बैसा पुन: स्थानमे रखि लेलकैन। गुरुकक्काक मुहसँ अनायासे फुटलैन-

"हद भऽ गेल..!"

ओना, गुरुकाका असगरे छला, दोसर कियो सुननिहार नहियेँ छल, मुदा तहीकाल लाल भाय जे पहुँचला से अझप्पे सुनलैन।

गुरुकक्काक मुहसँ सुनल- 'हद भऽ गेल!' सुनि लाल भाइक मन अपनो दिस ठहकलैन जे अपनो तँ हद पार कइये नेने छी...। गुरु कक्काक लगमे लाल भाय पहुँचते बजला-

"गोड़ लगै छी गुरुकाका..!"

गुरुकक्काक मन पार्वतीपुरमे टहैल रहल छेलैन। तैबीच 'गोड़ लगै छी' सुनिते गुरुकाका चौंकैत बजला-

"नीके रहह बौआ! तोरासँ भेँट करैक मन केता दिनसँ होइ छल, मुदा पलखतिक दुआरे जा नहि पबै छेलौं। भने तूँ आबिये गेलह। कहह, की हाल-चाल छह?"

गुरुकक्काक विचार सुनि, ओना लाल भाइक मुहसँ निकैल गेल छेलैन- 'बड़बढ़ियाँ', मुदा अखन तक जे मनमे अपन सपना

लटैक कऽ झुलिये रहल छेलैन, तइसँ भिन्न गुरुकक्काक मुहसँ ‘हद भऽ गेल’ सुनि दोसरो-तेसरो विचार मनकेँ झुलझुला देलकैन, मुदा बजला नहि।

अपने मनक बातकेँ चालैत गुरुकाका बजला- “बौआ सहदेव, पार्वतीपुरक घटनो किछु बुझलह अछि?”

ओना, अपन कानसँ एक गोटाक मुँहक बात सुनब एक बात भेल, आ वएह घटना वा कोनो विचार दू-चारि-पाँच-दस बेकतीक मुहसँ सुनब दोसर भेल। जे पहिलुकासँ पक्का भेबे कएल। मुदा ठीक एकर विपरीत, एक गोटाक मुहसँ कोनो अपना संग घटित भेल घटना वा अपना सोझमे घटित घटनाकेँ सुनब आ अपना संग बिनु घटल घटना वा बिनु देखल घटना वा घटित घटनाकारक मुहसँ नहि सुनि आनक मुहसँ सुनल सेहो होइते अछि। मुदा अपन मनक विचारमे नहि ओझरा लाल भाय बजला-

“मौगी-मेहैरिक मुहसँ जरूर किछु-किछु सुनलौं मुदा ओइपर धियान नहि देलिऐ, तँए बुझू जे नहियेँ सुनलौं अछि।”

शास्त्रीय विचारक लोक गुरुकाका छथिए, विचारकेँ छील-बना बजला-

“तखन तोरे समाचार विचारपूर्ण हेतह। की सुनलह से बाजह।”

गुरुकक्काक बात सुनि लाल भाय असमंजसमे पड़ि गेला। असमंजसमे ई पड़ला जे जेकरा हम मौगी-मेहैरिक बात बुझि मोजर नइ दइ छी, तेकरे गुरुकाका अस्सल विचार बुझै छैथ! ..लाल भाइक मनमे जेना उदवेग चढ़लैन तहिना बजला-

“काका, अखन बेटा-भातीजक सम्बन्ध नहि बुझू। हम संवाद वाहक भेलौं आ अहाँ संवाद ग्राहक भेलौं। तँए कहैमे एको रत्ती

धकचुक्की नइ अछि।"

लाल भाइक बात सुनि गुरुकक्काक मन जेना चपचपा गेलैन तहिना चपचपीक संग मुहसँ निकललैन - "बौआ सहदेव! परिवार हुअ कि समाज, सत् बात बजैमे एको पाइ धकचुकाइ नहि।"

गुरुकक्काक बात सुनि लाल भाइक मन फेर ओझरा गेलैन। ओझरा ई गेलैन जे एहनो तँ आँखिक सोझमे अछिए जे आँखि जेकरा देखलक चोरि करैत, न्यायालय ओकरा चोरि करैत नइ देखलक। तखन ओकरा की बुझब? मुदा लगले लाल भाइक मनक विचार आगू बढ़ि गेलैन। आगू बढ़िते मन सुझौलकैन जे केकरो मुँहक सुनले बात ने बाजब, तँए पहिने ओकरे नाओं किए ने अगुआ कऽ बाजी। ..लाल भाय बजला-

"काका, महिनाथपुरवाली भौजी ओही महंथानामे फूल तोड़ैक काज करै छैथ, वएह बाजल छेली जे महंथजी एकटा नअ-दस बर्खक चेलीक संग काशी घुमए गेला हेन। चोरी, माने महंथजीक चोरीक समाचार सोल्होअना अफवाह छी।"

लाल भाइक बात सुनि गुरुकाका बजला-

"तोरे सुनलाहा विचार सत् भऽ सकैए, सहदेव।"

गुरुकक्काक मुहसँ 'सत् विचार' खसिते जेना लाल भाय चौंकैत चकोना होइत बजला-

"काका, हमर नाम अगुआ कऽ नहि बाजब जे सहदेव बाजल छल। महिनाथपुरवाली भौजीक नाओं अगुआ कऽ बाजब।"

गुरुकाका बजला- "कहलह ते बड़ सुन्नर विचार, मुदा हमर कान तँ तोरे मुँहक बात सुनलक। अच्छा छोड़ह ऐ सभ बातकेँ, ने तूँ किछु महंथानाक समाचार पसारह आ ने हम पसारब। अनेरे दू-तीन घन्टा समय पानिमे चलि गेल।"

लाल भाय बजला- “काका, आइ भोरमे जखनसँ सपना देखलौं तखनसँ मन डेराएल-डेराएल सन भऽ गेल अछि।”

लाल भाइक मुहसँ सुनल ‘डेराएल-डेराएल सन’ सुनि गुरुकाका लाल भायपर सँ नजैर निच्चाँ उतारि मने-मन विचारि बजला-

“सपना तँ सपना छी, ओइसँ डेरेबाक की अछि। ओना, सपनोक दू रूप अछि। जहिना अनुकूल आसक्ति आ प्रतिकूल आसक्तिक बीच अछि। एकटा जहिना अकास चढ़ा दइए तहिना दोसर, पताल दिस सेहो धकेलिये दइए।”

गुरुकक्काक विचार नीक जकाँ लाल भाय नहि बुझि सकला तँए मन अकबका गेलैन। मुदा लगले अपने मन सुझौलकैन जे जखन गुरुकाकासँ पुछैये-ले आएल छी, आ एक बेरमे नहि बुझि पबै छी, तँ किए ने दोहरा-तेहरा खरिआरि कऽ पुछि खरिआरि ली। ..लाल भाय बजला-

“काका, एना झाँपन-तोपन दऽ कऽ बाजब तखन हम थोड़े बुझब। एक तँ अहाँ अपने ओहन लोक छी जे जेहेन लोक देखै छिऐ तेहेन वेष बना लइ छी। माने ई जे जिनकासँ गप करै छी हुनकर भाषो-शैली आ भावो-अभाव आ ओही भावो-अभावमे गप-सप्प करै छी। जे कोनो विषयकेँ जड़ियो-मूलकेँ खोजि निकालि दइए, आ कोनोकेँ झाँपि-तोपि मटिआइये दइते अछि।”

लाल भाइक बात सुनि गुरुकाका बुझि गेला जे सहदेव अपन बात माने सपनाक बात, जड़ि-मूलसँ बुझए चाहि रहल अछि। प्रश्नकर्ताक प्रश्नक भावनाक जेहेन गहराइ वा जेहेन छीछलपन होइए ओइ अनुकूल ओकर उत्तर देबे ने ओकरा-ले समीचीन होइए। अपनकेँ एक स्तरपर, माने जीवनकेँ एक सीढ़ीपर ठाढ़ करैत

गुरुकाका बजला- “बौआ, कनी जड़िसँ बुझा कऽ बाजह।”

गुरुकक्काक जिज्ञासा देखि लाल भाय बजला-

“काका, निसभेर नीनमे रही। मनमे सपना जगि गेल। सपनाकेँ जगिते देखलौं जे ओइ सघन बन बीच पहुँच गेलौं अछि, जइ बनमे बाघ-सिंह-भालू इत्यादि खुनपीबा जानवर सभ भरल अछि। डर भेल जे आब जान नहि बाँचत। तही काल डरे नीन टुटि गेल।”

लाल भाइक विचारमे किछु एहेन विचार गुरुकाकाकेँ भेटिये गेलैन जे विचारणीय अछि, मुदा विषयकेँ माने सपनाकेँ हलकबैत गुरुकाका बजला- “बौआ सहदेव, सपना सपना छी। सभ कि राजा हरिश्चन्द्रे छी जे सपनाक पाछू पड़ि असमसानक ओगरवाही करत।”

लाल भाइक मनकेँ सपना चोटाइये देने छैन जइसँ छाती थरथराइये रहल छेलैन मुदा तैयो विचारमे दृढ़ता अनैत बजला-

“काका, सपना जँ सपने होएत तखन लोककेँ लोक लग अनेरे बजैक कोन खगता छै। जहिना सपना देखि सुति कऽ उठल तहिना बिनु देखल जकाँ अपन नित्यकर्ममे लगि जाएत, मुदा तैयो लोककेँ लोक किए कहै छै?”

लाल भाइक विचारक भवलोककेँ देखैत गुरुकाका बजला- “बौआ, जखन सपनाक विचार करए चाहै छह तखन एक-एक शब्दक एक-एक अक्षरपर विचार करए पड़तह। ‘आगि लागल’ आ ‘अगिलगौन’, अक्षरक हिसाबसँ मोटा-मोटी एक्के अछि। मात्र एक अक्षर आ दू मात्रामे अन्तर अछि। तइमे अक्षरक रूप बदलने ‘न’ आ ‘ल’ सेहो बदैलते रहैए। आब तोहीं कहह जे दुनू- ‘आगि लागल’ आ ‘अगिलगौन’ एक्के भेल?”

विचारक प्रवाहमे लाल भाय बजला- “से तँ नहि भेल।”

गुरुकाका बजला- “बौआ, अपना सबहक बाप-दादाक

अरजल यएह अमूल्य धन छिऐन।”

गुरुकक्काक मुहसँ, ‘बाप-दादाक अरजल अमूल्य धन’ सुनि लाल भाय चौंकैत बजला-

“की अमूल्य धन, काका?”

लाल भाइक आँखि-मे-आँखि गाड़ि गुरुकाका बजला-

“बौआ, दुनियोँमे आ अपनो ऐठाम विभिन्न सम्प्रदाय सभ अछि, जे अपना-अपना ढंगे दुनियाँक विचार केनौं अछि आ करितो अछि, तही विचारमे सपनो अछि।”

जेना कोनो पोखैरमे एकटा कमल फूल देखि लोक बजबे करै छैथ जे ‘फल्लाँ पोखैरमे कमल अछि’, तहिना सम्प्रदायक जे पोखैर अछि ओइमे कमल नइ अछि सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो तँ अछिए। तहिना देवी भागवतमे साधना, उपनिषदमे ज्ञान, कुरानमे सामाजिकता, बाइबिलमे सेहो सामाजिकता वेदमे विद्वतापूर्ण तर्क, हिन्दू धर्मंमे व्यक्तिगत साधना आ गीतामे ज्ञान-साधना आ कर्मक समन्वय सेहो अछिए।

ओना, लाल भाइक मन वौआए गेलैन। वौआइक कारण भेलैन जे अपन पढ़ल एकोटा पोथी वा ग्रन्थ नहि छेलैन मुदा कानसँ तँ सुनितो आबिए रहल छैथ आ सुनबो करिते छैथ। बजला-

“गुरुकाका, दुनियाँ-जहानकेँ छोड़ू, अपने जान-जहानकेँ देखब बेसी नीक हएत। तँए अपन जे सपना अछि, तेतबे विचार दिअ।”

लाल भाइक बात सुनि गुरुकाका बिहुसैत बजला- “बौआ सहदेव, जखन तूँ अकछा रहल छह तखन मोटा-मोटी कहि दइ छिअ।”

बिच्चेमे लाल भाय बजला- “मारू मुँह ऐ दुनियाँकेँ, अपने केना निश्चलपनगामी बनि जिनगीक गमन करब, तेतबे बुझा कऽ कहू।”

गुरुकाका बजला-

“बौआ! जहिना सघन बनमे बाघ-सिंह-भौल देखलह, तहिना सघन जीवनमे हजारो रंगक हाथो आ हाथक सफाइयो तँ अछिए।”

गुरुकक्काक बात सुनि लाल भाय अकबका गेला मुदा अपनाकेँ संयमित करैत बजला-

“आरो?”

हँसैत गुरुकाका बजला-

“आरो यहए जे तहिना सघन मेघ सेहो सघन बरसा दइते अछि।”

❑

शब्द संख्या : 2697, तिथि : 17 मार्च 2020

हुसैत लोक

दोनवारी हाटसँ पियाजक बीआ लऽ घुमल रही कि रंगलाल भायकेँ तीन-चारि गोरेक संग लछमीपुर गामक चौकपर चाह पीबैत देखलयैन। चारि-पाँच गोरे हमहूँ सभ टेम्पूमे बैसल अबैत रही, चारि लग्गा पाछुए रही कि रंगलाल भाय हमरो देखि लेलैन। एक तँ सासुरमे घरपर रहने सारि-सरहोजिक धक्का, दोसर सार सबहक धक्का चौकपर लगिये रहल छेलैन, मुदा देखिते, चाहक दोकानपर सँ उठि हाथमे चाहक गिलास नेने बीच रस्तापर ठाढ़ भऽ बामा हाथे डरेबरकेँ इशारा करए लगला जे गाड़ी रोकू। अपने टेम्पूक पैछला सीटपर बैसल अपन पाँच किलो पियाजक बीआक हिसाब मिलबैत रही जे अपना ऐठाम पचास रुपैये किलो बीआ बीक रहल अछि। पाँच किलोक दाम भेल अढ़ाइ साए रुपैआ, तीस रुपैये किलो दोनवारी हाटपर देलक, जेकर दाम डेढ़ साए भेल। साए रुपैआ अपना ऐठामसँ कम भेल। लगले मन उनैट कहलक जे भरि दिन समैयो तँ नहियेँ बरदाइत आ चौदह साए टेम्पू भाड़ामे जे पौने दू साए रुपैआ हिस्सा लगल सेहो नहि लगैत। तखन लाभ की भेल? फेर लगले मन, लगले मन ऐ दुआरे जे मन तेहेन पीछड़ाह अछि जे जहिना लगले पकड़मे अबैए तहिना लगले छिछैलियो जाइए। मनकेँ पकैड़ कऽ जखन रखबै कि तरे-तर तेना छिछैल कऽ निकैल जाइए जे बुझबो ने करबै। तही काल टेम्पू रूकि गेल तँ पुछलिऐ-

“टेम्पू किए रूकल?”

तैबीच रंगलाल भाइक नजैर सेहो पड़ि गेलैन आ अपनो जे

आगू तकलौं तँ रंगलाल भायकेँ देखलयैन। रंगलाल भाय सभकेँ सामूहिके आग्रह करैत बजला- “सभ कियो उतैर कऽ चाह-पान कऽ लिअ, पछाइत जाएब।”

सबहक संग अपनो टेम्पूसँ उतैर चाहक दोकानपर एलौं। जहिना अप्पन नजैर रंगलाल भायपर छल तहिना रंगलालो भाइक नजैर हमरापर छेलैन। मुदा जहिना रंगलाल भाय सासुरक समाजक अगुआ छला, अगुआ ऐ मानेमे जे गौंआँ-घुरूआकेँ देखिते, चिन्ह-पहचीन भइये जाइए तैठाम गाम-समाजक तँ सभ चौकेपर बैसल नहि रहै छैथ, मुदा अनगौंआँ कुटुमकेँ आगत-भागत नइ भेने गामक हँसारत होइते अछि। ओ हँसारत बँचेबाक उपाइये की अछि, तँए अपना गामक समाजक अगुआ सेहो भेबे केलाह, तँए हुनके जुतिये-भाँतिये ने चलए पड़त। सएह केलौं। चुपचाप चाहबलाक ब्रेंचपर मन मारि कऽ माने पछुआ बनि बैस रहलौं। तइ बीच अपन मन कनी कुदैक गेल। कुदैक ई गेल जे जे काज केने, माने पियाजक बीआ कीनने जा रहल छी, ओइ काजमे अपनो हूसबे केलौं।

पाँच किलो बीआ आठ धुर खेतमे रोपल जाएत। ओतबे पियाजक खेती अपने साले-साल करै छी। ओना, रकबामे आठे धुर चौमास अछि, मुदा तेते जोरगर बनौने छी जे आठे धुरमे पाँच मनसँ ऊपरे हएत जे कम नहि हएत, साले-साल पियाज होइते अछि। पियाजक उपजापर सँ नजैर ससैर अपन हूसल काजपर गेल। पाँच किलो बीआ कीनैमे जे भरि दिन बरदेबो केलौं आ तैपर सँ पचहत्तैर रुपैआ खरचो बेसी भेल, तैसंग अपने जे खेलौं-पीलौ से अलगे बेसी भेल। मुदा ई वेपारी सभ तँ दू-तीन क्वीन्टल करि कऽ बीआ कीनने अछि, जेकर प्रति किलोक हिसाबसँ बीस रुपैआक बचत होइ छै, दू क्वीन्टलमे चारि हाजरक लाभ होइ छै, ओकर जँ समयो बरदाएल तैयो लाभे भेल। अपने तँ घाटा भेबे कएल। तँए वेपारी (गौंआँ

वेपारी) सबहक जीत आ अपन हार मन मानि रहल छल। यएह बात जँ पहिने मनमे आबि गेल रहैत तँ घाटा नहि होइत। मुदा आब तँ जे हेबाक छल ओ भइये गेल, तखन माथे धुनि कऽ की करब। शत-प्रतिशत मन कबुल कऽ लेलक जे जरूर हूसलौं। ओना, मनो तँ मन छी, लगले केना शत-प्रतिशत हारि मानि लेत। जँ हारए लागत तँ कनी करोटिया भऽ जाएत, सोल्होअना चीतसँ पट आकि पटेसँ चीत केना हएब मानि लेत।

अपन हार-जीतक बीच मन दौड़-बरहा करए लगल। लगले मनमे दोसर विचार उठि कऽ ठाढ़ भेल। ठाढ़ ई भेल जे अपने किसान छी कि वेपारी? जे वेपारी अछि ओ पूजीकेँ हारि-जीतक खेलौना बना खेलैए, मुदा अपने तँ किसान छी, जँ से सोचि खेती करब तखन खेती कएल पार लगत। किसानक लाभ तँ ओ भेल जे अपन खेती अपना ढंगे नीक जकाँ भऽ जाए। खेतमे उपज की भेल आ केते भेल, से की सोल्होअना अपने हाथमे अछि। रौदी-दाही, पानि-पाथर, झाँट-बिहाड़ि सभ किछु ने बीचमे बाधक अछि। हँ, समैयक हिसाबसँ माने जइ पूजीवादी समाजक बीच छी, तइमे लाभ-हानिक हिसाब तँ जोड़ए पड़त, मुदा जखन खेत जीवनक आधार अछि आ खेती जीविका, जइ बले जीब रहल छी, तँखन तँ जिनगीक आधारपर ने हानि-लाभक हिसाब करब। साइयो रंगक खेतो अछि आ साइयो रंगक उपजो तँ अछिए। जइसँ कोनोमे जँ घट्टो भेल तँ कोनो मे लाभे तँ होइते अछि। तइमे खेतेक उपज से ने अपन सभ काजो चलैए। ई दीगर भेल जे नमहर बाधा भेने किसानक जिनगी संकटग्रस्त भइये गेल अछि, मुदा तइमे किसानक कोन दोख। देशेक ओहन अव्यवस्थित व्यवस्था खेतीक बनि गेल अछि जेकरा भरोसमंद नहियेँ कहि सकै छी। मुदा किछु अछि तैयो एते तँ

अछियै जे देशक बहुसंख्य लोक खेतियेपर जीब रहला अछि। मन असथिर भऽ गेल। अपन पनचैती अपने कऽ लेलौं जे वेपारीक हिसाबसँ पिआजक बीआ कीनैमे घाटा भेल, मुदा किसानी जिनगीक हिसाबसँ घाटा नइ भेल। अपने किसान छी, वेपारी छी नहि तखन हूसलौं केना। नइ हूसलौं।

तैबीच सभ कियो चाह पीब पान सेहो खा लेलौं। ओना, रंगलाल भाय अपन सामाजिकतो निमाहैत अपन नजैर गौंए सभपर रखने छला, मुदा बुझि पड़ल, मनक भीतरसँ किछु भितरिया बात करए चाहि रहला अछि। जे सबहक बीच सम्भव नहि अछि। अपनो मन ई जरूर छल, किए तँ बुझल अछि जे रंगलाल भाय थाना-पुलिसक (कानूनक) डरे गामसँ पड़ाएल छैथ, जे बात अपने टा बुझल अछि। तँए मनमे बनल अछि जे किछु उपराग रंगलाल भायकेँ देब जरूरी अछि। ओना, मनमे ईहो उठि रहल छल जे हारल वा मारलकेँ आरो ऊपरसँ हराएब वा मारब नीक नहि, मुदा समयपर छोड़बो तँ उचित नहियेँ हएत।

पान खा जखन सभ टेम्पूमे बैसल आ अपने गाड़ीमे चढ़ए लगलौं कि पाछूसँ रंगलाल भाय कुरता पकैड़ इशारामे कहला-

“गौरीकान्त, तोरासँ कनी काज अछि।”

गाड़ीमे चढ़ैत रही, कहलयैन- “केहेन काज अछि, बाजू।”

रंगलाल भाय बजला-

“कनी फुटमे चलह। ऐठाम कहब नीक नहि हएत।”

रंगलाल भाइक बात सुनि मनमे ठहैक गेल जे केसेक विषयमे किछु कहता। कहलयैन- “चलू, मुदा बेसी देरी नइ लगाएब।”

रंगलाल भाय सोझ-सपट आदमी छैथ। ओना, एहेन लोक सभ गाममे प्राय: अधासँ बेसी रहै छैथ, मुदा समझदारीक अभावमे

कोनो अपन विचार वा विचारधारा नहियेँ होइ छैन। केतौ पारिवारिक सम्बन्धे तँ केतौ दियादीक सम्बन्धे, केतौ जातिक सम्बन्धे तँ केतौ टोलबैयाक सम्बन्धे किछु-ने-किछु गलती काजमे संग रहने सदिकाल हूसल काज करिते छैथ। ओना, रंगलाल भायकेँ एते बिसवास हमरापर जमले छैन जे गौरीकान्ते टा एहेन लोक समाजमे अछि जे मनसँ जँ चाहत तँ कुशक कलेप लगने बिना बँचा सकैए।

दुनू गोरे सड़कसँ हटि लग्गा चारियेक हटल जे पूवारी कात आमक गाछ अछि, तइ निच्चाँमे बैसलौं। बैसते जे रंगलाल भाइक मुँहपर नजैर देलिऐन कि देखि पड़ल जे दुनू आँखि नोरसँ ढबकल छैन, जइसँ बोली नहि फुटि रहल छैन। मन दहलए लगल। दहलाइत-दहलाइत ओइ जड़िमे पहुँच गेल जइ दुआरे रंगलाल भाय अपन सभ कारोबार छोड़ि गामसँ नुका कऽ पड़ाएल सासुर धेने छैथ। रंगलाल भाइक चेहराक कुम्हलाएल रूप देखि अपन मनकेँ मारैत बजलौं-

“भाय, वेपारी गौंआँ-घरूआक संग छी, गाड़ी भाड़ामे अछि, तइ संग कच्चा वेपारक सौदा छी, तँए बेसी समय नइ अछि। की कहै छी?”

रंगलाल भाय बजला-

“गौरी, तूँ छोट भाय छियऽ। अपन गलती जँ रहैत तँ तोरा कहितयऽ जे पचास जूता लोकक बीचमे मारह। मुदा..!”

मनमे जे किछु विचार घुमि रहल छल ओ जेना एक्केबेर सभटा मनसँ उड़िया कऽ अकासमे चलि गेल, तहिना भेल। बजलौं-

“रंगलाल भाय, चलू संगे गाम चलू।”

थानाक डरसँ डेराएल रंगलाल भाइक मन थरथराए लगलैन। जइसँ सुपुट बोल बनि नहि रहल छेलैन जे किछु बजितैथ।

थरथराइत रंगलाल भाइक मन देखि हमहीं बजलौं-

“भाय, अपना सभ किछु छिऐ तैयो पुरुखे छिऐ ने। पुरुख जे जहलसँ डर करत तखन जीब कए दिन सकैए।”

हमर बात सुनि रंगलाल भाइक मनक मलिनता कनी कमलैन जइसँ हूबा जगलैन। बजला-

“गौरी, तूँ जे कहबह से करैले तैयार छी।”

रंगलाल भाइक बदलैत रूप देखि कहलयैन-

“अखन गौंओ सभ छैथ। जखने पाँच गोरेक बीच रहब तखने रस्तामे कियो किछु ने कहत। जखन गाम पहुँच जाएब तखन कोट-कचहरीक बात रहत, ओ बुझल जेतइ।”

रंगलाल भाय उठि कऽ ठाढ़ होइत टेम्पू-डरेबरकेँ, ओतैसँ माने आमक गाछक निच्चेसँ जे चारि लग्गा पूबारि कात छल, कहलखिन-

“डरेबर साहैब, जँए एतेकाल अँटकलौं तँए पाँच मिनट औरो अँटकू। हमहूँ चलब।”

दुनू गोरे गाछ लगसँ उठि दोकानक आगूमे एलौं। रंगलाल भाय पुन: आग्रह करैत सभकेँ–माने टेम्पूमे बैसल गौंआँ सभकेँ–कहलखिन-

“एकबेर आउरो चाह पीब लिअ।”

टेम्पूमे बैसल सभ वेपारी हाथक इशारा दैत बजला-

“नइ, अहीं जल्दी तैयार होउ।”

रंगलाल भाय अपन जेठ सारकेँ कहलैन-

“बौआ, अहाँ कनी घरपर सँ झोरा नेने आउ। हमहूँ गाम जाएब।”

गौंआँ सभकेँ देखि वा सात-आठ दिन भेने माने रंगलाल भाय

सात-आठ दिनसँ सासुरमे छैथ, नाकुर-नुकर केने बिना सार झोरा आनि कऽ दऽ देलकैन।

अपने लग पैछला सीटपर रंगलाल भायकेँ बैसौलिऐन। मन भेल जे सासुरमे रहैक गप-सप्प उठाबी, मुदा अपने मन रोकलक जे सभ रंगक लोक गाड़ीमे बैसल छैथ तँए कोट-कचहारीक गप करब उचित नहि। गाड़ी आगू बढ़ल।

अपन गामक सीमानमे अबिते बजलौं- “भाय, अखन अहाँ जाउ, कखनो निचेनमे आगूक गप करब।”

रंगलाल भाय थकथका गेला। अपना ऐठाम जेबाक डेगे ने उठि रहल छेलैन। अपनो मनमे भेल जे गामे छी, रंग-बिरंगक लोक गाममे अछि। जँ देखिते कोनो लौकिया जा कऽ चौकीदारकेँ जानकारी दऽ देतैन तँ अनेरे सभ काज बिगैड़ जाएत। जहिना खेतक पानिक बँचाउ लेल लोक माइटिक मछार बना रोकैए तहिना अपनो मनमे भेल जे नीक हएत पहिने थाना जा बड़ाबाबूसँ किछु समय माँगि लेब जे अमुख तारीख तक रंगलाल भाय कोर्टमे उपस्थित भऽ जेता, तँए बीचक समय देल जाए। बजलौं- “रंगलाल भाय, अहाँ ताबे एतै, हमरे ऐठाम रहू, अखन देखबे केलौं अछि जे एक तँ दस कोसक गाड़ी सफर भेल अछि तैपर भरि दिन दौड़-बरहा भेल अछि जइसँ मन असकताएलो अछि आ भरियाएलो अछिए। तँए पहिने नहा कऽ किछु खाएब, पछाइत बुझल जेतइ।”

रंगलाल भाय मानि गेला। मुदा रहला हमरे ऐठाम। नहेलौं। सूर्यास्तक समय सेहो भऽ गेल छल। ओना, पाँचे किलो मीटरपर थाना अछि। तहूमे भरि दिन ने रंग-बिरंगक काजक धुमसाही थानामे रहैए मुदा ओ दिन बीतैत कमि सेहो जाइत अछि। थाना जाइसँ पहिने, मनमे भेल जे बिना कोनो चर्च-बर्च केनहि जँ थानासँ तत्काल बचाबक उपाय कऽ देबैन तखन तँ रंगलाल भाय जहिना बेर-बेर

गलती करैत आबि रहला अछि तहिना फेर करता। तँए सभ बात जँ, माने गलती भेल काजकेँ, मुँहपर कहि अपना मुहेँ गलती मना लेब तखन भविसमे गलती हेबाक सम्भावना कमि जाएत। सएह केलौं। थाना डेग उठबैसँ पहिने बजलौं- "रंगलाल भाय, मोन अछि कि नहि जे भोँट लेलक कोइ आ अहूँ केसमे फँसि गेलौं?"

रंगलाल भाय जेना बिसैर गेल छला, किए तँ पनरह बरख पैछला घटना छल। पाछू उनैट-उनैट मोन पाड़ए लगला। मुदा मोन नहि पड़लैन। भेल ई छल जे राजनीतिक दल चुनाव लड़ल अपन-अपन सिमबॉलपर मुदा गाम-गाममे बनि गेल जाइतिक पार्टी। अपन जाइतिक उम्मीदवार सेहो मैदानमे रहैन। रंगलाल भायकेँ जाइतिक तेहेन-तेहेन मंत्र कानमे पड़ि गेलैन जे पक्का कार्यकर्ता बनि गेला। दू बजे दिनमे, चुनाव दिन, दू जाइतिक बीच मारि भऽ गेल। केस भेल। किछु गोरे पकड़ा कऽ जहलो गेल मुदा तइमे रंगलाल भाय बँचल रहला। मुदा केसमे नाम आबिये गेलैन। चुनावक प्रक्रिया सम्पन्न भेल। मुदा मुद्दालहक पकड़-धकड़ चलिये रहल छल। थानाक बड़ाबाबू इमानदार लोक। कहब जे पाइ-कौड़ीक कारोबार नइ करै छला से हुनक भितरिया कारोबार जे रहल होइन, मुदा आदमी चिन्हैक अद्भुत क्षमता छेलैन। बिसवासु लोक बुझै छला। रंगलाल भाइक चेहरा देखि अपने बजला जे एहेन लोक जरूर फँसौआ छैथ। केससँ नाम काटि देलखिन। बिना कोनो परेशानीसँ जान बँचि गेलैन।

पैछला बात (केसक बात) मन नहि पड़ने रंगलाल भाइक नजैरमे अपने झूठा बनए लगलौं। मुदा एकेटा घटना थोड़े भेल अछि, तेसर घटना छी। पैछला केसक बात छोड़ि दोसर घटनाक चर्च करैत बजलौं- "भऽ सकैए भाय, हमहीं बिसरैत होइ। अच्छा ई कहू जे रधिया आ रधबाबला मोन अछि कि नहि?"

रधिया आ रधबाक घटना ई अछि जे दुनू जनता कौलेजमे पढ़ै

छल। दुनू दू जाइतिक। कौलेज कि हाइ स्कूलमे लड़का-लड़कीमे सम्बन्ध बढ़ैक हजारो कारणमे एकटा ईहो छी जे एक विषयक विद्यार्थी रहने सेहो सम्बन्ध बनैए। ओना, सम्बन्ध अनेको रंगक बनैए मुदा तइमे एकटा ईहो अछि जे दुनू गोरे संगी बनि जीवन बिताएब। ऐठाम संगीक माने पति-पत्नीक रूपसँ अछि, दोस्ती वा मैत्रीसँ नहि अछि। ओना, हाइये स्कूलसँ रधिया आ रधबाक बीच आकर्षण बनए लगल छल मुदा कौलेजमे अस्फुट रूप धारण कऽ लेलक। दुनू संगीत विषयक विद्यार्थी, एक गबै छल आ दोसर ताल मिलबै छल, माने साज बजबै छल। एक-दोसराक बीच बिआह करैक विचार भेल। मुदा सामाजिक बन्धनक डर, दुनूक बीच बाधा बनले छल। एक दिन दुनू गाम छोड़ि राता-राती पड़ा गेल। भोर होइत-होइत सौंसे गामक चर्चाक विषय दुनूक भागब बनि गेल। गोटी चलनिहार गाम-घरमे भरले अछि। अंगरेजी शासनक सम्बन्धमे कहल जाइए जे 'फूट डालो शासन करो'क नीति ओकर छल। मुदा बात तेतबे नहि अछि। गाम-समाजक बीच एहेन विचार लोकक मनकेँ तेना पकड़ने अछि जे समाजकेँ सूत्रवद्ध हुऐ ने दऽ रहल अछि। कानून केहनो मोट-मोट किताबक किए ने हुअए जे 'वयस्क भेला पछाइत माने अठारह बरख पुरला पछाइत, अपन-अपन विचारक मालिक सभ होइए, ऐ ले दोसरकेँ एतराज नइ हेबा चाही। मुदा की समाजोमे सएह अछि?

दुनू जाइतिक बीच कहा-कहीसँ शुरू भेल आ मारि-पीट भऽ गेल। ओइ मारि-पीटमे रंगलाल भाय सेहो रहैथ। लाठी लगने कपार सेहो फुटल रहैन। तँए अखनो ओहिना मोन छैन। रंगलाल भाय बजला-

"हँ, कि करितौं, घरक लोकसँ लऽ कऽ टोलबैया तक तेना कहए लगला जे जाइतिक पगड़ीक सबाल छी, एकरा नइ बँचाएब तखन जीविये कऽ की करब। तँए ओइमे चलि गेलौं।"

कहलयैन- “महिना दिन जे माथमे पट्टी बन्हने रहलौं, से कियो बाँटि लेलक?”

एक तँ अपन हूसल काजक, दोसर मास दिन धरिक दवाइ-दारू, पथ-परहेजमे सेहो लगले छेलैन, तइपर सँ मास दिन अपने किछु कऽ नहि सकला, जे पछाइत बुझलैन। तँए मन रहबे करैन। ओना, केस दुनू दिससँ भेल छेलै, माने दुनू जाइतिक बीच, तँए थानो थोड़े अनठा देलक। जइसँ पकड़-धकड़ नहि भेल रहैन। मुदा जमानत बेरमे पाँच दिन जहल (कसटडी) मे जरूर रहैथ।

ओना, दुनू रधिया-रधबा कोर्टसँ बिआह कऽ लेलक मुदा तत्काल गाम नहि आएल। दुनूकेँ अपन हुनर रहबे करै, दू सालक पछाइत गाम आएल। ताबे गामक वातावरण सेहो शान्त भऽ गेल।

रंगलाल भाय बजला-

“गौरी, ओही बेर दुनू कान पकैड़ कऽ ऐँठ लेलौं जे एहेन-एहेन काजक भीर नइ जाएब।”

अपन गलती जखन रंगलाल भाय कबुल लेलैन तखन आगू किछु कहबकेँ उचित नहि बुझि बजलौं-

“ऐ बेर की केलिऐ?”

ऐ बेरक घटना सेहो गामेक छी। आपराधिक वृत्तिक लोक छठूलाल अछि। आपराधिक वृत्ति दू रंगक होइए। एकटा होइए जे एके तरहक अपराध जाबे जीलौं ताबे केलौं। माने जँ चोरी करै छी तँ चोरिये टा केलौं, वा पॉकेटमारी करै छी तँ पॉकेटमारियेटा केलौं। जेकरा एकचलिया अपराधी कहल जाइए। आ दोसर होइए सघन अपराधी। सघन अपराधी ओ भेल जे अनेको रंगक अपराध वृत्तिसँ जुड़ल रहैए। छठूलाल सेहो बहुचलिया अपराधी छीहे। जहिना बहुचलिया नशेरी होइए तहिना बहुचलिया अपराधी सेहो होइए।

बहुचलियो नशेरी ओ भेल जे सभ तरहक नशापान करैए आ एक तरहक नशापान केनिहार एकचलिया नशेरी भेल।

ओना, गामक अधिकांश लोक छठूलालकेँ बुझै छैथ जे ओ (छठूलाल) समाजक अहितैशी लोक अछि मुदा छठूलालक चेहराक जे दोसर पक्ष अछि ओ अछि समाजक हितैशी लोकक, जे छठूलालक चेहराकेँ ओहिना झलमलेने अछि, जेना विहारीलाल कहलैन- 'छीपौ छवीली मुँह लसै, नील अंचल चीर, मनो कलानिधि झलमलै, कालिन्दीकेँ नीर।' तइ संग छठूलालमे अपन देहोक बल माने शारीरिक तागत छइहे, जइसँ सभ बुझैए जे असगर-दुसगरकेँ के कहए जे पाँचो आदमीकेँ असगरे छठूलाल चटनी बना कऽ खा लेत।

बजलौं-

"छठूलालक जमानतदार कोर्टमे किए बनलिये जे ओ वारन्ट भेलो पछाइत कोर्टमे हाजिर होइते ने अछि, आ अहाँ-ऊपर अनेरे वारन्ट भऽ गेल अछि..!"

कोर्ट-कचहरीक ओतबे बात रंगलाल बुझै छैथ, जेते बात केकरो मुहेँ जेतेक सुनने छैथ। तँए कानूनक मूल बातकेँ नहि बुझै छैथ। सोझमतिया लोक रंगलाल भाय छथिए जइसँ मन तँ पघिलए लगल मुदा गलतीक दण्ड मनसँ मेटाएल नहि छल, कनी तरैंग कऽ बजलौं-

"अपने करनीसँ बिपैत बेसाहि लेलौं हेन आ आब पड़ाएल घुरै छी।"

रंगलाल भाय बजला-

"गौरी, धरमागती कहै छिअ जे अपन मन नइ छल जे छठूलालक पीठपोहू होइ, मुदा घरवाली तेना केली जे की करितौं..!"

बजलौं- “अखन, अहाँ साती वएह जेल जेती?”

रंगलाल भाय बजला-

“बौआ गौरी, घरवालीक अपने पिसियौत भाए छठूलाल छिऐन, अपनो सारे भेल। तँए मन डोलि गेल। ऐ बेर कहुना कऽ बँचा दाए। तोरे सोझामे पचीस बेर कान पकैड़ कऽ उठब-बैसब जे जिनगीमे फेर एहेन काज नइ करब।”

ओना, मनक बीख उतैर गेल छल मुदा ठोरपर तामस चढ़ले छल। बजा गेल-

“जहल जाइले तैयार छी?”

रंगलाल भाय बजला-

“जान बँचैले जे करए पड़त, सभले तैयार छी।”

बजलौं-

“काल्हि संगे कोर्ट चलब।”

❑

शब्द संख्या : 2602, तिथि : 23 मार्च 2020

हुसि गेलौं

हाटक काजे बिस्टौल विदा भऽ सड़कपर एलौं कि दुनू परानी जागेसर भाय टेम्पूपर पास करैत रहैथ। केतबो किछु भेल, लोक केतबो बदलल मुदा मिथिलाक माटि-पानि अखनो वएह अछि जे सभ दिनसँ अछि। बाहरसँ अबैत कियो परदेशी घर लग होइत पास करता, अपने सड़कपर रहब आ हुनका टोकबो ने करिऐन तखन गामक जँ कियो हेराएल-भुतियाएल आबैथ आ हुनका रहैक ठौर नहि भेटैन तखन गामक नाक-मुँह केहेन बनत। भाय! मिथिला छी, मिथिलाक अपन साजो-श्रृंगार अछि आ अपन मुहोँ-कान तँ अछिए। चारि लग्गा टेम्पू पाछुए छल कि जागेसर भायकेँ चिन्ह गेलिऐन। उमरदार छथिए। माने अपनासँ कहुना बीस बरख जेठ हेता, देखिते कहलयैन-

“भाय, दुनू परानीकेँ सम्मिलिते गोड़ लगै छी।”

ताबे टेम्पू लग आबि रूकि गेल। जागेसर भाय बजला-

“आब हमहूँ गामेमे रहब। पहिने अपन घर-घराड़ीक दर्शन कऽ लेब जरूरी अछि, पछाइत निचेनसँ दुनू भाँइ बतियाएब।”

हाटपर विदाहे भेल रही, भीतरे-भीतर मनमे ईहो होइ छल जे घन्टा भरिक हाट अछि, जँ रस्तेमे समय बरदा जाएत तखन काजो हुसिये जाएत। मुदा संजोग नीक रहल जे जागेसर भाय अपने समय लगबैले तैयार नहि होइत बजला-

“अखन काजक बेर अछि, तोहूँ काज करए जा आ हमहूँ जाइ

छी, निचेनमे साँझू पहर निचेनसँ गप करब।”

जागेसर भाइक बात सुनि अपनो जान हल्लुक भेल, मुदा दुनू परानी जोगेसर भाइक चेहराक रूप किछु-किछु विकृत्ति जकाँ बुझि पड़ल, जइसँ मनमे खोंच-खरोंच जकाँ जरूर उठए लगल मुदा जागेसर भाय अपने साँझुका समय बना लेलैन। अखन जइ काजे निकलल छी तइसँ अलग जँ मनकेँ दोसर दिस बढ़ाएब तँ हाटक काजमे गड़बड़ी अबैक सम्भावना बनियेँ जाएत। जे काज केनिहार नहि अछि ओकरा लिये ने दिन-राति एक्केरंग होइए मुदा जे काज केनिहार अछि तेकरो लिये तँ होइते अछि जे करै छी कोनो काज आ मनमे नाचि रहल अछि कोनो दोसर काज। तँए, जखने आँखि काजपर गड़ए आ हाथ करए लगए तखने मनकेँ समेट ओइमे एकाग्र करी। जँ से करब तँ काज होइक संग बिसवासो बनिते अछि मुदा से नहि भेने दुइर हेबाक सम्भावना बनैए आ बिसवासक तँ कोनो बाते नहि।

डेढ़े दू किलो मीटरक दूरीपर बिस्टौल गामक हाट अछि, तँए पएरे विदा भेल रही। थोड़बे आगू बढ़लौं कि जागेसर भाय पुन: मोन पड़ि गेला। मोन पड़िते विचार उठल जे जागेसर भाय घर-घराड़ी की देखता, ओ भरिसक बेचैक खियालसँ एला अछि। जेकरा जेतेक पाइ होइ छै ओकरा ओते पाइयक भूख बढ़िते अछि। तहूमे बैंकक सूदि जोड़निहारक हिसाब तँ आरो बदैलिये जाइत अछि। ऐठाम, माने गाममे जागेसर भाइक घरक तँ कोनो थाह-पता नहियेँ छैन, खाली घराड़ी बँचल छैन। ओना, बिनु घरे घराड़ियो केना भेल? हँ! एते जरूर भेल जे जोति-कोरि कऽ बाड़ियो-चौमास बनौल जा सकैए आ ऊँचगर रहने घरो बनौल जा सकैए। फेर अपने मनमे उठल जे जेतेक पाइबला लोक छैथ, हुनका ओतेक पाइयक भूख बढ़ै छैन, सेहो सोल्होअना केना मानल जाए? जखन संतोष-असंतोष दुनू जीवनक

खास भावना छी तखन दुनूकेँ ने बराबरीक हिस्सा हेबा चाही। जेकर माने भेल, अदहा लोक ओहन भेला जिनका पाइ रहितो पाइक भूख बढ़ै छैन आ अदहा लोक ओहन भेला जिनका पाइ भेने सवुर–संतोष–होइ छैन जइसँ पाइयक अभूख होइ छैन...। मनमे ई विचार चलिये रहल छल कि दोसर विचार अपने आबि धमकल। दोसर विचार ई आबि धमकल जे एहनो आदमी तँ होइते छैथ जिनका पाइ भेने सवुरो भइये जाइ छैन। माने जे जइ निमित्ते पाइक भूख जगल आ ओ निमित्त पूर्ति भऽ गेला पछाइत, माने खाहिंस पूर्ति भेने भूखो मेटा जाइए। तैबीच मनमे तेसर विचार जगि गेल। जगि गेल ई जे कोनो निमित्त जीवनोपयोगियो होइए आ कोनो नहियोँ होइए, तखन? तैबीच हाटपर पहुँच गेलौं। गमैया हाट, खाइ-पीबैक वस्तु छोड़ि आन किछु रहिते ने अछि। चारिम दिन फेर लगबे करत। भेल तँ तीन दिन धरिक खाइ-पीबैक वस्तु कीनैक अछि, तँए बेसी झरो-झमेल नहियेँ अछि।

हाटक काज लगले भऽ गेल। समैयेपर अपना ऐठाम पहुँच गेलौं। घरपर पहुँचते जागेसर भाय फेर मोन पड़ि गेला। साँझु पहर निचेनसँ गप-सप्प करैक बात कहने छला। अपन घर ऐठाम अछि आ हुनकर घराड़ी पाँच बीघा हटल छैन तखन गप-सप्प केतए हएत?

ओना, जागेसर भायकेँ गाममे जेते लोक चिन्है छैन तइसँ बेसी अनचिन्ह छैन। चिन्ह-अनचिन्हक माने भेल जइ दिन जागेसर भाय गाम छोड़ि दिल्ली गेला तइसँ पहिलुका लोक आ जेकर जन्म जागेसर भाइक गेला पछाइत भेल वा बिसैर गेला से लोक। मुदा समाजमे (माने गामक समाजमे) एहनो तँ होइते अछि काजे एकठाम रहितो चिन्ह-अनचिन्ह सेहो बनल अछिए। जेकर अनेको कारणो अछि। बेवहारिक रूपमे झगड़ा-झंझट भेने वा कारोबारक सम्बन्ध

नहि रहने चिन्ह-अनचिन्ह सेहो बनिते अछि। तैसंग जातीय वा साम्प्रदायिक विचार सेहो दूरी बनौनहि अछि। एक जाइतिक बीच केते एहेन बेवहार अछि जे दोसरमे नहि अछि। जइसँ ओ अनचिन्ह बनबे करैए। खाएर जे जइ गाममे अछि ओ ओइ गाममे रहह। ओ ओइ गौंआँक प्रश्न भेल तँए अपन-अपन बुझता।

जहिना कोनो नमहर कारखानामे वा शहर-बजारमे वा गामे-घरमे हजारो-लाखो लोकक बीच जँ कोनो बेकती-विशेषसँ पूर्व परिचय रहल वा केतौ- जेना गाड़ीमे, कोनो दोकानपर वा कोनो ऑफिसमे किनकोसँ कनियोँ गप-सप्प भेल रहल वा बेवहारिक रूपमे कोनो काजे भेल रहल तँ हजारो-लाखोक बीच सहयोगीक परिचय भइये जाइए, तहिना जागेसर भायकेँ सेहो भेलैन। गाम अनचिन्हार बुझि पड़लैन आकि अपने अनचिन्हार बुझि पड़ला से ओ जानैथ, मुदा सूर्यास्त भेला पछाइत दुनू परानी पहुँच गेला।

जागेसर भाय तँ सहजे गौंएँ छिया आ चिन्हो-पहचिन्ह अछिए। ओना, अनठियो-अनगौंआँकेँ तँ लोक अपना ऐठाम पाँच कौर भोजन आ पाँच बीत जगह सुतै-बैसैले दइते छैथ। तइले मनमे कोनो मलिनता राखब उचित नहि। दुनू परानी जागेसर भायकेँ देखिते बजलौं-

“आउ, आउ भाय! हमरो भाग्य जगल जे अहाँ सन गौंआँ दरबज्जापर एला।”

ओना, जागेसर भाइक जेते मन उछटगर हेबा चाही से नहि रहैन। मुदा उपायो तँ दोसर नहियेँ छेलैन। मन उछटगर नइ रहैक कारण अपन दिल्लीक मकान सभ नजैरमे नाचि रहल छेलैन आकि की, से ओ जानैथ। जागेसर भाय बजला- “जाबे अपन ठौर-ठेकान रहैक नहि भऽ जाइए ताबे तोरे ऐठाम रहब।”

हूँहकारी भरैत बजलौं- “ई तँ अपन घर बुझू भाय! जेते दिन रहैक मन हएत तेते दिन रहब।”

तैबीच अपन पत्नियोँ आ मैझली बेटियो दरबज्जापर आबि गेल। बेटीकेँ कहलिऐ-

“बुच्ची, चाचीकेँ अँगने लऽ जाहुन, आ रहैक गर लगा दहुन।”

जागेसर भाइक पत्नी- सावित्रीकेँ संग नेने पत्नियोँ आ बेटियो आँगन गेल। आँगनसँ एकटा लोटामे पानि नेने दरबज्जापर अबैत बजलौं-

“भाय, समान सभ भने चौकीपर रखि देलिऐ। होउ, पहिने पएर धोउ, पछाइत गप-सप्प होइत रहत।”

आँगनमे पत्नी एते सतरकी करबे केली जे चाह बना दरबज्जापर नेने एली। पत्नीक हाथसँ चाहक दुनू कप पकड़ैत दहिना हाथक कप जागेसर भाय दिस बढ़बैत बजलौं-

“भाय, पहिने चाह पीब लिअ, ताबे जलखैक ओरियान सेहो होइए। जलखै केलाक पछाइत फेर चाहो पीब, पानो खाएब आ निचेनसँ गपो-सप्प करब।”

तैबीच सुनरलाल सेहो अनठियाकेँ भँजियबैत दरबज्जापर पहुँचल। सुनरलालक पैछला पीढ़ी, माने बाप-दादाक सम्बन्ध जागेसर भाइक परिवारक संग सात पुस्तसँ रहल छेलैन। जे जागेसर भायकेँ सेहो बुझल छैन आ सुनरलालकेँ सेहो बुझले छैन। मुदा जागेसर भाइक अमलदारीमे सम्बन्ध, माने दुनू परिवारक बीचक सम्बन्ध ने टुटल छल आ ने नइ टुटल छल, तँए अधटुटू जकाँ बनियेँ गेल अछि। सम्बन्ध टुटबक माने बेवहारिक रूपमे सम्बन्ध बिच्छेद भेल आ नइ टुटबक माने जे स्थान-विशेष बदलने सम्बन्धमे बाधा उपस्थित हएब। सुनरलालकेँ अबैसँ पहिने जागेसर भाय तँ चाह पीब

शुरू कऽ नेने छला मुदा अपने ऐ ताकमे रही जे मुँहमे चाह गेला पछाइत जागेसर भाय किछु बजबो करै छैथ, माने चाहक नीक-बेजाए आकि चुप्पे रहै छैथ। तइ बीच सुनरलाल पहुँचल छल। सुनरलालकेँ देखिते बजलौं-

"एके कप चाह छह, अहीकेँ बाँटि दुनू भाँइ पीबह।"

कहि चौकीपर चाह रखि अपने दोसर कप आनए आँगन गेलौं। सुनरलालक जहिना देहक पानि काज करैमे जलजल करै छै तहिना मुँहक पानि बजै-भुकैमे सेहो छै। जइसँ बजैमे फरकोर अछिए। मुदा चाह बाँटि कऽ पीब, तइ सम्बन्धमे सुनरलाल किछु ने बाजल। भऽ सकैए जे जागेसर भायकेँ अनठिया माने गामसँ बाहर रहनिहार बुझि नइ बाजल आकि अपनत्वक विचारसँ नहि बाजल ओ तँ सुनरेलाल बुझैत हएत, मुदा बाजल किछु ने।

एक घोंट चाह पीब सुनरलाल बाजल-

"जागे भाय! पुस्तैनी सम्बन्ध रहितो, दुनू भाँइ दू ठाम रहै छी तँए मुँह-मिलानी जकाँ नहियेँ अछि, मुदा जेना हमर पिताजी आ अहाँक पिताजीक बीच सम्बन्ध छल जे संगे-संग बेसी काल एकठाम रहै छला, तेना तँ हमरा अहाँक बीच नहियेँ अछि मुदा दुनू परिवारक बीच सम्बन्ध सात पुस्तक रहल अछि।"

जागेसरो भायकेँ अपन परिवारक इतिहास बुझले-सुनले छैन तँए हूँहकारी भरैत बजला-

"ओ दिन-दुनियाँ किछु और छल, आइक दुनियाँ किछु और भऽ गेल अछि, मुदा बीचमे विचारशील मनुक्ख सेहो अछिए जे अपन वर्तमानकेँ नजैरमे रखि भविसक बाट पकैड़ सेहो चलबे करैए।"

जागेसर भाइक विचारमे सुनरलालकेँ अपनत्वक भान भेल,

जइसँ मनमे विचार जगलै जे किए ने जागेसर भायकेँ अपने ऐठाम चलैले कहिऐन। विचारैक क्रममे तँ सुनरलालकेँ मनमे विचार उठि गेल मुदा लगले अपने चिन्तनीय विचार रोकैत सुझौलकै जे समाजक (माने गाम-समाजक) ऐठाम जे पदारपन कऽ चुकल छैथ, तैठाम सँ दोसर ठाम जेबाक विचार देब अनुचित हएत, तँए मनक विचारकेँ मनेमे दबैत सुनरलाल बाजल-

“भाय, अपने गामो आ अपने परिवारो-समाज छीहे, तँए अपनो माने हमरो घर-दुआरक मुँह-कान चलि कऽ देखि लेबइ।”

सुनरलालक बात सुनि जागेसर भाइक मनमे जेना आरो बिसवास जगलैन तहिना मन हरिया गेलैन। हरियाइत मने जागेसर भाय बजला-

“सुनरलाल! यएह आशा देखि ने गामो एलौं हेन आ रहैक विचार सेहो केनहि छी।”

सुनरलाल बाजल-

“की विचार करि कऽ आएल छी जे आब गामेमे रहब?”

जागेसर भाय बजला-

“हँ।”

सुनरलाल बाजल-

“गाममे नीक लागत?”

जागेसर भाय बजला-

“जखन गाममे रहैत रही, दिल्ली नहि गेल रही तखन दिल्लियो ने तहिना छल मुदा रहैत-रहैत जखन अभ्यस्त भऽ गेलौं, तखन नीक लगए लगल किने।”

ओना, जागेसर भाय आ सुनरलालक बीच जे गप-सप्प चलै

छल, ओइसँ सम्बन्धमे गाढ़ता आबिये रहल छल मुदा बीचक जे जिनगी जागेसर भाइक रहलैन, से किछु बुझिये ने पेब रहल छेलौं। तँए ओइ दिस–माने बीचक बीतल जिनगी दिस–विचारकेँ मोड़ैत बजलौं-

“सुनरलाल, जागे भाय जखन कहै छैथ जे आब गामेमे रहब, तखन गाम-घरक काजो आ बातो-विचार होइत रहत। तइ बीचक जे समय बीतल, पहिने से बुझब ने जरूरी अछि।”

तेज-तैराक लोक सुनरलाल अछिए, हमर बात पकैड़ बाजल-

“जागे भाय, केते दिनक पछाइत गाम एलौं हेन?”

जागेसर भाय बजला-

“तीस बर्खपर एलौं हेन।”

सुनरलाल बाजल- “अपने, माने हम तँ मात्र पैंतीसे बर्खक छी, तँए पैछला किछु मोन नहि अछि। मुदा सुनल तँ बहुत बात अछिए। गामसँ जइ दिन निकललौं आ आइ पुन: गाम एलौं हेन, तइ बीचक जे समय बीतल ओ जानकारी भेला पछातिये ने पुन: भूत-भविसक मुँहमिलानी हएत। माने पैछला जिनगीक जोड़क कड़ी ऐगला जिनगीक जोड़क कड़ीसँ जुटत।”

सुनरलालक विचार सुनि जागेसर भायकेँ दोबर उत्साह जगलैन। दोबर उत्साहमे पहिल भेल- अपन तीस बरख बीतल दिल्लीक जीवनक परिचय आ दोसर ई जे जेते बेसी दू गोरेक बीच गप-सप्प होइए ओते सम्बन्धोमे प्रगाढ़ता अबिते अछि...। जागेसर भाय बजला-

“सुनरलाल! तइ दिनमे, माने जखन दिल्ली गेलौं तखन अपनो उमेर बीसे-बाइस बर्खक छल। बाबा मरल रहैथ, हुनकर श्राद्ध-कर्म करैमे पिताजी कर्ज लेलैन। तीनिये सालमे कर्ज मोटा कऽ दोबर भऽ

गेल। शुरूमे तँ देबाल–महाजन–पिताजीकेँ सोझे तगेदा करैन। माने सूदिक संग मूर रुपैआ दइले, मुदा पिताजीक हालत दिनानुदिन बद-सँ-बदतरे होइत गेलैन जइसँ रुपैआ नहि दऽ पाबि रहल छला...।”

बजैत-बजैत जागेसर भाय जेना किछु मोन पाड़ए लगला तहिना चुप भऽ मुँह बन्न कऽ लेलैन। ओना, अपना पहिलुका महाजनीक बहुत बात सुनलौं अछि आ बहुत देखलौं अछिए तँए मनमे कोनो तेहेन उथल-पुथल नहि भेल, मुदा सुनरलाल तँ नव कविरया लोक अछि, जेकरा ऊपरे-झापरे तँ महाजनीक किछु-किछु बात बुझल छै मुदा महाजनीक सूदि आ बैंकक सूदिमे की अन्तर अछि, से नीक जकाँ बुझले ने छै। बैंकोमे देखिते छिऐ जे अहाँक पाइक सूदि केते भऽ जाइ छै आ बैंकक पाइक सूदि केते होइए, जखन कि दुनू पाइये छी। सुनरलाल बाजल-

“भाय, चुप किए भेलौं?”

जागेसर भाय बजला-

“सुनरलाल, एहेन बर्बर घटना जिनगीमे पहिल बेर परिवारमे देखलौं। खेत-पथार सभ चलि गेल। मात्र घर रहने घराड़ीटा बँचल, बाँकी सभ चलि गेल। ओही सोगसँ माइयो आ पितोजी तेहेन सोगेला जे मरिये गेला।”

एक पीढ़ीक जीवनान्त भेल, दोसर पीढ़ीमे जागेसर भाय छैथ। सुनरलाल बाजल-

“भाय, तखन तँ अहाँ घोर संकटमे पड़ि गेल हएब..!”

जागेसर भाइक भीतर मनक प्रश्न जेना सुनरलाल पुछने होनि तहिना जागेसर भायकेँ भेलैन। आँखि कड़ुआए लगलैन जइसँ दुनू आँखिमे नोर आबि गेलैन। बजला-

“बौआ सुनर, जिनगीमे तेहेन अन्हार पसैर गेल जे मृत्यु छोड़ि

दोसर बाट नहि सुझि रहल छल, तखन गामसँ भागि दिल्ली गेलौं।”

जागेसर भाय आगाँ बजला-

“दिल्लीक चर्च करैसँ पहिने एकटा बात आरो अछि, से पहिने सुनि लएह।”

सुनरलाल बाजल-

“हँ, पहिने सएह कहियौ।”

जागेसर भाय बजला-

“जहिना महाजनीक मारिसँ गामसँ भगलौं तहिना दिल्ली पहुँचते मनमे एकटा नव विचार जगि गेल।”

बिच्चेमे सुनरलाल बाजल-

“से की नव विचार जगल?”

जागेसर भाय बजला-

“से जगल जे जखन पाइमे (सम्पैतमे) एतेक शक्ति अछि तखन किए ने अपनो ओही उपार्जनमे जी-जानसँ लगि शक्तिशाली बनी।”

विचारक क्रममे भँसियाइत सुनरलाल बाजल-

“वाह..!”

सुनरलालक ‘वाह’ सुनि जागेसर भाइक मनमे भेलैन जे भरिसक हमर विचार सुनरोलालकेँ नीक लगलै, मुदा आगूक जे जीवन भेल से जखन बुझैत तखन ने किछु निश्चयपर पहुँचैत। जागेसर भाय बजला-

“पाइ बनबैक पाछू जहिना ने दिनकेँ दिन बुझलौं आ ने रातिकेँ राति, तहिना खटनियोकेँ ने भारी बुझलौं आ हल्लुक। पाइक पाछू जेना सोल्हन्नी मन लटैक गेल।”

बिच्चेमे सुनरलाल बाजल-

“वाह-वाह..!”

सुनरलालक मुहसँ खसल ‘वाह-वाह’ सुनि जागेसर भाय उत्साहित नहि भेला किए तँ अपन बीतल जिनगीमे तेहेन मोड़ आबि गेल छेलैन जे भीतरसँ मने टुटि गेल रहैन। विचारकेँ आगू बढ़बैत जागेसर भाय बजला-

“बौआ सुनर, जइ समयमे गामसँ दिल्ली गेलौं, तइ समयमे बिआहो भऽ गेल छल आ एकटा सन्तान सेहो भऽ गेल छल। मासक पछाइत आठ मीटर लम्बा आ पाँच मीटर चौड़ा जमीनक एकटा टुकड़ा कीनलौं। डेढ़-दू साल बीतैत-बीतैत तीन कोठरीक अपन घर सेहो बना लेलौं। जइमे दूटा कोठरी अपन परिवार-ले रखलौं आ एकटा भाड़ा लगा लेलौं।”

सुनरलाल बाजल-

“जखन रहैक ठौर अपन भऽ गेल तखन तँ भाड़ा-भुड़ीक पाइक बचत सेहो भइये गेल हएत।”

जागेसर भाय बजला-

“हँ, सेहो भेल आ एक कोठरीक भाड़ाक आमदनी सेहो आबए लगल। अखन कुल मिला कऽ तीन ठाम मकान अछि। चारिटा कोठरीक एकटा मकान अपने रखने छी आ दूठाम भाड़ा लगौने छी।”

सुनरलाल बाजल-

“सुनै छी दिल्लीमे मकानक भाड़ा आन शहरसँ बेसी अछि?”

जागेसर भाय बजला-

“हँ से तँ अछिए। ओना, दिल्लीसँ बेसी भाड़ा मुम्बईमे छइ।

तँए ने पचास हजारसँ ऊपर भाड़ा महिनामे अबैए।”

सुनरलाल बाजल-

“जखन एते अज-गज अपन दिल्लीमे अछि तखन गाम किए आबि रहए चाहै छी?”

सुनरलालक बात सुनि जागेसर भाइक बोलक आवाज फाटल बौसुरी जकाँ घड़घड़ाए लगलैन। अपन अतीत दिस नजैर दौड़बैत जागेसर भाय बजला-

“सब पानिमे चलि गेल..!”

‘सब पानिमे चलि गेल’ सुनि सुनरलाल बाजल-

“से की भाय साहैब?”

जागेसर भाइक मन जेना थरथराए लगलैन। थरथराइत मने बजला-

“बौआ सुनर, एकटा बेटीक पछाइत एकटा बेटा भेल, फेर एकटा बेटी भेल। माने तीनटा सन्तानक पछाइत पत्नीकेँ ऑपरेशन करा देलिऐन। जेठ बेटीक बिआह सेहो कऽ लेलौं। छोट दुनू बेटा-बेटीकेँ कौलेजमे नाओं लिखेलौं। कौलेजेक अवस्थामे, माने कौलेजमे पढ़ैऐक अवस्थामे छोटकी बेटी लव मैरेज कऽ लेलक आ बेटा गाड़ीक एक्सीडेन्टमे मरि गेल..!”

सुनरलाल बाजल-

“बाप रे! तखन तँ परिवारे नष्ट भऽ गेल..!!”

सुनरलालक बात सुनि जागेसर भाइक दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगलैन। आगू किछु बजैक साहसे ने होइन। नजैर उठा कखनो सुनरलालपर दैथ आ लगले फेर निच्चाँ कऽ लैथ...।

दुनू गोरे माने जागेसरो भाय आ सुनरोलालकेँ थकथकाएल

देखि बजलौं-

“कननौं तँ किछु नहियेँ हएत। जे चलि गेल ओ चलि गेल, मुदा अपने दुनू परानी तँ जीबै छी, तइले ते किछु...।”

नोर पोछैत जागेसर भाय बजला-

“बेटाक एक्सीडेन्टक पछाइत अपनोसँ बेसी पत्नीकेँ दुख भेलैन। मतिछिन्नू जकाँ करए लगली। एकटा मित्र कहलैन जे ‘हरिद्वार जाउ। ओइठाम गेला पछाइत सभ किछु ठीक भऽ जाएत।”

बजा गेल-

“हँ, ठीके कहलैन।”

जागेसर भाय बजला-

“दुनू परानी हरिद्वारो गेलौं।”

बजलौं-

“हरिद्वार गेला पछाति की भेल?”

जागेसर भाय बजला-

“मन्दिरक पुजेगरीकेँ सभ वृतान्त अपन कहलयैन। ओ विचार देलैन जे हरिवंश कथा सुनैक एक सप्ताहक अनुष्ठान करू, सभ ठीक भऽ जाएत।”

सुनरलाल बाजल-

“ठीके विचार देलैन।”

जागेसर भाय बजला-

“नियम-निष्ठासँ सेहो करेलौं, सुनलौं।”

सुनरलाल बाजल-

“सुनला पछाइत की बुझि पड़ल?”

जागेसर भाय बजला-

“परिवारक चिन्ता थोड़े जरूर कमल जइसँ विचारमे कनी उगरास भेल।”

सुनरलाल बाजल-

“की उगरास?”

जागेसर भाय बजला-

“दुनियाँमे हमहीं टा एहेन नइ छी, हमरा सन-सन हजारो-लाखो एहेन छैथ जे जीवनमे हुसबो केलाह आ हुसियो रहले छैथ। मुदा कोनो-ने-कोनो रूपेँ जीवन तँ बीतेबे केलैन आ बिताइयो रहले छैथ, सएह...।”

❑

शब्द संख्या : 2574, तिथि : 28 मार्च 2020

झूठक झालि

अदहा चैत बीत गेल मुदा चैतक जेहेन उष्णता चाही ओ अखन तक मौसममे नहि आएल अछि। जेना आन साल फगुआक पराते लोक अपन-अपन सिरको आ कम्बलोकेँ रौद लगा, समेट कऽ ऐगला जाड़-ले बान्हि कऽ रखि लइ छला, से ऐ बेर नहि भेल। ओना, पहिनौं केतेक साल एहेन होइते छल जइमे जाड़ किछु बिलंमसँ हटने सिरक-कम्बल किछु बिलम्ब धरि लोक ओढ़ै छला, मुदा से गोटे-गोटे साल एहेन होइत छल। ऐ बेरक समय तइमे बीस पड़ल। तेकर कारण भेल जे एक तँ शीतलहरी फगुआ तक धेने रहल, दोसर शीतलहरी हटिते तेहेन जनमारा बरखा भेल जे जाड़केँ आरो आगू बढ़ा देलक। अनधुन पाथरो खसल आ पछिया हवा सेहो धुर-धार पकैड़ लेलक जइसँ जाड़क तेते बढ़ोत्तरी भऽ गेल जे अखनो घूर तापब आ सिरक-कम्बल ओढ़ब अनिवार्य बनले अछि। से खाली लोके आ माले-जालक संग भेल, सेहो बात नहियेँ अछि। मौसमक रूप बदलने आमो आ रब्बियो-राइक संग भेल। आन साल चैती दुर्गाक समय, जे अदहा चैतक पछाइत पड़इ छल, आमोक टुकला तेहेन भऽ जाइ छेलै जे लोक चटनियो आ कुच्चो-अँचार खाइ छल से ऐ बेर आमक मोजरो अखन तक ओहिना अछि। मड़ुआ भरि-भरिक दाना बनल अछि। तहिना गहुमोक अछि। आन साल चैती दुर्गाक समय धुर-झाड़ गहुमक तैयारियो चलै छल आ खेतसँ कटियो गेल रहै छल। मुदा ऐबेर से नहि, ऐबेर कोला-कोली गोटे-गोटे खेतक गहुम कटल अछि बाँकीमे ओहिना लगल अछि। लगल कि अछि जे

तेहेन बर्खा-पानिक संग पाथर खसल जे खेतक-खेत गहुम चुरम-चुर भऽ गेल।

मौसमक विकरालता रहने विवेक विहारी काकासँ चारि-पाँच माससँ भेँट नहि भेल, तँए मन उबिया रहल छल। मुदा मन उबियेनहि की, समयमे तेते ठण्ढ छेलै जे घरसँ निकलैक हिम्मते ने हुअए। ओना, पचहत्तैर बर्खक विवेक विहारी काका अखनो शरीरसँ एहेन फेहम छैथ जे नीक समय रहने सभ दिन एक बेर-दू बेर सौंसे गाम घुमैत छला मुदा सरदीसँ एलर्जी रहने आनो साल घुमैसँ परहेज करिते रहैथ। ऐ बेर तँ सहजे तेतेक सरदी पड़ि रहल अछि जे दरबज्जा छोड़ि केतौ नहि जाइ छैथ।

चैती दुर्गाक आइ तेसर पूजा छी माने चैत शुक्ल पक्षक तृतीया छी। ठण्ढ रहितो लोकमे, खास कऽ स्त्रीगण आ धिया-पुतामे पूजाक उत्साह जगिये गेल अछि।

अपनो मनमे भेल जे एहने-एहने समयमे ने बुढ़ो-पुरान आ धियो-पुतो ठण्ढसँ मरिते अछि। तहूमे चैती जाड़ छी जे सोझे हाड़मे गड़ि शरीरकेँ थरथरबैए। मनमे भेल जे जँ कहीं विवेको विहारी काका जाड़सँ अक्रान्त भेला आ मरि गेला तखन तँ मन लगले रहि जाएत जे मरैसँ चारि-पाँच मास पहिनहिसँ काका भेँट नहि भेल छला। नीक समय रहने एकबेर-दूबेर सभ दिन एकठाम बैस गपो-सप्प करै छेलौं आ बहुत बात सिखतो छेलौं...।

विवेक विहारी काकासँ भेँट करैले मन तेते उबिया गेल जे मने-मन विचारि लेलौं जे आइ किछु हएत मुदा काकासँ भेँट करबे करबैन। ओ ने बुढ़ छैथ तँए घरसँ नइ निकलै छैथ, मुदा अपने तँ से नहि छी।

चाह पीब विवेक विहारी काकासँ भेँट करए विदा भेलौं। घरसँ

निकैलते मनमे उठल जे देखिते काका कहबे करता जे हम ने बुढ़ भेलौं तँए घरसँ जाड़क दुआरे नइ निकलै छी मुदा तोंहू जबान रहितो सहए भेलह। फेर अपने मनमे बहन्नो सुझि गेल जे जँ से कहता तँ कहबैन जे काका समय खराब भेने काजक समय घटिये जाइए, मुदा परिवारक जे सबदिना काज अछि ओ तँ केलाक पछातिये ने परिवारक गाड़ी आगू मुहेँ ससरत। तइ संग ईहो मनमे भेल जे जखने तर्कपूर्ण बहन्ना करब तँ ओ बिसवास कइये लेता। मन हल्लुक भऽ गेल।

विवेक विहारी काका-ऐठाम पहुँचते देखलौं जे काका सिरक ओढ़ि दरबज्जाक चौकीपर मुँह झाँपि बैसल किछु सोचि रहल छैथ। दरबज्जापर पहुँचते बजलौं- "काका, गोड़ लगै छी..!"

आवाज सुनि मुँहपर सँ सिरक खसका काका बजला-

"नीके रहह। बहुत दिनक पछाइत तोरासँ भेँट भेल।"

बजलौं- "काका, समये तेहेन भऽ गेल अछि जे घरसँ निकलब कठिन भऽ गेल अछि, तँए नइ भेँट होइ छेलौं।"

विवेक विहारी काकार्केँ जेना विचारक बाण सुतरलैन तहिना बजला-

"एहने समयमे ने धियो-पुतो आ बुढ़ो-बुढ़ानुसक ताक-हेर जरूरी अछि, तैठाम जँ अनठा देबहक तखन तँ अनेरे ने ओ मरबे करत।"

कक्काक बात सुनि अपने निरुत्तर भऽ गेलौं तँए विचारकेँ बदलैत बजलौं- "नीक समय रहह आकि अधला, कमसँ कम एते तँ भेबे कएल जे ओ कटि गेल।"

मुड़ी डोला हमर बात तँ काका स्वीकारि लेलैन मुदा जेना मनमे कोनो बात–विचार–नाचि रहल छेलैन तहिना ओइ विचार दिस पुन:

मन बढ़ए लगलैन। अपना बुझि पड़ल जे भरिसक काका कोनो विचारमे ओझराएल छैथ। अनायास विवेक विहारी कक्काक मुहसँ व्यंगपूर्ण मुस्कियो आ मुस्कीक संग आवाजो निकललैन-

“झूठक झालि बजौनिहार चाटुकार सबहक चाटुकारिता कि कोनो आइयेक छी, सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि। अखनो अछि आ आगूओ होइत रहत।”

अपना जनैत विवेक विहारी काका हमरा सुना कऽ बजला आकि अपन विचारक दौड़मे बजला से ओ जानैथ मुदा सुनलौं तँ हमहूँ। बजलौं-

“से की काका?”

विवेक विहारी काका बजला-

“नारदक नाओं सुनने छहक?”

बजलौं-

“किए ने सुनने रहब। वएह नारद ने जे घरबलाकेँ कहलखिन- तोहर घरवाली तोहर देह चटै छह आ घरवालीकेँ कहलखिन जे तोहर पति नोना गेल छथुन तँए दुनू गोरेमे जे प्रेम हेबा चाही से नहि छह।”

हमर बात सुनि कक्काक मनमे जेना भीतरसँ खुशीक गुदगुदी लगलैन तहिना हँसैत बजला-

“तोरा हिसाबे नारद केहेन छला?”

बजलौं-

“काका, नारद नमरी झगड़लगौन छला। जखन दुनू परानी तककेँ नहि छोड़ै छेला तखन दू परिवार आ दू समाजकेँ छोड़ि सकै छला..!”

अपना विचारे माने कानक सुनल विचारे हम बजै छेलौं आ

चिन्तनक हिसाबे काका पुछि रहल छला तँए सबाल-जवाबमे केतौ मेल नहियेँ खाइ छल। ओना, काका दुनू बात–माने अपन कानक सुनल बात आ चिन्तनक बात–जानि रहल छैथ मुदा अपने तँ खाली सुनलेहे बात टा जनै छी, तँए अपन विचारकेँ दृढ़तासँ पकड़ने छेलौं। काका बजला-

"नारद देवलोकोमे बास करै छला आ मर्त्तलोकमे सेहो घुमै छला।"

बजलौं-

"हँ, से तँ छेलाहे। देवलोक-सँ-मर्तलोक तक प्रतिदिन टहलै छला। मर्तलोकक संवाद देवलोकोमे पहुँचबै छला आ देवलोकक संवाद मर्तलोकोमे लोककेँ कहै छेलखिन।"

हमर बात सुनि विवेक विहारी काका भभा कऽ हँसला। हँसी रोकि बजला-

"बौआ श्याम, नारद पुराण पुरुष छैथ, माने पौराणिक पात्र। हुनक देल अमूल्य रत्न अछि। ओइ अमूल्य रत्नकेँ झाँपैक खियालसँ रंग-बिरंगक कथा गढ़ि झूठक झालि बजौनिहार चाटुकार सभ हुनका बदनाम करैत आबि रहल अछि।"

कक्काक बात सुनि अपनो मन ठमकल। ठमकैक कारण भेल जे अपने की बुझै छी आ काका की कहि रहला हेन..! बजलौं-

"से की काका?"

विवेक विहारी काका बजला-

"बौआ, नारद चौरासी टा विचार सूत्रक प्रतिपादन केलैन। जे चौरासियो सूत्र मनुक्खक जिनगीक चौरासी आसन छी, माने जीवन जीबाक चौरासी टा कला..!"

अखन तक जे नारदक प्रति अपन धारणा मनमे बनल अछि, ठीक ओकर विपरीत विचार विवेक विहारी कक्काक सुनि बजलौं-

“चौरासी आसन की कहलियै काका?”

विवेक विहारी काका बजला-

“अखनो गाम-घरमे लोकक मुहेँ सुनै छह कि नहि जे चौरासी आसनसँ जीवन चलैए।”

बजा गेल-

“हँ, से तँ सुनै छी..!”

विवेक विहारी काका बजला-

“यएह चौरासी आसनक सृजन नारद केने छैथ। जेकरा घटिया कहक आकि झूठक झालि बजौनिहार चाटुकारक चाटुकारी कहक, ओही महत्वपूर्ण ज्ञानकेँ दबबाक षडयंत्र झूठ बजनिहार चाटुकारसभ सभ दिनसँ रचैत-करैत आबि रहल अछि आ अखनो रचै-बजैए।”

बजलौं-

“ऐ सँ झूठ बजनिहार चाटुकार सभकेँ की भेटै छै?”

विवेक विहारी काका बजला-

“अपन मरनमुख विचारकेँ जीवनमुख विचार बना समाजकेँ गुमराह करैत, माने धोखा दैत आबि रहल अछि। जइसँ समाज पथ-भ्रष्ट बनि जिनगीक स्वस्थ पथसँ विमुख भऽ दिशाहीन होइत आबि रहल अछि।”

कक्काक विचार सुनि अपनो मनक मैल, माने अज्ञानता जेना कमए लगल तहिना भक् खुजि गेल। तैबीच विचारकेँ आगू बढ़बैत विवेक विहारी काका पुछि देलैन- “कालिदासक नाओं तँ सुननहि

छह?”

कहलयैन- “हँ। आइ कि बच्चेसँ सुनैत आबि रहल छी जे कालिदास एहेन छला जे जेही डारिपर चढ़ल छला तेही डारिकेँ जड़िसँ काटै छला।”

हमर बात सुनि विवेक विहारी काका फेर भभा कऽ हँसला। हँसी रोकि बजला-

“एकर माने यहए ने जे कालिदास सन मूर्ख ऐ धरती पर दोसर नहि भेल अछि?”

ओना, कक्काक विचारक प्रवाहमे अपने नहि भँसलौं। माने ई नहि कहलयैन जे ‘हँ, हुनका सन मुर्ख दोसर नहि भेला’, किए तँ कालिदासक सम्बन्धमे ईहो बुझल अछि जे ओ महापण्डित छला। अनेको महान-महान कृति- मेघदूतम्, कुमारसम्भवम्, रघुवंशम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञानशाकुनतलम् इत्यादि रचना सेहो केने छैथ आ राजा विक्रमादित्यक दरबारमे नवरत्नमे एक रत्न सेहो छला। बजलौं- “ओ महापण्डित छला तँए मूर्ख केना मानबैन?”

विवेक विहारी काका बजला-

“जे आदमी जइ डारिपर चढ़ल रहत ओइ डारिकेँ जँ जड़िसँ काटत, ओहन काटनिहारकेँ लोक की बुझत?”

असमंजस में पड़ि गेलौं। किए तँ ईहो बात बुझले अछि जे जइ डारिपर छला ओकरो कटितो छला। तैसंग ईहो बुझले अछि जे ओ महापण्डित छला। बजलौं-

“शुरूमे ओ मुरुखपन काज केने मुरुख छला, पछाइत सरस्वतीक असिरवादसँ विद्वान भेला। विद्वान भेला पछाइत अमूल्य कृति सबहक रचना केलैन।”

कालिदासपर सँ धियान हटबैत विवेक विहारी काका बजला-

“हमहीं महाविद्यालयक शिक्षण कार्य किए छोड़लौं से बुझल छह?”

बजलौं-

“जखन बेटा कमाए लगला तखन अपने कमाएब छोड़ि देलौं। सएह ने?”

मुस्कुराइत विवेक विहारी काका बजला-

“नइ, ई बात नइ छी।”

बजलौं-

“तखन, की बात छी?”

विवेक विहारी काका बजला-

“जाधैर अपन विचार परिपक्व नहि भेल छल ताधैर नीक-बेजाए सभ बजै छेलौं, मुदा जखन विचार परिपक्व भेल तखन विचारमे दृढ़ता आनि निश्चय केलौं जे ने अधला (गलत) काज करब आ ने अधला विचार मुहसँ निकालि दोसरकेँ देब।”

विवेक विहारी कक्काक विचार नीक जकाँ माने स्पष्ट रूपेँ नहि बुझि, बजलौं-

“काका, कनी खरियारि कऽ कहियौ। नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं।”

हमर जिज्ञासा देखि आकि की, विवेक विहारी काका हँसए लगला। ओना, हुनकर हँसी देखि अपना मनमे कनी-मनी शंको हुअ लगल जे कहीं हमर विचारे ने ते उनटा-पुनटा भऽ गेल जइसँ काका हँसि रहल छैथ! मुदा से नहि, ओ विचारक गम्भीरताकेँ पकैड़ बजला- “श्याम! ओना अपने जखन पढ़िते रही तहियेसँ झूठ बजैक

परहेज करए लगलौं। मुदा की झूठ की सच से नहि बुझि पबैत रही, तँए बहुत झूठो बजाइ छल, मुदा जहियासँ झूठ-सच बुझैक ओकाइत भऽ गेल माने झूठ-सच बुझैक क्षमता भऽ गेल तहियासँ झूठ बजैक सोल्होअना परहेज कऽ लेलौं।”

ओना, अपना जनैत काका समीचीन उत्तर देने छला, मुदा अपने नीक जकाँ बुझिये ने पेलौं। पुछलयैन- “काका, नीक जकाँ अपनेक विचार नहि बुझि पेलौं।”

विवेक विहारी काका बजला- “श्याम, शुरूमे–माने नोकरीक शुरूमे–जखन बच्चा सभकेँ पढ़बै छेलौं तखन सिलेवसमे जे पोथी उपलब्ध छल ओही आधार पर पढ़बै छेलौं, मुदा जखन पोथीक नीक-अधलाक बोध भेल, तखन विचार अपने मनमे टकराए लगल। एक दिस जे सिलेवसमे अछि वएह पढ़बऽ पड़त आ दोसर दिस अपन मन धिक्कारऽ लगल जे बच्चा सभकेँ सज्ञानक बदला अज्ञान बना रहल छी, जे अपना जनैत अनुचित भऽ रहल अछि। तँए नोकरी छोड़ि देलौं।”

विवेक विहारी कक्काक विचार सुनि मन जेना शान्त भऽ गेल। बजलौं- “काका, अखन तक ई बात नहि बुझै छेलौं तँए गलत धारणा मनकेँ जमि कऽ पकड़ने छल।”

अपन उपलब्धि आकि विचारक प्रभावसँ विवेक विहारी कक्काक मन जेना उत्फुलित भेलैन तहिना फूलक कली जकाँ मुँह मुस्किएलैन। बजला-

“बौआ श्याम, मण्डन मिश्रकेँ जनै छुहुन?”

बजलौं- “हँ।”

काका बजला- “केना जनै छुहुन?”

बजलौं- “वएह मण्डन मिश्र ने जिनकर सुग्गो संस्कृतेमे बजै

छेलैन।”

काका बजला-

“हँ, आरो किछु?”

बजलौं-

“ओ अपन मैथिल अद्वैतवादी विद्वान छला। जे शंकराचार्यसँ शास्त्रार्थमे पराजित भेला।”

‘शंकराचार्यसँ शास्त्रार्थमे पराजित भेला’ सुनि कऽ आकि की, एकाएक विवेक विहारी कक्काक चेहराक रंग मलिन हुअ लगलैन। जेना नान्हिटा मेघक टुकड़ी, माने बादलक टुकड़ी सूर्यक प्रखर रौदकेँ किछु क्षणक लेल झाँपि दइए तहिना भेलैन। मुदा अपन आक्रोशकेँ ऐ दुआरे नहि व्यक्त केलैन जे ओ हमरा अबोध बच्चा बुझै छैथ। मनमे भेल हेतैन जे श्याम अपन अध्ययनक बले नहि, केकरो मुँहक सुनल बात बाजि रहल अछि...। बजला-

“बौआ, भरिसक तूँ कोनो झूठ बजनिहार चाटुकारक मुँहक सुनल बात बुझै छह।”

कक्काक बात सुनि मनमे भेल जे ठीके काका बुझि रहला अछि, किए तँ अपने मण्डन मिश्रक कोनो रचना तँ अखन तक पढ़नौं ने छी, मनन-चिन्तनक कोन बात..! बजलौं-

“काका, एकटा पण्डीजी बाजल छेला, सएह सुनलो अछि आ मोनो अछि। सएह बजलौं।”

तुरैछ कऽ विवेक विहारी काका बजला-

“ओ मुफ्तक चूरा-दही खाइबला हेता, तँए एहेन बात बजला।”

बजलौं- “तखन?”

विवेक विहारी काका बजला-

“ओना, कतेको विद्वतजन ऐ विचारकेँ झूठ साबित केने छैथ। मुदा अखन बहुत नहि, खाली दूटा विद्वानक विचार कहै छिअ। पहिल डॉक्टर वैद्यनाथ झाक, जे अम्बेदकर विश्वविद्यालयमे संस्कृतक विभागाध्यक्ष छला आ दोसर डॉक्टर तारानन्द ‘वियोगी’क विचार कहै छिअ।”

ओना, दुनू गोरे–माने डॉक्टर वैद्यनाथो झा आ तारोनन्द ‘वियोगी’क नाओं सुनल अछि मुदा हुनकर लिखल विचार बुझल नहि अछि। बजलौं-

“हँ, कहियौ।”

विवेक विहारी काका बजला-

“डॉक्टर वैद्यनाथ झा, जे राष्ट्रपति सम्मानसँ सम्मानित छैथ, ओ अपन पोथी ‘मण्डन मिश्र श्रद्धा-कुसुमाञ्जलि:’मे साबित केने छैथ जे मण्डन मिश्र आ शंकराचार्यक बीच कहियो शास्त्रार्थ भेबे ने कएल, तहिना डॉक्टर तारानन्द ‘वियोगी’ अपन पोथी ‘मण्डन मिश्र और उनका अद्वैत वेदान्त’ मे सेहो काफी चिन्तन-मनन केलाक पछाइत लिखने छैथ जे झूठ चाटुकार सबहक सभटा खेल छी।”

पहिल-पहिल दिन दुनू पोथीक नाओं सुनलौं। अपन पढ़ल दुनूमे सँ कोनो नहि अछि मुदा विवेक विहारी काकापर एते बिसवास तँ जमले अछि जे जे आदमी झूठ बजैक विरोधमे अपन जीविका छोड़ि सकै छैथ ओ झूठ किए बजता, तँए मन मानि गेल जे काका जे कहि रहला हेन ओ सोल्होअना सत् कहि रहला अछि। बजलौं-

“ओऽऽऽ..! ई बात अछि..!”

काका बजला- “एहेन झूठ बजनिहार कि कोनो आइये अछि, सभ दिनसँ आबि रहल अछि। एकटा बात आरो कहि दइ छिअ।

ओना, समयो बहुत बेसी भऽ गेल अछि विचारो बहुत भेल।”

बजलौं-

“काका, मन तँ होइए जे आरो सुनी मुदा नहाइ-खाइ-पीबैक समय भऽ गेल। खाएर जे भेल से भेल मुदा जे बजैक मन बनि गेल अछि ओ कहि दिअ।”

विवेक विहारी काका बजला-

“तुलसी दासक नाओं सुनने छह?”

बजलौं-

“हँ! तुलसी दास कि कोनो हेराएल साधक छैथ। हुनकर लिखल रामायण ‘रामचरित मानस’ रखनौं छी आ कहियो-कहियो पढ़बो करै छी।”

विवेक विहारी काका बजला-

“हुनका विषयमे की सभ बुझल छह?”

कक्काक बात सुनि अकबका गेलौं। अकबकाइक कारण ई भेल जे तुलसीदासक रचना ‘रामचरित मानस’ तेहेन रचना अछि जे दुनियाँक अधिकांश भाषामे ओकर अनुवाद सेहो भेल अछि आ एक-सँ-एक श्रेष्ठ विद्वान प्रशंसो केने छैथ, तइमे काका की पुछि रहल छैथ..! बजलौं-

“काका, तुलसीदासक कि कोनो एक्केटा बात छैन। ओ तँ अथाह समुद्र जकाँ ‘रामचरित मानस’क रचना केने छैथ।”

विवेक विहारी काका बजला-

“हुनकर जीवनी बुझल छह?”

ओना, तुलसीदासक सम्बन्धमे किछु-किछु बात जरूर बुझल अछि, मुदा अपन तँ कोनो दृष्टिकोण अछि नहि, जइ अनुकूल हुनकर

जीवनीकेँ परेखब। मुदा विवेक विहारी काकाकेँ तँ अपन दृष्टिकोण छैन, जइ अनुकूल ओ बुझै छैथ। बजलौं-

“काका, ऊपरे-झापरे ने किछु-किछु बुझल अछि जे सहियो भऽ सकैए आ गलतियो भऽ सकैए, तँए अपनहि किछु कहियौ।”

विवेक विहारी काका बजला-

“बौआ श्याम, जँ हुनकर जीवनीकेँ प्रतीक रूपमे बुझबह तखन तँ सही बुझेतह। मुदा जँ साधारण नजैरिये बुझबह तँ ओ सही नहि बुझेतह। अखन एतबे राखह। एतबे बुझह जे झूठक झालि बजौनिहार सभ दिनसँ आबि रहल अछि, अखनो अछि आ आगूओ ताधैर रहत, जाधैर लोकक अपन चिन्तन-मनन नहि बनत।”

बजलौं-

“सएह?”

विवेक विहारी काका बजला-

“हँ, अखन सएह।”

❑

शब्द संख्या : 2352, तिथि : 01 अप्रैल 2020

दुष्टपन

आने-आन किसान जकाँ रीतलालकेँ सेहो जुआनीए-सँ अपन परिवारकेँ सम्पन्न किसान परिवार बनेबाक विचार मनमे रहलैन। जहिना जीवनक उद्देश्य सभकेँ सम्पन्नता प्राप्त करब होइए तहिना रीतलालकेँ सेहो रहलैन। तेकर कारण छल जे केतेको पुस्तसँ परिवार किसानी-जीवनसँ जुड़ल रहलैन मुदा समैयक फेड़-फाड़क चलैत नहि भऽ पबैत रहैन। समैयोक फेड़-फाड़क अनेको कारण अछि, जेना गाम-गामक भौगौलिक बनावटक दुआरे कोनो गाम धार-धुरसँ अक्रान्त रहैए तँ कोनो गामक माइटिक शक्ति एतेक क्षीण होइए जे नीक उपजा-बाड़ी नहि भऽ पबैत, तहिना कोनो गामक एहेन बनावट होइए जे ऊँचरस जमीन रहने पाइनिक अँटकाउ नहि भऽ पबैत जइसँ समुचित उपजा-बाड़ी सेहो नहि होइए। खाएर जे होइए ओ तँ गाम-गामक बनावटक अपन-अपन गुण-अवगुणक कारणे होइए। मुदा रीतलालक गाम- रोहितपुरक अपन बनावट छै।

रोहितपुरक भौगोलिक बनावट एहेन अछि जइमे तीन खाड़ीक जमीन अछि। गामक एक-तिहाइसँ किछु कम ऊँचरस जमीन अछि, जेकरा भीठ कहै छिऐ, जइमे लोक घरो-दुआर बनबैए, बाड़ियो-झाड़ी बनबैए आ गाछियो-बिरछी लगबैए। तहिना दोसर तरहक माने दोसर खाड़ीक जमीन अछि, जेकरा तीन फसिला सेहो कहै छिऐ आ मध्यम जमीन सेहो कहै छिऐ, ओहन जमीन एक-तिहाइसँ किछु ऊपरे रोहितपुरमे अछि। आ तेसर तरहक माने तेसर खाड़ीक जे एक-तिहाइ करीब अछि, ओ नीचरस अछि, जेकरा चौरी कहै छिऐ।

गामक अधिकांश किसान परिवार ओहन छैथ जिनका तीनू तरहक जमीन छैन। ओना, तीनू तरहक जमीन, लग्गी-डन्टासँ नापल, एक्केरंग नहियेँ छैन मुदा कमो-बेश तीनू तरहक जमीन छैन। किनको चौरीए बेसी छैन, तँ किनको मध्यमे जमीन बेसी छैन माने तीन-फसिला, तहिना किनको ऊँचरस, भीठ जमीन बेसी छैन। खाएर जे अछि ओ तँ सभकेँ अपन-अपन अछि।

सम्पन्न किसान परिवार बनेबाक पाछू रीतलालक संस्कारमे किसानी संस्कार भरपूर छेलैन। ओना, एहेन विचार किसानक सभ परिवारमे रहैए मुदा रीतलालक मनमे पुस्त-पुस्ताइनसँ अबैत विचारधारा छेलैन।

बीस बीघा जमीन रीतलालक पिताजीक अमलमे छेलैन मुदा समैयक चढ़ाव-उतारक कारणे सम्पन्नता नहि आबि सकलैन। सम्पन्नतासँ मतलब ई नहि जे बहुत बेसी जमीन रहल जइसँ उपजा-बाड़ी पर्याप्त भेल। सम्पन्नतासँ मतलब ऐठाम ई जे खेबा-पीबाक अन्न-पानिसँ लऽ कऽ फल-फलहरीक गाछी-बिरछीक संग माछ पोसैक पोखैर-झाँखैरसँ लऽ कऽ दूध-दहीक लेल गाए-महींसिक पालन धरि अछि।

बच्चेसँ रीतलाल पढ़ै-लिखैमे नीक विद्यार्थी रहला, जइसँ एम.ए. नीक जकाँ पास केलैन। संयोग बनल, रोहितपुर गामसँ पाँच किलो मीटर पर एकटा कौलेज खुजल, जइमे रीतलालकेँ नोकरी सेहो भऽ गेलैन। गामेसँ कौलेज जाइ-अबै छला जइसँ गाममे रहैक अधिक समय भेटै छेलैन। ओना, नव कौलेज रहने दरमाहा सेहो सरकारी कौलेज जकाँ तँ नहियेँ छेलैन, मुदा वेतनक रूपमे दू हजार रुपैआ महीना जरूर भेटै छेलैन। घरपर सँ कौलेज गेने-ऐने आ अपनाकेँ रोजगारी भेने रीतलालक मनमे तृप्ति भइये गेल छेलैन। एक स्तरक शिक्षण संस्था रहितो सभ कौलेजमे सभ रंगक वेतनो

भेटिये रहल छल। सरकारी कौलेजमे एक स्तरक वेतन छल आ प्राइवेट कौलेजक वेतन अनेको रंगक छेलैहे। जइ कौलेजमे माने प्राइवेट कौलेजमे पर्याप्त विद्यार्थी छल, जइसँ पर्याप्त आमदनी रहने दरमाहा अधिक भेटै छेलै, आ जइ कौलेजमे विद्यार्थीक संख्या कम छल, तइमे शिक्षककेँ दरमाहो कम छेलैन। मुदा सबहक मनमे ई आशा बनले रहैन जे जाधैर कौलेज सरकारीकरण नहि भेल अछि ताधैर वेतनक कोनो ठेकान नहि अछि। जखन सरकारीकरण कौलेज भऽ जाएत, तखन वेतनमे सुधार भेने एकरूपता भइये जाएत। अही आशासँ सभ शिक्षक काज करै छला।

दस बरख नोकरी केला-पछाइत रीतलालक मनमे पुन: अपन पारिवारिक संस्कार, माने किसानी जिनगीक संस्कार धीरे-धीरे जोर पकड़ए लगलैन। ओना, अनका जकाँ रीतलालक मनमे कहियो एहेन नहि भेलैन जे खेतक आड़िपर केना जाएब वा कोदारि-खुरपीसँ काज केना करब। ओ विद्यार्थीए जीवनसँ करैत आबि रहल छला, तँए कहियो मनमे ई नहि भेलैन जे लोक हँसत। ओना, गामो-समाज तँ गामे-समाज छी, जँ पढ़ल-लिखल लोक कोदारि-खुरपीसँ खेतमे काज करै छैथ तँ रंग-बिरंगक कुटी-चौल लोक करिते अछि। जइसँ अधला-सँ-अधला वृत्ति- चोरी, ठकनाइ-फुसियेनाइ आदि छिपल रहैए आ उचित (सही) काज हँसीक विषय बनि जाइए।

दस बरख धरि नोकरीक जीवन बितेला-पछाइत रीतलाल अपन मनकेँ असथिर करैत योजनाबद्ध ढंगसँ अपन परिवारकेँ उठेबाक विचार मनमे ठानि लेलैन। सभसँ पहिने अपन खेतक सीमांकन केलैन। सीमांकन ई केलैन जे केते जमीनमे बास अछि आ केते जमीन चास अछि। बास माने भेल घर-आँगनसँ लऽ कऽ दुआर-दरबज्जा, खरिहाँन, बाड़ी-झाड़ी इत्यादि अछि। तहिना चासक केतेक जमीन ऊँचरस अछि माने गाछियो-कलम लगबै-जोकर आ

केते जमीन तीन-फसिला अछि आ केतेक जमीन नीचरस अछि माने चर-चाँचर। जइमे रौदी भेने तँ किछु उपजक आशा होइतो अछि बाँकी समय माने अधिक बरखा भेने वा बाढ़ि एने ओकर मालगुजारियो तक नहि ऊपर भऽ पबैत, सभ डुमि जाइए। जइ जमीनक भैल्यू सेहो कम छै। ओना, एहेन संस्कार सेहो किसान परिवारमे सभ दिनसँ आबिये रहल अछि जे अधला-सँ-अधला जमीन किए ने हुअए, मुदा ओकरा बेचब मर्यादासँ हीन अछि। ओहने जँ परिस्थिति परिवारक भऽ गेल जखन कोनो दोसर चारा नहि रहल तखने लोक जमीन बेचै छैथ। ऐ मानेमे बजरूआ संस्कार गाममे नहि प्रवेश केलक। माने खेतक उपज कम भेने ओइ पूँजीकेँ बेचि बैंकमे जमा कऽ अधिक सूदि उपार्जन करी...।

दरबज्जापर बैसल रीतलाल एकाग्र भऽ सोचि रहल छला जे अपन जीवनकेँ समृद्धसँ समृद्धतम अवस्थामे केना बढ़ाएब? प्रश्न तँ जटिल अछिये मुदा केहनो जटिल-सँ-जटिलतम प्रश्न किए ने हुअए, ओकर उपाय नहि अछि वा रस्ता नहि अछि सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो अछिए। पत्नीकेँ शोर पाड़लैन। लगमे अबिते सुशीला बजली-

"किए शोर पाड़लौं?"

गम्भीर दृष्टिएँ गम्भीर मुद्रामे रीतलाल बजला-

"बैसू, जीवनक किछु गम्भीर विचार करब अछि।"

ओना, जीवनक किछु 'गम्भीर विचार' सुनि सुशीला अकबका गेली। अकबकाइक कारण भेलैन जे जीवन तँ जीवन छी ओइमे गम्भीर विचार की भेल। रीतलालक लगमे बैसैत सुशीला बजली-

"की जीवनक गम्भीर विचार?"

साधारण पढ़ल-लिखल सुशीला, माने स्कूली शिक्षा मात्र मिडिल धरिक छेलैन तहूमे सासुर बसला पछाइत परिवारक काजमे

तेना उलैझ गेली जे किछु पढ़ै-लिखैक समैये ने भेटलैन मुदा परिवार चलबैक तँ लूरि, परिवार सम्हारैक ढंग तँ ओतेक भइये गेल छैन जे घर-अँगनाक काज सम्हारि तीनटा बालो-बच्चाकेँ पोसिये रहल छैथ।

रीतलाल बजला-

“गम्भीर विचार ई जे परिवारकेँ बेसी-सँ-बेसी नीक केना बनाएब। ओना, परिवार छी, नीक कि बेजाए चलिये रहल अछि आ आगूओ चलबे करत।”

पतिक मुँहक बात ‘परिवारकेँ बेसी-सँ-बेसी नीक बनाएब’ सुनि सुशीलाक मनमे जेना एक नव चेतनाक जागरण भेलैन। जे सोभाविको अछिए। सबहक मनमे ई इच्छा रहिते छै जे अधिक-सँ-अधिक नीक बनि परिवारोकेँ अधिक-सँ-अधिक नीक बनाबी। ओना, सुशीलोक चेतना सुतल नहियेँ छेलैन, जागृतावस्थामे छेलैन्हे मुदा जे जीवन जीब रहल छेली तइ अनुकूल ठमकलो तँ छैन्हे। जागृतावस्थाक माने भेल वर्त्तमानक जिनगीकेँ सम्हारि आगूक लेल सेहो क्रियाशील बनाएब, से नहि छेलैन। जे जीवन छलैन तेकरे पाछू अपन सभटा समय निकैल रहल छेलैन, जइसँ आगूक कोनो नव विचार व नव काज नहि आबि पबैत रहैन।

जमीनक जहिना-जहिना सीमांकन रीतलाल मने-मन करए चाहि रहल छला तहिना-तहिना जीवनक सीमांकन करैक विचार सेहो मनमे जगलैन। जीवनक सीमांकन करैक विचार मनमे जगिते विचार उठलैन जे भलेँ पति-पत्नीए किए ने होइ, मुदा जँ पहिने पत्नीक सीमांकन करए लगब तँ हुनका मनमे ईहो उठि सकै छैन जे हमर आलोचना कऽ रहल छैथ, तँए नीक हएत जे पहिने अपने दिससँ सीमांकन शुरू करी। रीतलाल बजला-

“अपन परिवारमे पूर्वजक देल बीस बीघा जमीन अछि, आ

आइ दस-बारह साल स्थायी नोकरीक आशामे समय सेहो बीत गेल, दू हजार रुपैआ महीना जे शुरूमे भेटब शुरू भेल ओतबे अखनो भेट रहल अछि। जइ आशामे समय बीता रहल छी ओ पूर्ति हएत कि नहि तेकरो कोनो निसचित ठेकान नहियेँ अछि। तहूमे देखिते छी जे दस-बर्खक बीच महगाइ सेहो केतेक बढ़ि गेल अछि। जेतेक वस्तु दू हजारमे कीनै छेलौं तेते वस्तुक दाम अखन तीन-चारि हजार भऽ गेल अछि। तैसंग परिवारो बढ़ि रहल अछि आ खरचो बढ़िये रहल अछि।"

पतिक विचार सुशीलाकेँ जँचलैन। जँचबो केना ने करितैन। आँखिक सोझमे सभ किछु देखि रहल छेली। सुशीला बजली-

"हँ, से तँ बढ़िये रहल अछि। तइले ते अपने ने किछु करौ पड़त आ विचारौ पड़त।"

रीतलाल बाजल-

"अपना जे सम्पैत अछि, माने खेत अछि, जँ ओकरा समुचित ढंगसँ क्रियाशील बनाएब तँ ओही पाछू अपन समैयोक सदुपयोग हएत आ आमदनियोँमे केता गुणा वृद्धि हएत, जइसँ परिवरो चलत आ आगूक लेल पूजियो बनैत जाएत जइसँ श्रमक संग पूजी सेहो सहारा होइत जाएत।"

ओना, रीतलालक विचारमे वैज्ञानिक विचार छेलैन, माने आधुनिक सोच रहैन मुदा सुशीला नीक जकाँ नहि बुझि पेब रहल छेली। नहि बुझैक कारण छेलैन जे अखन धरि जे परम्परागत खेती रहल, जे सभ दिनसँ सुशीला देखैत आबि रहल छेली, तही बीच विचार अँटकल छेलैन। आगूक नव दिशा नहि देखि सुशीला अपन हीया हारि बजली-

"हम कहुना भेलौं तँ स्त्रीगणे ने भेलौं, पुरुख-पात्र तँ अहीं ने

छी। बेसी-सँ-बेसी हम अहाँक पीठपर रहब, सहए ने। करब तँ अहीं ने।”

पत्नीक बात सुनि रीतलालक मनमे एकटा सहयोगीक सहयोगक आशा जगलैन। जइसँ मनमे भेलैन जे करैबला लोक तँ असगरो किछु-सँ-किछु कऽ सकैए, तैठाम जँ एकटा सहयोगी भेट जाए तखन तँ आरो ने किछु कऽ सकैए। रीतलाल बजला-

“आजुक जे दुनियाँ अछि ओइमे एहेन-एहेन तकनीकी साधन आबि गेल अछि जे जइ जमीनमे पाँच मन अन्न उपजैए ओइमे पचीस मन उपजत। जरूरत अछि ओकर समुचित बेवस्था करैक। अपनो देखिये नहि रहल छी बल्कि कइयो वएह रहल छी जे बाप-पुरुखा करइ छला।”

अपना जनैत रीतलाल वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखलैन, मुदा सुशीला नीक जकाँ नहि बुझि सकली। असंमजसमे पड़ल सुशीला बजली-

“से केना करब?”

रीतलाल बजला-

“जीवनमे स्वतंत्रसँ किछु करैसँ पहिने मनुष्यकेँ अपनाकेँ स्वतंत्र बनबए पड़तै। जाबे तक अपनाकेँ स्वतंत्र नहि बना लेत ताबे तक अपन काजो आ अपन विचारोकेँ स्वतंत्र रूप सँ आगू नहि बढ़ा सकैए।”

ओना, स्वतंत्र हएब केकरा अधला लगै छै जे सुशीलाकेँ लगितैन। मुदा लोके वा आने जीव-जन्तु केना परतंत्र अछि से सुशीला बुझिये ने पेब रहल छेली। अपना जनैत ओ अपनाकेँ स्वतंत्र बुझिये रहल छेली। किएतँ अपना जनैत अपन जे पारिवारिक काज छेलैन, ओ स्वतंत्र ढंगसँ करिते आबि रहल छेली। ओना, चिड़ैयो-

चुनमुन पिंजराक बाससँ खुला अकासमे भ्रमण करब नीक बुझिते अछि मुदा ओकरामे ओ चेतना नहि छै जे स्वतंत्र-परतंत्रक रूपकेँ बुझत। सुशीला बजली- “की स्वतंत्र आ की परतंत्र?”

रीतलाल बजला- “काल्हि जा कऽ कौलेजक सेक्रेट्रीकेँ कहि देबैन जे हम आब कौलेजक काजमे सहयोग नहि करब।”

कौलेजक नोकरी छोड़ब सुनि सुशीला बजली- “आजुक परिवेशमे नोकरी भेटब कठिन अछि तैठाम अहाँ भेल नोकरी छोड़ब से अपना सन हएत..!”

रीतलाल बजला- “अपना सन तखने हएत जखन अपन विचारानुसार अपन काज बना अपना जीवनकेँ ठाढ़ करब। देखिते छी जे दिनक समय ओही पाछू माने कौलेजक पाछू बीत जाइए, रातिमे घरपर रहै छी, जे समय घरसँ बाहर काज करैक छीहे नहि, तखन अपन काज केना करब?”

पतिक बात सुनि सुशीला गुम भऽ गेली। किछु समय गुम्म रहला-पछाइत बजली- “अपना जे सोहंतगर लागए सहए करू। मुदा..!”

रीतलाल बजला- “मुदा-तुदा किछु ने, बहुतो कौलेजमे देखि रहल छी जे नोकरीक लोभमे शिक्षक अपन जिनगी बीता लेलैन मुदा ने कौलेजक स्थिति बदैल सकल आ ने शिक्षकक संग कर्मचारीक जीवन स्तर सुधैर सकल। जीवन-जीवन छी, तहूमे बुधिजीवी मनुक्खक तँ आरो ओहन छी जे किछु-सँ-किछु कऽ सकैए। केकरो मनुक्ख जीवन एकेबेर भेटै छै, तेकरो जँ पानिमे बहा लेत तखन ओ जीवन की भेल?”

सुशीला बजली- “अपन जे मन मानए सहए करू। मुदा हम एते कहबे करब जे मनक उद्वेगमे एहेन विचार उठि रहल अछि।”

रीतलाल बजला- “मनक उद्वेग जेकरा कहै छिऐ ओ सभटा अधले थोड़े होइए। मनेक उद्वेगमे ने लोककेँ किछु करैक लालसा सेहो जगैए आ किछु करबो करैए। अपने परिवारमे, आइ हम नोकरीकेँ एते महत् दइ छिऐ, मुदा जे नोकरीक फल भेट रहल अछि ओइसँ परिवार चलि सकैए? जखन परिवार चलि नहि सकैए तखन आगूक उन्नैत तँ मात्र कल्पना हएत। पिताजीक अमलदारी तक जे प्रतिष्ठा परिवारक छल आ जीवन स्तर छल, ओतबो आइ अछि? जखन नहि अछि, तखन अपनो दिस ने देखए पड़त जे अपन श्रमशक्ति केतौ-ने-केतौ हेराएल अछि।”

रीतलाल कौलेजक नोकरी छोड़ि देलैन। अपन सम्पैतिकेँ नीक जकाँ सीमांकन केलैन। सीमांकन केला-पछाइत चतुर्दिक उन्नतिक रस्तापर नजैर दौड़ौलैन। आगू नजैर उठिते पहिल चीज देखलैन जे जहिना सभ अपन पदकेँ प्रतिष्ठित रूपमे देखै छैथ तहिना ने अपनो देखि रहल छी। की मनुक्खक प्रतिष्ठा यएह भेल जे उच्च पदपर आसीन भऽ गेलौं, मुदा मनुक्खक जे गुण अछि, जेना नीक आचरण बना जीवन-जापन करब से रहबे ने कएल, तखन ओ प्रतिष्ठे की भेल।

ओना, नव सिरासँ कोनो परिवारकेँ उठैमे साधनक जरूरत, माने पूजीक खगता सेहो पड़ैए, मुदा योजना बना एक्केबेर जँ सभ दिशामे बढ़ए चाहब तखन जँ पूजीक ओरियान कोनो रूपेँ कैयो लेब तैयो काजक ओत्ते बढ़ोत्तरी भऽ जाएत जेकरा सम्हारब कठिन अछिए। तँए नीक हएत जे एक-एक मुद्दाकेँ पकैड़, बेरा-बेरी सुदृढ़ करैत आगू बढ़ी, जइसँ दुनू लाभ हएत। काजमे सुदृढ़ता एने आमदनी सेहो बढ़ैत जाएत आ काजक बेवहारिक अनुभव सेहो होइत जाएत।

मन असथिर करैत रीतलाल विचारए लगला जे जइ काजमे पूजीक ओते आवश्यकतो नहि अछि आ अपनो किछु ओहन पूजी अछिये जे बेकार भेल नष्ट भऽ रहल अछि, पहिने तेकरा जँ उपयोगमे आनि क्रियाशील बनाएब, तँ ओ बेसी नीक हएत। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि मनकेँ असथिर करब। मन चेतनहीन अछि जेकरा चित्त (चेतना) चेतनशील बनबैए, तँए चित्तकेँ असथिर करब आवश्यक अछि। जखने चित्त असथिर हएत तखने मनक क्रिया सेहो असथिर हेबे करत।

योजनानुसार रीतलाल पहिने अन्नक खेती करैक विचार तँइ केलैन। अन्नक खेतीक योजना बनैबते रीतलालक नजैर खेतपर गेलैन जे अढ़ाइ बीघा खेतमे खरहोरि अछि जेकर कोनो उपयोग आब नहि रहल। ने खढ़क जरूरत लोककेँ रहलै आ ने खरहोरिक खेतसँ समुचित उपजे आबि रहल अछि। अगर ओकरा तोड़ि, माने खरहोरिकेँ उपटा अन्नक खेत बना लइ छी तँ सइयो मनसँ ऊपर अन्नक पैदावार हएत। ऐठाम दूटा प्रश्न विचारणीय अछि। पहिल, जे-जे खेत उपजाउ अछि माने जइमे अन्नक खेती होइए ओकरा सभकेँ समुचित ढंगसँ बढ़ाबी। समुचित ढंग भेल, समयपर ओकरा जोत-कोर करैत समयपर अबादब। अबादैक पाछू सेहो एकटा प्रश्न अछि जे परम्परागत बीजकेँ बदैल, उन्नैतशील बीजक उपयोग करब। चिन्तन क्रियाक बीच रीतलालकेँ जेना नव-नव दृष्टिकोणो आ नव-नव विचारो मनमे जगिये रहल छेलैन...। तैबीच रीतलाल अनायासे पत्नीकेँ कहलैन- “अखन धरि जे जिनगी बना जीब रहल छी ओइमे नवीनता आनए पड़त। जखन जिनगीक क्रियामे नवीनता औत तखन ने समैयक संग चलि सकब।”

ओना, सुशीला सोल्होअना पतिक काजो आ विचारोपर ओंगठल छेली तँए ‘हँ-हूँ’ किछु ने बजली।

सुशीलाकेँ चुप देखि रीतलालक मनमे उठलैन जे खाली खढ़े-खरहोरिक बात नहि अछि। कहैले बीघा भरि-भरि दूटा पोखैरियो अछि मुदा अइसँ केतेक आमदनी भऽ रहल अछि। तहूमे समय बदलने माने चापाकल भेने ओकर महत् आरो घटि गेल अछि। तहिना गाछी-कलम सेहो अछि।

तीन बीघा जे पहिलुका गाछी-कलम छेलैन, जे गाछ सभमे पुरान भेने फड़बो कमि गेल छेलैन आ अधिकांश गाछ बिमरियाह सेहो भऽ गेल छेलैन, ओकरा उपटौने एतेक पूजी भइये जेतैन जे अपन विचारक अनुकूल अपन सम्पैतकेँ क्रियाशील बना लेता।

तीन बीघा गाछी-कलमकेँ उपटा जे बीघा भरिक नव सिरासँ कलम लगौलैन ओ फड़ब शुरू भेल।

दस साल बीतैत-बीतैत रीतलाल गामक एकटा सम्पन्न किसान बनि अपनाकेँ स्थापित कऽ लेलैन।

गामो तँ गाम छी, रंग-बिरंगक लोकक बास भूमि सेहो छीहे। रीतलालक गाछी-कलमसँ सटा आन-आन किसान तेना हरोथ बाँस रोपि देलकैन जे गाछक बढ़बाड़ियो रूकि गेल आ फड़ब सेहो बन्न भऽ गेल। पत्नीकेँ रीतलाल कहला- “यहए छी समाज जे दुष्टपनसँ भरल अछि।”

❑

शब्द संख्या : 2317, तिथि : 06 अप्रैल 2020

रहै जोकर परिवार

बैशाख मास। भोरे-भोर रघुनी भाय पहुँचला। अपनो सुति कऽ उठले रही। रघुनी भायकेँ देखिते बजलौं-

“भाय साहैब, भोरे-भोर किमहर सवारी निकलल अछि?”

रघुनी भाय बजला-

“राधे श्याम, तोरेसँ भेँट करए एलौं हेन..!”

काल्हि साँझोमे रघुनी भाय भेटल छला, मुदा किछु कहलैन नहि तँए मनमे तारतम्य हुअ लगल जे जँ कोनो तेहेन काज रहितैन तँ साँझेमे कहने रहितैथ मुदा साँझमे किछु कहलैन नहि आ रातिमे कोन एहेन बात भऽ गेलैन जे भोरे-भोर आबि गेला हेन! बजलौं-

“किए?”

रघुनी भाय बजला-

“राधे श्याम, अदहा जिनगी बीत गेल मुदा अखन तक कोलकाता नहि देखलौं हेन। रातिमे एकाएक मनमे उठल जे देखिते-देखिते लोकक जिनगी बीत जाइए मुदा दुनियोकेँ देखि नहि पबैए।”

रघुनी भाइक विचार सुनि मनमे भेल जे रघुनी भाय ठीके कहै छथि। अपनो उमेर दिस तकलौं तँ बुझि पड़ल जे खाली रघुनीए भाइक अदहा उमेर नहि बितलैन, अपनो तँ बीतिये गेल अछि। अपनो ने कहियो कोलकाता गेलौं हेन। ऐठाम एकटा प्रश्न अछिए जे ‘अदहा उमेर’ केकरा कहबै? जन्मक ठेकान तँ अछि जे फल्लाँक

जन्म फल्लाँ दिन भेल मुदा मृत्युक तँ ठेकान नहियेँ अछि जे के कहिया मरत तखन अदहा उमेर केकरा कहबै? कियो बीसे बर्खमे मरि जाइए, कियो पचास बर्खमे मरैए तँ कियो एहनो तँ अछिए जे साए बरख बीतला पछाइत मरैए। गामेमे देखै छी जे घुरन बाबा एक साए पाँच बर्खमे मुइला, मनोहर बाबा एक साए एक्कैस बर्खमे मुइला। तैबीच अदहा उमेर माने अदहा जिनगी केकरा कहब! ओना, अपना ऐठाम साए बर्खकेँ पूर्ण जिनगी मानल गेल अछि मुदा मरै-जीबैक कोनो बिसवासू आधार नहियेँ अछि।

रघुनी भाय साल भरिक जेठ छथि। जइसँ अपन जिनगीक अनुमान केने छेलौं। अपने ने कहियो स्कूल देखलौं जे उमेरक प्रमाणित सर्टिफिकेट रहत आ ने जन्मक कोनो टिप्पैण अछि जइसँ उमेरक ठेकान पबितौं, मुदा रघुनी भायकेँ से नहि छैन, कौलेज तक पढ़ने छैथ, जइसँ प्रमाणित सर्टिफिकेटो छैन्हे।

जहिना अपन बिसवास सभसँ बेसी रघुनी भायपर अछि तहिना रघुनी भायकेँ सेहो हमरापर छैन। रघुनी भाइक मुँहक बात जे 'दुनियाकेँ नहि देखि पबैए' अपन मनकेँ हिलौलक। हिलौलक ई जे अखन तक दुनियाँकेँ ओतबे टा बुझै छी जेते दूर घुमल-फिरल छी। ओना, लोकक मुहेँ 'कोलकाता' सुनिते आबि रहल छी मुदा कोलकाता छी की, से ने कहियो मनमे विचारे उठल आ ने बुझैक जिज्ञासे भेल। बजलौं-

"बढ़ियाँ विचार अछि। देखिते-देखिते लोकक जिनगी बीत जाइए, ने किछु कऽ पबैए आ ने देखि पबैए। "

ओना, अपन की विचार अछि से स्पष्ट नहियेँ भेल मुदा रघुनी भाइक मनमे जेना बिसवास जगलैन। बजला-

"राधे श्याम, तोरासँ भेँट अही दुआरे करए एलौं जे दूरक

सफर अछि। असगर-दुसगर जाएब नीक नहि, तँए तोरो कहए एलियह जे तोहूँ चलह।"

अपने तँ किछु बुझल-गमल अछि नहि जे केते खर्च हएत आ केते समय लागत। तँए बजलौं-

"भाय साहैब, संग पुरैमे कोनो हर्ज नहि, मुदा खर्च-बर्च केना कि पड़त आ समय केते लगत?"

रघुनी भाय सभ बात पुहुपलालसँ भँजिया नेने छला तँए बुझल छेलैन। रघुनी भाय बजला- "कोनो कि हाथी-घोड़ा कीनब जे बहुत खर्च हएत। भेल तँ गाड़ी-सवारीक भाड़ा-भुड़ी आ खाएब-पीबमे जे पड़त, तेतबे ने खर्च हएत।"

अपना जनैत छाँह-छुँहमे रघुनी भाय बाजि चुकल छला मुदा अपने अन्दाज नहि कए पेलौं जे भाड़ा-भुड़ीमे केते खर्च हएत आ खाइ-पीबैमे केते खर्च हएत। बजलौं-

"भाय, अहूँ कोलकाता नहि गेल छी, तँए ठीक-ठीक नहि बुझल हएत। तहूमे खाली कोलकाता गेनाइये टा रहैत तखन दोसर बात होइत मुदा जखन देखै-सुनैले जाइ छी तखन केते समय लगत आ केते खर्च हएत आ जइ स्थानपर जाएब, तइठामक किछु सनेस नहि आनब, सेहो केहेन हएत। तँए एकटा अनुमान कऽ लेब किने।"

स्वीकार करैत रघुनी भाय बजला-

"राधे श्याम, कोलकाता खाली महानगरे टा नहि ने छी जे बजारे टा अछि। बजारक अतिरिक्तो, जे कोलकातासँ बाहर अछि, दर्शनीय जगह सभ अछि, ओहो ने देखने आएब।"

हूँहकारी भरैत बजलौं- "ठीके किने। गामेक नहि, परोपट्टेक केतेको लोक कोलकातामे नोकरियो करै छैथ आ अपन परिवारो रखने छैथ, मुदा अपना सभ तँ से नहि छी, देखै-सुनैले जाएब आ

देखि-सुनि कऽ घुमि आएब। तँए, ओत्ते ओरियान केनहि ने जाएब जे केतौ कोनो बाधा उपस्थित नहि हुअए।"

मने-मन विचारि रघुनी भाय बजला- "राधे श्याम, जँ ठीक-ठीक बुझल रहैत तँ ठीक-ठीक कहि दैतियह मुदा से नहि अछि। मानि लएह जे एक मास समय लागत आ एक हजार रुपैआ खर्च हएत।"

बैशाख-जेठक समय छी खेती-पथारी अखन कोनो अछिए नहि तँए समैयक तँ कोनो बाते नहि। तैबीच परसू बारह साएमे खस्सी बेचने छेलौं, से रुपैआ हाथमे छेलए-हे। कहलयैन-

"ठीक अछि भाय, जखन विदा होइ, हमहूँ तैयार छी।"

तैबीच पत्नी चाह बना दरबज्जापर आबि गेली। पत्नीक हाथसँ चाहक दुनू कप लैत एक हाथक रघुनी भाय दिस बढ़ैलौं आ एक हाथक अपने रखलौं। ओना, पत्नी सुनि नेने छेली- 'जखन विदा हएब, हमहूँ तैयार छी' तँए ऐगला बात सुनैले छोट डेगे आँगन घुमली। मुदा तैबीच ने अपने किछु बजलौं आ ने रघुनीए भाय किछु बजला। ओना, अपन मन मानि गेल जे पत्नी ऐगला गप सुनै दुआरे डेग छोट कए आँगन दिस बढ़ि रहली अछि, तँए अपने पाशा बदलैत बजलौं- "भाय साहैब, चाह नीक बनल किने?"

कर्ताक मन तँ कर्मपर रहिते अछि तहूमे चर्च कऽ देने छेलौं। रघुनी भाय पाशाकेँ आरो छिड़ियबैत बजला- "धु: चाहोकेँ लोक सुआदि-सुआदि पीबैए। आब तँ चाह पानिये जकाँ लोक केता बेर दिनमे पीबैए तेकर कोनो ठेकान छै।"

पत्नी ताबे अढ़ भऽ गेली, माने अँगना पहुँच गेली। बजलौं-

"रघुनी भाय, खेबो-पीबोक ओरियान करब?"

रघुनी भाय बजला- "हम सभ बात पुहुपलालसँ बुझि नेने छी।

खाइ-पीबैक किछु ने ओरियान करैक अछि, खाली अपन जे देहक कपड़ा पहिरैबला अछि बस तेतबे। कोलकाता जाएब किने, जैठाम अपना देशक कोन बात जे अपन मधुबनी-झंझारपुरमे जे खाइ-पीबैक समानक दाम अछि तेकर अदहा दाममे ओतए भेटैए। तँए जैठाम एतेक सस्ता अछि तैठाम अनेरे गामसँ किए किछु नेने जाएब।"

बजलौं-

"तखन तँ एक गोरेक खर्चमे, माने जेते खर्च मधुबनी-झंझारपुरमे एक बेकतीकेँ खाइ-पीबैमे होइए, तेतेमे दुनू गोरेकेँ कोलकातामे भऽ जाएत।"

रघुनी भाय बजला-

"तेहने सन बुझह।"

बजलौं-

"बड़बढ़ियाँ। घरसँ कहिया निकलब?"

रघुनी भाय बजला-

"परिवार छी किने, किछु-ने-किछु सदिकाल होइते रहैए। तँए, जखन नियारि लेलौं तखन बेसी समय लगबैक थोड़े अछि। काल्हि भोरे विदा भऽ जाएब।"

बजलौं-

"आइ भरि दिन समय अछि। कपड़ो-लत्ता खींच लेब आ काजो सभकेँ गर-गुर लगा लेब।"

दोसर दिन भोरे दुनू गोरे गाड़ी पकड़ए विदा भेलौं। ओना, अपना स्टेशनसँ डायरेक्ट गाड़ी कोलकाताक नहियेँ अछि मुदा दरभंगासँ अछिए। दरभंगा-हाबड़ाक जे गाड़ी अछि ओ दरभंगेसँ

खुजैए, भीड़ो-भड़क्का बेसी नहियेँ छल तहूमे रिजर्व टिकट बनौने छेलौं।

ओना, भीड़-भड़क्का गाड़ीमे बेसी नहि छल मुदा जगहक हिसाबे यात्री तँ छेलैहे। दुनू गोरेक जगह एक्केठाम भेल। बगलमे आन-आन यात्री सभ छला। संजोग एहेन भेल जे दूटा बंगाली यात्री सेहो बगलमे बैसला। गाड़ी जखन दरभंगासँ खुजल तँ ओ दुनू बंगाली यात्री हिन्दीमे गप-सप्प शुरू केलैन। बुझि पड़ल जे दुनू बेपारी छैथ। अपन-अपन वेपारक सम्बन्धमे गप-सप्प करए लगला। ओना, दुनू अपरिचित, एक-दोसरकेँ नहि चिन्हैत, मुदा किछु समैयक पछाइत दुनू हिन्दी छोड़ि बंगलामे गप-सप्प करए लगला। जाबे तक हिन्दीमे गप-सप्प करैत रहला ताबे तक तँ किछु बुझितो छेलौं मुदा जखन बंगलामे गप-सप्प करए लगला तखनसँ किछु ने बुझि पेलौं। बंगलामे गप-सप्प सुनि रघुनी भायकेँ कान लग फुसफुसा कऽ कहलयैन- “भाय, ई दुनू डिब्बामे मारि फँसौत। देखै छिऐ केहेन बढ़ियाँ हिन्दीमे सभ्य जकाँ आप-आपक प्रयोग करै छल आ आब ‘तुमि-तुमि’- तुम-ताम केनाइ शुरू केलक!”

अपना जनैत हम ऐ दुआरे बजलौं जे अपना ऐठाम देखै छी जे पहिने लोक मैथिलीमे गप-सप्प शुरू करैए आ रक्का-टोकी करैत हिन्दीमे पहुँच झगड़ा-झंझट, मारि-पीट करए लगैए। मनमे सहए भेल। तँए रघुनी भायकेँ कहने छेलिऐन। रघुनी भाय बंगला भाषा आ बंगालीक सम्बन्धकेँ बुझै छैथ, बजला-

“राधे श्याम, यएह बंगाली भाषाक शक्ति आ बंगभूमिक खास गुण छी जे जखने एक-दोसरकेँ बंगवासी बुझि जाइ छैथ तखने आन भाषाकेँ छोड़ि अपन मातृभाषामे बाजए लगै छैथ। जइसँ अपनामे अपनत्व बढ़ए लगै छैन।”

रघुनी भाइक विचार उन्टा बुझि पड़ल। उनटा ई जे अपना

ऐठाम जे बच्चो आ कि सियाने मैथिलीसँ अलग हटि हिन्दी वा अंग्रेजीमे बजै छथि तँ हुनका लोक बेसी बुद्धिमान बुझै छैन, आ बंगालीमे तेकर उन्टा अछि। तँए कनी छगुन्ता जरूर लगल। बजलौं-

"से की भाय?"

विचारकेँ सोझरबैत रघुनी भाय बजला-

"राधे श्याम, बंगला भाषा आ बंगला साहित्य जे एते सशक्त अछि एकर यएह कारण अछि जे बंगालक लोक अपन मातृभूमि-मातृभाषाकेँ हृदयसँ बेसी आदर करै छैथ। जे अपना ऐठाम नहि अछि। बजैक क्रममे अपना ऐठामक लोक जेतेक बढ़ा-चढ़ा कऽ बाजि लैथ मुदा बेवहारमे ठीक एकर विपरीत अछि।"

रघुनी भाइक विचारकेँ गहराइसँ तँ नहि बुझि पेलौं मुदा एतेक तँ बिसवास रघुनी भायपर बनले अछि जे ओ ठक-फुसियाह नहि छैथ, तँए झूठ-फूस नहियेँ कहता। तही बीच गाड़ी समस्तीपुर पहुँच गेल। मकैक ओरहा बेचनिहार बोगीमे पहुँचल। पाँच रुपैये बाइल बेचै छल। ओहो दुनू माने दुनू बंगाली यात्री सेहो दूटा बाइल लेलैन आ रघुनी भाय सेहो दूटा बाइल लेलैथ। अखन तक ने रघुनीए भाय हुनका सभसँ माने बंगाली भाय सभसँ किछु पुछने छेलखिन आ ने वएह सभ रघुनी भायकेँ किछु पुछलकैन। मुदा समस्तीपुरक मकै-ओरहा दुनू गोरेकेँ लग अनलकैन। एक गोरे माने एकटा बंगाली यात्री रघुनी भाय दिस घुमि बजला-

"अच्छा है!"

ओना, रघुनी भाय बुझि गेल छला जे दुनू बंगाली छैथ आ अपनो बंगाले जा रहल छी तँए किछु जानकारी करब आवश्यक अछिए। ओ तँ विचारेक आदान-प्रदानसँ बेसी नीक हएत। रघुनियो भाय अपन भाषाक महतकेँ बढ़बैत बजला- "मिथिलाक मुख्य सनेस

छी। ऐ इलाकामे, माने समस्तीपुर इलाकामे मकैक अनेको ढंगक भोज्य विन्यास बनैए। जइमे ओरहो एक विन्यास छी।"

ओना, मैथिली भाषाकेँ ओ दुनू बंगाली नीक जकाँ जानि जाइ छला मुदा बजैमे कनी बंगलाक गन्ध आबिये जाइ छेलैन। ओहो दुनू अधखिज्जू मैथिलीमे गप-सप्प रघुनी भाइक संग करए लगला। एक बेकती मैथिली भाषा-साहित्य आ मिथिलाक्षर लिपिक जानकार सेहो छला। ओ बंगला लिपि आ मिथिलाक्षर लिपिक सम्बन्धमे सेहो बजला। किछु आगू बढ़ला पछाइत माने जखन गाड़ी सिमरिया पुल टपि गेल तखन रघुनी भाय रवीन्द्रनाथ टैगोरक साहित्य आ संगीतक चर्च उठौलैन। रवीन्द्र साहित्यक चर्च उठिते ओ बंगाली बजला-

"जहिना हिन्दी साहित्यजगतमे तुलसीक रामायण आ तुलसीदासकेँ महानसँ महानतम स्थापर रामचन्द्र शुक्ल पहुँचेलैन तहिना कबीरदासक जनभाषा आ जनविचारकेँ रवीन्द्रनाथ पहुँचेलैन।"

अपने तँ साहित्य आ साहित्यकारक विषयमे किछु बुझल नहि अछि तँए चुप्पे रहलौं। मुदा रघुनी भाय साहित्यक नीक जानकार छैथ तँए दुनू गोरेक बीच गप-सप्प हुअ लगलैन। किछुकालक पछाइत रघुनी भाय बजला-

"हमहूँ दुनू गोरे बंगाले जा रहल छी। ओना, जीवनमे पहिल बेर जा रहल छी, तँए नीक जकाँ बुझल-गमल नहियेँ अछि। अपने कने बंगालक विषयमे किछु जानकारी दऽ दिअ जे घुमै-फिरैमे सुविधा हएत।"

ओ बजला-

"बंगालक चौराई तँ कम्मे अछि मुदा नमती बहुत बेसी अछि। दच्छिनमे बंगालक खाड़ीसँ लऽ कऽ उत्तरमे हिमालय तक अछि।

जइसँ अनेको धारो-धुर आ जलवायु सेहो अछिए।”

रघुनी भाय बजला-

“नोकरी-चाकरी करैक खियालसँ तँ बंगाल नहियेँ जा रहल छी, देखै-सुनैक खियालसँ जा रहल छी। ओना, रवीन्द्रबाबू आ शान्तिनिकेतनक सम्बन्धमे किछु-किछु किताबी जानकारी जरूर अछि मुदा कहियो गेल नहि छी।”

शान्तिनिकेतनक नाओं सुनिते ओ, बंगाली भाय जेना फुटि पड़ला। धुरझार शान्तिनिकेतनक प्रशंसा करैत बाजए लगला। जइसँ रघुनी भाइक मनमे सेहो शान्तिनिकेतनक प्रति आकर्षण बढ़ए लगलैन। रघुनी भाय बजला- “शान्तिनिकेतन जाएब केना?”

ओ बजला- “ई गाड़ी माने जइमे चढ़ल छी, हाबड़ा पहुँचा देत। बंगालक दूटा जक्शन एहेन अछि, हाबड़ा आ सियालदह, जैठामसँ बंगालक सभ जगहक लोकल गाड़ी भेटैए। हाबड़ासँ अनेको गाड़ी शान्तिनिकेतनक अछि।”

रघुनी भाय बजला-

“हाबड़ा शान्तिनिकेतनक बीच केतौ दोसर गाड़ी नइ ने बदलए पड़ै छै?”

ओ बजला- “बीचमे केतौ ने गाड़ी बदलए पड़त। चारि-पाँच घन्टाक रस्ता अछि। सोझहे हाबड़ासँ शान्तिनिकेतन पहुँच जाएब।”

बारह बजे रातिमे हाबड़ा स्टेशन पहुँचलौं। ओना, लोकक आवाजाही तेतेक जे राति बुझिये ने पेब रहल छेलौं मुदा घड़ीमे बारह बाजि रहल छल। स्टेशनेक प्लेटफार्मपर दुनू गोरे जाजीम बिछा सुति रहलौं। चारि बजे भोरे उठि अपन नित्य-कर्मसँ निवृति होइत चाह पीलौं। छह बाजि गेल। गाड़ीक टिकट लेलौं। साढ़े छह बजेमे शान्तिनिकेतनक गाड़ी खुजत। गाड़ीमे बैसलौं। गाड़ीमे बैसते रघुनी

भाय शान्तिनिकेतनक विषयमे जानकारी दिअ लगला। ओना, आनो-आन बहुत यात्री शान्तिनिकेतन जाइ छला जइमे किछु देखनिहारो छला आ किछुकेँ अपन घरो छेलैन आ किछु कारोबारियो छला।

साढ़े बारह बजे गाड़ी शान्तिनिकेतन पहुँचल। दुनू गोरे प्लेटफार्मेपर नहेलौं, नहेला पछाइत रोडेपर माने फुटपाथेक दोकानमे जा कऽ खेलौं। सचमुच बुझि पड़ल जे बंगालक होटल अपना ऐठामक होटलसँ सस्ता अछि। छबे रुपैआमे दुनू गोरे भरि पेट खेलौं। ओना, खेनाइ-खेला पछाइत अपन मन असविस करए लगल मुदा रघुनी भाय कहला जे जखन देखै-सुनैले आएल छी, तखन जँ अरामेक पाछू समय लगाएब से नीक नहि। एक गोरेकेँ रघुनी भाय पुछि शान्तिनिकेतनक जानकारी लेलैन। दुनू गोरे विदा भेलौं।

रवीन्द्रबाबूक बनौल शान्तिनिकेतन आ रेलबे स्टेशनक बीच आदिवासी सबहक घर। ओना, देखैमे ओ सभ कारी छल मुदा जेहने सोझ-सपट विचारसँ तेहने बेवहारसँ सेहो छल। दुनू गोरे शान्तिनिकेतनक विश्वभारती महाविद्यालयकेँ फरिक्केसँ देखलौं तँ बुझि पड़ल जे सचमुच हम सभ शान्तिवनक शान्तनिकेतनमे पहुँच गेल छी। आगू बढ़लौं तँ एकटा चिन्हार चेहरा आगूमे देखि पड़ला। हम तँ हुनकापर धियान नहि देलिऐन मुदा रघुनी भाय टकटकी लगा हुनका देखए लगलखिन। ओहो रघुनी भायकेँ निग्हारि बजला-

“अहाँ सभ मैथिल छी?”

मैथिली भाषा तीनू गोरेक बीच सम्बन्ध बढ़ौलक। रघुनी भाय कहलकैन-

“हँ.!”

‘हँ’ सुनिते जेना हुनका बिसवास बढ़ि गेलैन, बजला- “अहाँकेँ

कने-मने चिन्है छी..!”

रघुनी भाय बजला-

“अहूँकेँ कने-मने चीन्हि रहल छी मुदा नीक जकाँ मन नहि पड़ि रहल रहलौं हेन।”

ओ बेकती बजला-

“पहिने चाहक दोकानपर चलू, चाहो पीब आ परिचय-पात सेहो करब।”

सएह भेल। तीनू गोरे चाहक दोकानमे गेलौं। चाहक कप हाथमे लइते ओ बजला-

“अहाँक घर चैनपुर छी?”

रघुनी भाय बजला-

“हँ।”

‘हँ’ सुनिते मुस्कियाइत ओ बजला-

“हमर नाओं शान्तिनाथ छी। हमरो घर चैनपुरे छी। आइसँ तीस बरख पूर्व हम परिवारक झड़-झमेलसँ आजीज भऽ गामसँ पड़ा गेलौं। अपन बपौतीक सभ सम्पैत हुनके सभकेँ माने भाइये सभकेँ छोड़ि देलिऐन। आ ऐठाम आबि विश्वभारतीक कार्यालयमे नोकरी शुरू केलौं। ओना, सोझे ऐठाम नहि पहुँच गेलौं। एकटा बंगाली शिक्षकक संग कलकत्तासँ एलौं। नमहर इतिहास अछि। ओ अखन नहि कहब।”

चाह पीलाक पछाइत शान्तिनाथ अपन कार्यालय पहुँचला। हमहूँ दुनू गोरे संगे रहिऐन। कार्यालयमे बड़ाबाबूसँ कहि हमरा दुनू गोरेकेँ घुमबए-फिरबए लगला। नमगर-चौड़गर विश्वभारतीक आँट-पेट, तँए घुमैत-फिरैत साँझक सात बाजि गेल। पछाइत संगे

शान्तिनाथ अपन डेरापर अनलैन।

चारिटा बाल-बच्चाक संग दुनू परानी शान्तिनाथ रहै छैथ। अपन गाम-समाजकेँ लंका–रावणक लंका–सदृश मानि शान्तिनाथ बजला-

“बौआ रघुनी, रावणक-लंकोसँ बदत्तर अपन समाज अछि। केकरो कियो शान्तिसँ जीबए नहि दिअ चाहैए। जहियासँ ऐठाम एलौं तहियासँ बिलकुल शान्तिसँ जी रहल छी।”

रघुनी भाय बजला-

“अपनो गाम तँ मिथिलेक गाम छी ने?”

शान्तिनाथ बजला-

“हँ, से मानै छी! मुदा जे बेवहार पक्ष अपना गामक अछि, ओ तँ..?”

विचारकेँ आगू नहि बढ़बैत रघुनी भाय बजला-

“हमहूँ दुनू भैयारी देखै-सुनैक खियालसँ आएल छी।”

शान्तिनाथ बजला-

“शान्तिनिकेतन तँ देखिये लेलिऐ, काल्हि सुन्दरवन सेहो देखा देब।”

❑

शब्द संख्या : 2297, तिथि : 15 अप्रैल 2020

परिपक्व निरलज

सूर्यास्तक समय भऽ गेल रहै मुदा सूर्य डुमल नहि छल। अपनौं बाड़ीसँ काज कए नित्यकर्म दिस जेबाक विचार कइये रहल छेलौं कि मनसुख आएल आ बाजल-

“रजनी कान्त भाय, बुधियार भाय जहलसँ एला अछि से चलू कने जिज्ञासा कऽ लिऐन।”

बुधियारक नाओं सुनिते देह जेना सिहैर उठल। सौंसे देहक रूइयाँ ठाढ़ भऽ गेल। ओना, अपनो बुझल छल जे परसू साँझमे बुधियार जहलसँ आएल, मुदा मनमे तेते घृणा ओकरा प्रति अछि जे मन भिन-भिना गेल। केकर जिज्ञासा करए जाएब। ओना, जिज्ञासा करब अधला विचार नहियेँ छी मुदा जिज्ञासोक तँ अपन महत छइहे। आइ जँ कियो जनसेवा वा अपने कोनो एहेन वृत्ति केलाक पछाइत जहल गेल रहैत जइसँ अपने वा जनमानसेक भलाइक विचार निहित रहैत तँ ओइ जिज्ञासाक अपन महत होइत, मुदा जे से नहि भऽ लुचपन्नीक कारणे जहलसँ आएल अछि, तेकर जँ जिज्ञासा करए जाएब तँ तेकर स्पष्ट माने होइए जे अपनो ओहने-ओहने लुचपन्नीक समर्थक छी। जे अपन विचारक ठीक विपरीत बात भेल। बजलौं-

“मनसुख, तूँ जखन बुधियारक जिज्ञासा करए विदा भेल छह ते जाह, मुदा हम नइ जेबह।”

मनसुख समाजक ओहन लोक, जेकरा अपन कोनो वैचारिक दिशा नहि। की नीक आ की अधला तेकर विचार करैक ने जरूरते

छै आ ने से बुझबे करैए। समाजक देखा-देखीक अनुकूल अपनो चलैए आ ओही विचारानुसार हमरो आबि कहलक। अपन तँ विचारो अछि आ विचारक अनुकूल चलैक दिशा सेहो अछि, तँए ओहन-ओहन काजकेँ अधला बुझि परहेज केनहि छी।

समाजमे बुधियारक परिवार सम्पन्न परिवार मानलो जाइए आ अछियो। सम्पन्न ऐ खियालसँ जे जेकरा पचास बीघासँ ऊपर अखनो जमीन छै। चारि भाँइक भैयारीमे भिनौज भेला पछातियो सोमनाथक अमलदारीमे, माने बुधियारक पिता सोमनाथकेँ चारि साए बीघासँ ऊपर जमीन छेलैन। ओना, जमीन्दारी नहि छेलैन, जमीन्दारीक माने भेल रैयतसँ जमीनक मालगुजारी लेब। सोमनाथकेँ से नहि रहैन मुदा रुपैयोक आ धानो-चाउरक महाजनी तँ छेलैन्हे। अन्नक डेढ़िया चलै छेलैन। एक मनसँ डेढ़ मन सूदि-सवाइ चलै छेलैन। जइसँ केते लोकक जमीन कर्जा तरे सोमनाथकेँ भेल छेलैन। अपना मुइला पछाति सोमनाथक चारू बेटामे भिन-भिनौज भऽ गेल। ओना, किछु जमीन एक-दोसर भैयारीमे बेइमानियो भेलैन आ अपना भैयारीमे मुकदमावाजी सेहो भेलैन। जइसँ बहुत जमीन बिकबो केलैन। खाएर जे भेलैन मुदा पचास-पचास बीघा अखनो भैयारीक माथपर जमीन छैन्हे।

बुधियार चालू-पुरजा लोक। सभ पार्टी माने राजनीतिक पार्टीसँ साँठ-गाँठ रखनहि अछि। जखन जेहेन हवा बहल तखन तइ पार्टीक संग भऽ गेलौं आ अपना उल्लू सीधा करैत रहलौं, यएह चरित्र बुधियारक रहल। महाजनी सोल्होअना, माने सूदि-सवाइ समाप्त भऽ गेलैन।

सरकारी योजनानुसार, बैंक राष्ट्रीयकरण भेला पछाइत माने जखन इन्दिराजी प्रधानमंत्री छेली तखन जे बैंक सभ राष्ट्रीयकरण भेल, तेकर पछाइत आमजनकेँ सेहो बैंकक सुविधा प्राप्त भेल।

ओना, शत-प्रतिशत लोककेँ सुविधा नहि भेटलैन। तेकर कारण बैंकक अपन आर्थिक स्थिति सेहो छेलै मुदा किछु लोककेँ सुविधा भेटबे केलैन। ओही सुविधानुसार बुधियार पाँच गोरेकेँ अगुआ माने पाँचटा साधारण किसानकेँ अगुआ बैंकसँ लोन दियौलैन। आ पाँचो अनपढ़ लोक जइसँ अपने लिखै-पढ़ैक लूरि नहि छेलैन। अँगुठाक निशानेसँ काज करै छला। बैंकक मैनेजरसँ साँठ-गाँठ करैत पाँचो गोटेकेँ लोन मंजूरी करौलैन। मुदा लोन लोनीकेँ माने कर्ज नेनिहारकेँ प्राप्त नहि भेलैन। ओ रुपैआ बुधियार अपने उठा लेलैन। साल भरिक पछाइत जखन बैंकक कर्जक तगेदा पाँचोकेँ भेलैन, तखन चारि गोरेकेँ जे मुँह दुब्बर छला, हुनका उनटा-सीधा बुझा बुधियार चुप केने रहला मुदा सिंहेश्वर चकित भेल।

सिंहेश्वरक बहनोइ सेहो चालू-पुरजा लोक। हुनका जा कऽ सिंहेश्वर सभ बात कहलैन जे महींस पोसैक नामपर तीस हजार रुपैआ बैंकसँ लोनक लेल दरखास्त देलिऐ। केते दौड़-बरहा केलाक पछातियो लोन नहि भेटल। जे साल भरि पहिलुका बात छी। ऐ साल माने एक सालक बाद तीस हजार मूर आ ओकर सूद लगा पैंतीस हजार रुपैआ कर्जक तगेदाक नोटिश भेल अछि।

सिंहेश्वरक बात सुनि रघुवीर पुछलखिन-

“अपने बैंकसँ रुपैआ उठेने छेलौं आकि कियो दोसराइतिक हाथे कारोबार केने छेलौं?”

तैपर सिंहेश्वर कहलखिन-

“बुधियारक हथौटी कारोबार केने छेलौं। आइ-काल्हि, आइ-काल्हि करैत जखन तीन मास बीत गेल। ताबे खेतीक समय सेहो आबि गेल छल, हारि-थाकि कऽ छोड़ि देलिऐ।”

सिंहेश्वरक बात सुनि रघुवीर बुझि गेला जे एहेन-एहेन

विचौलिया सभ एहेन-धन्धा करिते अछि। रघुवीर सिंहेश्वरकेँ संग केने बैंकपर गेला। बैंकक मैनेजरकेँ नोटिश देखबैत कहलखिन जे सिंहेश्वर भैंसक लोन लेल दरखास्त जरूर केने छला मुदा अन्तो-अन्त हुनका लोन प्राप्त नहि भेलैन।

बैंकक मैनेजर सभ कागजात मिलबैत कहलखिन-

"हम किछु नहि कए सकै छी। तहूमे तीनिये मास एना भेल अछि, नीक जकाँ सभ किछु बुझलो ने अछि।"

रघुवीर पुछलखिन-

"तखन की उपाय हएत?"

मैनेजर रस्ता बतबैत कहलखिन- "शिकायतिक एकटा दरखास्त बैंकोमे दऽ दियौ। जइसँ हम तत्काल तकेदा करब रोकि देब आ अहाँ आगू बढ़ि जिलाक जे बैंक अछि, जिनका अधीन ऐ सभ बैंकक कारोबार अछि, एकटा दरखास्त हुनका लग दियौ। जँ कोनो तेहेन जानकार लोक होथि तँ हुनका संग कऽ लेब।"

बैंकक मैनेजरक विचारानुसार रघुवीर सएह करैत कहलखिन-

"ठीक छै सर, हम अपने सक्षम छी, किनको जरूरत हमरा नहि अछि।"

कहि रघुवीर घरपर आबि विचारलैन जे अनेरे तेसर-चारिमक भाँजमे की पड़ब। अगर बैंकक जिला ऑफिस जँ नहि किछु करत तँ सोझे न्यायालयमे केस करब। यएह विचारि रघुवीर जिलाक बैंक पहुँचला। बैंकक मैनेजर पंजाबी छला। रघुवीर अपन सभ बात सरदारजीकेँ कहलखिन। सरदारजी, तेसर दिनक समय बना ग्रामीण बैंकक शाखामे पहुँचला। रजिष्टर देखि बुझि गेला जे बैंकक मैनेजर आ विचौलियाक साँठ-गाँठसँ एहेन घटना भेल अछि। बैंकक मैनेजर तँ अपन कागजी मिलानी एहेन हिसाबसँ केने जे पकड़मे नहि आबि

रहल छला मुदा बुधियार तँ पकड़मे आबि गेल। ओही कारबाइमे बुधियार जहल गेल छल। जइमे लोनक आधा माने पनरह हजार रुपैआ जमा करौलाक पछाइत न्यायालयसँ, दस दिन जहलमे रहला पछाइत जमानत भेल छल।

हमर बात सुनि मनसुख बाजल-

“भाय साहैब, अहाँ नहि जाएब तँ नहि जाउ, मुदा समाजक हैसियतसँ हम जाइ छी।”

बजलौं-

“तोरा जेबासँ थोड़े मनाही करै छिअ।”

अदहा घन्टाक पछाइत मनसुख पुन: आएल। अबिते बाजल-

“रजनीकान्त भाय, पहुँचते बुधियार भाय अहींक चर्च उठौलैन।”

बजलौं-

“पहिने ई कहह जे बुधियारक मन केहेन बुझि पड़लह।”

मनसुख बाजल-

“मिसियो भरि मन मलिन नहि बुझि पड़ल।”

बजलौं-

“जखन ओइठाम, बुधियारक ऐठाम गेलह तखन आरो के सभ छला?”

मनसुख बाजल-

“आर कियो ने छला। जाइते बुधियारकेँ पुछलयैन जे कोन लफड़ामे पड़ि गेलौं। कहलैन- हौ, जिनगीमे अहिना होइ छै। जखन पुरुख बनि धरतीपर जनम नेने छी तखन केस-फौदारी आकि जहल-हिरासतक डर करब। जँ से करब तखन एको दिन जीब सकै छी।”

मनसुख मुँहक बात सुनि मनमे उठल जे कहिऐ, ऐ धरतीपर निरलजोक की कमी अछि..! मुदा फेर अपने मन कहलक जे वेचारा मनसुख मुँह दुब्बर लोक अछि, एकरा कहिये कऽ की हएत। आइ जँ बुधियार सोझामे रहैत तँ किछु कहबो करितिऐ। बजलौं-

"हमरा विषयमे बुधियार की सभ कहलखुन?"

मनसुख बाजल- "ओ बजला जे गामक सभ जिज्ञासा करए आएल मुदा रजनीकान्त अखन तक नहि आएल अछि।"

बुधियारक विचार सुनि मन तामससे श्रृंग चढ़ि गेल। एक दिस हुअए जे पहिने दसटा गारि दिऐ, दोसर दिस ईहो हुअए जे गारिये पढ़ब मुदा सुनत तँ नहि। तँए अनेरे गारिये पढ़ि कऽ की हएत। फेर मनमे भेल जे जखन बुधियार मनसुखक सोझामे हमर चर्च केलक से बड़बढ़ियाँ आ हम जँ मनसुखक सोझामे दसटा बात कहबै से बड़ अधला। मनमे अबिते पुन: क्रोधक दोसर तोर मनमे उठि गेल। जेना-जेना तामस उग्र होइत गेल तेना-तेना देहमे थरथरी सेहो तेज हुअ लगल। बजलौं-

"मनसुख, बुधियार हमर के, तीन मे कि तेरह मे। धनीक बापक बेटा छी तँ रहह, तइसँ हमरा कोन मतलब अछि। आइ तक कहियो एक सेर कि एक टका मांगए गेलिऐ।"

बिच्चेमे मनसुख बाजल-

"भाय साहैब, एना जे उक्टा-पैंची करब तँ अनेरे झंझट हएत। जइ झंझटसँ लाभ किछु ने आ नोकसान ढेरी हएत।"

मनसुखक बात सुनि मियाद आरो गरमा गेल। बजलौं-

"झगड़ा-झंझटक डर करब तखन मुँह उठौल हएत। मुँह उठबैले सभ किछु करए पड़ै छै। तोरा बुझल हेतह कि नइ बुझल हेतह। भऽ सकैए जे सुननो हेबह तँ बिसैर गेल हेबह।"

बिच्चेमे मनसुख बाजल- “कनी मोन पाड़ि दिअ। जखने मोन पाड़ि देब तखने मोन पड़ि जाएत।”

बजलौं-

“पाँच साल पहिलुका घटना मोन पाड़ह। सुनने रहक ने जे माइनर एरीगेशनमे नोकरीक बहाली ले दस-बाहर गोरेसँ बीस-बीस हजार रुपैआ बुधियार नेने रहइ। ने केकरो नोकरी भेलै आ ने केकरो रुपैये घुमबैले तैयार भेल।”

मनसुख बाजल- “हँ, अदहा-छिदहा तँ मोनो अछि मुदा अदहा-छिदहा बिसरियो गेलौं। ओही रुपैआ ले ने रूपलाल आ गौरीशंकर बुधियारकेँ चौराहापर पकैड़ कऽ कहने रहै जे जँ तोरा बुते नोकरी नइ दियौल भेलह तँ हमर रुपैआ सूदि लगा कऽ लाबह। नहि तँ एको डेग आगू ससरऽ नहि देबह।”

बजलौं- “हँ!”

मनसुख बाजल- “हँ! हँ! आब मोन पड़ल। सौंसे गामक लोक जे बैस कऽ पनचैती केने रहैथ।”

बजलौं- “हँ। देखने रहक ने जे गाममे कियो बुधियारक जमानतदार होइले तैयार नहि भेला। तेहने निरलज-पतीत बुधियरबा अछि। ई तँ रच्छ रहल जे दीनानाथ काका अपना सिर सभ दोख उठबैत जान बँचौलखिन। नहि तँ ओही दिन तेहेन मरम्मत दुनू गोरे कऽ दइतैन जे पुस्त-पुस्ताइन धरि बुधियारकेँ नीक जकाँ मोन रहितैन।”

दुनू गोरेक माने हमरा आ मनसुखक बीच गप-सप्प होइते छल कि गिरिधारी लाल पहुँचल। गिरिधारी लालकेँ पहुँचते बजलौं- “की हाल-चाल गिरिधारी?”

गिरिधारी लाल बाजल- “भाय साहैब, अहींसँ एकटा विचार

पुछए एलौं हेन।”

बजलौं-

“केहेन विचार?”

गिरिधारी लाल बाजल-

“भाय साहैब, काल्हिसँ केते गोरे कहलैन हेन जे बुधियार जहलसँ एला हेन तँए जिज्ञासा कऽ लहुन।”

बजलौं-

“ऐ मे हम कि विचार देबह। अपन जे मन हुअ से करह।”

गिरिधारी लाल बाजल-

“भाय साहैब, अपना सभ एक विचारक लोक छी, जखन कोनो विचार करैक होइए तखन अहींसँ ने पुछि लइ छी। जँ अपना मने करैक रहैत तँ केने रहितौं किने।”

गिरिधारी लालक विचार सुनि मने-मन विचार केलौं जे पहिने गिरिधारीए लालक मनक विचार किए ने बुझि ली। बजलौं-

“अपन की विचार होइ छह?”

गिरिधारी लाल बाजल-

“भाय साहैब, जँ अपना संग नीक बेवहार बुधियारक रहैत तँ कनी सोचबो-विचारबो करितौं मुदा मन अछि कि नहि जे स्कूल लगहक जे पँचकठबा खेत अछि, ओइ खेतक बेचनामा दाम-दीगर हमरासँ केने रहए। अदहा रुपैआ सेहो दऽ देलिऐ आ पछाइत डाकपर चढ़ा ओइ खेतकेँ दोबर दाममे जागेसरक हाथे बेच लेलक। अपने जे रुपैआ देने रहिऐ ओ छह मास तक घिसियौर कटा कऽ देलक।”

ओना, ई बात अपनो बुझलो छल आ मोनो छल, मुदा दुनूक

बीच बीचक सम्बन्ध दुआरे बजलौं- “कनी-कनी मनो अछि मुदा नीक जकाँ मोन नहि पड़ि रहल अछि।”

गिरिधारी लाल बाजल-

“आठ-दस बरख तँ भइये गेल अछि, भरिसक तेँ बिसैर रहल छी।”

बातकेँ आरो मटियबैत बजलौं- “हौ गिरिधारी भाय, देखिते छहक जे केते धनचक्करमे सदिकाल पड़ल रहै छी, तँए भरिसक मनसँ उतैर गेल।”

गिरिधारी लाल बाजल-

“भाय साहैब, बुधियारक बेटीक दुरागमन रहइ। हाथमे पाइ-कौड़ी नइ रहै जे काज सम्हारैत। हमरा कहलक जे गिरिधर भाय, स्कूल लगहक खेत बेचब। तोरा खेतक आड़ियेमे अछि, लऽ लएह। आठ हजार रुपैये कट्ठाक हिसाबसँ चालीस हजार दाम भेल। कहलिऐ जे काल्हिये रजिष्ट्री ऑफिस चलह, ओतइ सभ रुपैओ दऽ देबह आ तोहूँ रजिष्ट्री कऽ दिहह।”

बजलौं- “आब कनी-कनी बात मोन पड़ल जाइए।”

गिरिधारी लाल बाजल-

“तइ पर ओ कहलक जे पाँचमे दिन बेटीक दुरागमन छी। बुझिते छहक जे बेटीक दुरागमनमे केतेक जोगार करए पड़ै छै। तँए अखन रजिष्ट्री ऑफिस जेबाक पलखैत नहि अछि। तहूमे बीचक दू दिन ऑफिस बन्नो रहइ। अपनो मनमे भेल जे बेटी-जाति तँ समाजक होइए, तँए बीस हजार रुपैआ लगले दऽ देलिऐ। बेटीक दुरागमन भेला पछाइत जखन रजिष्ट्री करैले बुधियारकेँ कहलिऐ तखन तीन-तेरह देखबए लगल। जमीनकेँ डाकपर चढ़ा देलक। सहए छी ओ बुधियरबा।”

बजलौं-

“जमीनक की भेल?”

गिरिधारी लाल बाजल-

“की हएत। डाकक भीर नहि गेलौं। जमीनक डाकक माने जमीने मात्रक डाक नइ ने होइए। समाजमे दुश्मनियो बढ़ै छै किने।”

जेते बात गिरिधारी लाल बाजल ओ तँ अपनो बुझले रहए, मुदा सात-आठ बरख पहिलुका बात रहै तँए अनठा कऽ बाजल छेलौं। बजलौं-

“खाएर, जे जहिया भेल से तहिया भेल। औझुका की विचार छह से बाजह?”

जहिना बरखा भेलापर कोनो सुखल धारमे खेत-पथारक पानि एने धारा बनि बहए लगैए आ पाछूसँ पहाड़क पानिक संग गाम-घरक खेत-पथारक पानि मिलि पाछूसँ आबि धारक धाराकेँ प्रवल बना दइए जइसँ धारक पेट उफानपर उठि जाइए तहिना गिरिधारी लालक विचारमे उफान उठि गेल। बाजल-

“भाय साहैब, अपना समाजमे यएह सभसँ पैघ कमजोरी अछि जे लगले लोक कोनो बातकेँ बिसैर जाइए। जइसँ समाजक गति-विधि कमजोर होइत-होइत एते कमजोर बनि गेल अछि जे अपन कोनो चीन्हि-पहचिन्ह रहियेे नहि गेल छइ।”

गिरिधारी लालक विचारमे सह दैत बजलौं-

“तखन की करैक विचार छह?”

गिरिधारी लाल बाजल-

“अपन विचार अछि जे जिज्ञासा करए नहि जाएब।”

अपन जान बँचबैत बजलौं- “जखन अपन विचार नइ जेबाक

छह तखन नइ जाह। गाममे केकरो कोइ मालिक छी जे नइ जेबह ते कियो गामसँ उजारि देतह।”

गिरिधारी लालकेँ जेना सह भेटलै तहिना बाजल-

“भाय साहैब, जइ मनुक्खकेँ आइन नहि आ जइ बरदकेँ पाइन नहि ओहो कोनो मनुक्खे भेल आकि बरदे भेल।”

गिरिधारी लालक विचार सुनि हँसी लगि गेल। मुदा हँसीकेँ दाबि बजलौं-

“गिरिधारी भाय, अपना समाजक सभसँ पैघ दुर्बलता यएह छी जे जइ समाजक पेटमे एते प्रवल शक्ति अछि जइसँ किछु कए सकैए, ओ समाज ओहन मरल पड़ल अछि जे जेकरा कोनो गति गुद्दा नहि छइ।”

ओना, गिरिधारी लालक मनमे बुधियारक प्रति आगि धधैक रहल छेलै, मुदा ऐठाम तँ ओ छल नहि जे ओइ आगिकेँ आरो धधकबैत। तैयो अपन मनक आक्रोशकेँ आक्रोशित करैत गिरिधारी लाल बाजल-

“भाय साहैब, जँ समाजमे एकरूपता रहैत तँ ओहन-ओहन निरलज-पतीतकेँ बीच चौराहापर ठाढ़ कए समाज मुँहपर थुकैत। मुदा समाजो तँ तेहेन बनि गेल अछि जे के केकरा थुकत।”

बजलौं-

“गिरिधर भाय, देखिते छहक जे समाजो बिनु डोराडोरिक मनुक्ख जकाँ बनि गेल अछि। तखन तँ अपन इज्जत-आबरू बँचबैत मनुक्ख बनि जीब ली यएह सभसँ पैघ उपलब्धि भेल।”

हमर बात जेना गिरिधारी लालकेँ जँचल तहिना बाजल-

“ठीके कहलौं, भाय सहाएब।”

बजलौं- “आब की करबह?”

गिरिधारी लाल बाजल-

“कियो अपन जीवनक अपने मालिक छी। ओना, समाजमे रंग-बिरंगक दुष्ट सेहो अछि, मुदा ओइ दुष्टक बीच अपन विचार आ बेवहारकेँ जहाँ धरि सम्भव हुए तहाँ धरि रक्षा करैत जीवन जीब ली, यएह ने भेल मनुक्खक सभसँ पैघ मनुक्खपना।”

बजलौं-

“हँ, से तँ भेबे कएल।”

गिरिधारी लाल बाजल-

“ऐ भागक सुर्ज ओइ भाग किए ने उगै, मुदा अपन विचारकेँ कोनो हालतमे बदैल नहि सकै छी। नइ जाएब बुधियरबाक जिज्ञासा करए, जाइ छी अपन घर।”

बजलौं-

“जाह।”

❑

शब्द संख्या : 2232, तिथि : 20 अप्रैल 2020

❑❑❑

❑❑

❑

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक लोकार्पित कृति सभ:

1. गामक जिनगी: (कथा संग्रह- 2009), लोकार्पण- डॉ. कमला चौधरी

2. मौलाइल गाछक फूल: (उपन्यास- 2009), लोकार्पण- डॉ. रामवतार यादव

3. उत्थान-पतन: (उपन्यास- 2009), लोकार्पण- डॉ. वीणा ठाकुर

4. जिनगीक जीत: (उपन्यास- 2009), लोकार्पण- डॉ. मोहन मिश्र

5. मिथिलाक बेटी: (नाटक- 2009), लोकार्पण- डॉ. राजेन्द्र विमल

6. तरेगन: (प्रेरक कथा संकलन- 2010), लोकार्पण- डॉ. रमानन्द झा 'रमण'

7. जीवन-मरण: (उपन्यास- 2010), लोकार्पण- कुमार रामेश्वर लाल दास

8. जीवन संघर्ष: (उपन्यास- 2010), लोकार्पण- कथाकार अशोक (श्री अशोक कुमार झा)

9. बजन्ता-बुझन्ता: (बीहैन कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री अरूण कु. सिंह SDO

10. शंभुदास: (दीर्घ कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- सदरे आलम 'गोहर'

11. उलबा चाउर: (कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री विनोद कुमार साह

12. अर्द्धांगिनी: (कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री दुर्गानन्द मण्डल

13. सतभैंया पोखैर: (कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- प्रो. जय प्रकाश साह

14. भकमोड़: (कथा संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री नन्द विलास राय

15. नै धाड़ैए: (उपन्यास- 2013), लोकार्पण- श्री गुरुदयाल भ्रमर

16. बड़की बहिन: (उपन्यास- 2013), लोकार्पण- श्री शारदानन्द सिंह

17. इन्द्रधनुषी अकास: (काव्य संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री रामलखन यादव

18. तीन जेठ एगारहम माघ: (गीत संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री चन्दन कुमार झा

19. राति-दिन: (काव्य संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री रामजी प्रसाद मण्डल

20. सरिता: (काव्य संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री बालमुकुन्द पाठक

21. गीतांजलि: (पद्य संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री अमित मिश्र

22. सुखाएल पोखरिक जाइठ: (काव्य संग्रह- 2013), लोकार्पण- श्री बिपीन कुमार कर्ण

23. कम्प्रोमाइज: (नाटक- 2013), लोकार्पण- श्री रामप्रवेश मण्डल

24. झमेलिया बिआह: (नाटक- 2013), लोकार्पण- श्री वीरेन्द कुमार यादव

25. रत्नाकर डकैत: (नाटक- 2013), लोकार्पण- श्री कौशलय कृष्ण

26. स्वयंवर: (नाटक- 2013), लोकार्पण- श्री शम्भु सौरभ

27. पंचवटी: (एकांकी संचयन- 2013), लोकार्पण- श्री राजदेव मण्डल

28. गामक शकल-सूरत: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री ओम प्रकाश झा

29. लजबिजी: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री श्यामानन्द चौधरी

30. समरथाइक भूत: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु

31. अप्पन-बीरान: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री सच्चिदानन्द 'सचिद'

32. बाल गोपाल: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री राम कुमार मण्डल

33. रटनी खढ़: (दीर्घ कथा संग्रह) 2014), लोकार्पण- श्री फागुलाल साहु

34. पतझाड़: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- उमेश नारायण कर्ण 'कल्पकवि'

35. गढ़ैनगर हाथ: (कथा संग्रह- 2014), लोकार्पण- श्री कपिलेश्वर राउत

36. अपन मन अपन धन: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. केष्कर ठाकुर

37. उकडू समय: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. प्रेम शंकर सिंह

38. मधुमाछी: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

39. पसेनाक धरम: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. खुशीलाल मण्डल

40. गुड़ा-खुद्दीक रोटी: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. दुर्गा प्रसाद साह

41. फलहार: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. राम अशीष सिंह

42. खसैत गाछ: (कथा संग्रह- 2015), लोकार्पण- डॉ. भीम नाथ झा

43. ठूठ गाछ: (उपन्यास- 2015), लोकार्पण- श्री कमलेश झा

44. कल्याणी: (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्रीमती आशा देवी

45. सतमाए: (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्री मदन प्रसाद साहु

46. समझौता: (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्री मनोज कुमार साहु

47. तामक तमघैल: (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्री हेम नारायण साहु

48. बीरांगना: (एकांकी- 2015), लोकार्पण- श्री राजा राम यादव

49. एगच्छा आमक गाछ: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- श्री अमर नाथ झा

50. शुभचिन्तक: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- श्री लक्ष्मी नारायण सिंह

51. गाछपर सँ खसला: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- डॉ. शिव कुमार प्रसाद

52. डभियाएल गाम: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- श्री राजदेव मण्डल

53. गुलेती दास: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

54. मुड़ियाएल घर: (कथा संग्रह- 2016), लोकार्पण- श्री रघुवीर मोची

55. बीरांगना: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री नारायण यादव

56. स्मृति शेष: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु

57. बेटीक पैरुख: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्रीमती मुन्नी कामत

58. क्रान्तियोग: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री दुर्गानन्द मण्डल

59. त्रिकालदर्शी: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री राम लषण राम 'रमण'

60. पैंतीस साल पछुआ गेलौं: (कथा संग्रह- 2017), लोकार्पण- श्री तुरन्त लाल मण्डल

61. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं: (उपन्यास- 2017), लोकार्पण- ई. कमलाकान्त भारती

62. दोहरी हाक: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु

63. सुभिमानी जिनगी: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- डॉ. शिव कुमार प्रसाद

64. देखल दिन: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री महावीर प्रसाद

65. गपक पियाहुल लोक: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री चण्डेश्वर खाँ

66. दिवालीक दीप: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री नीरज नारयण पाण्डेय SDO

67. अप्पन गाम: (कथा संग्रह- 2018), लोकार्पण- डॉ. शिव शंकर श्रीनिवास

68. लहसन: (उपन्यास- 2018), लोकार्पण- डॉ. कमलकान्त झा

69. पंगु: (उपन्यास- 2018), लोकार्पण- श्री अरविन्द ठाकुर

70. आमक गाछी: (उपन्यास- 2018), लोकार्पण- डॉ सुरेन्द्र कुमार सिंह

71. सतबेध: (गीत संग्रह- 2018), लोकार्पण- श्री प्रीतम कुमार 'निषाद'

72. खिलतोड़ भूमि: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री कृष्ण कान्त झा

73. चितवनक शिकार: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री जय प्रकाश मण्डल

74. चौरस खेतक चौरस उपज: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री जय प्रकाश मण्डल

75. समयसँ पहिने चेत किसान: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

76. भौक: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु

77. गामक आशा टुटि गेल: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री उमेश नारायण कर्ण

78. पसेनाक मोल: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री लक्ष्मेश्वर राय (विधायक)

79. चुनौती: (कथा संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री नारायण यादव

80. रहसा चौरी: (गीत संग्रह- 2019), लोकार्पण- श्री शारदानन्द सिंह

81. कृषियोग: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- श्री शैलेन्द्र आनन्द

82. हारल चेहरा जीतल रूप: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- प्रो. उषा चौधरी

83. रहै जोकर परिवार: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- पं. शशिनाथ झा (कुलपति)

84. कामधेनु: (गीत संग्रह- 2020), लोकार्पण- प्रो. धीरेन्द्र कुमार

85. मन मथन: (गीत संग्रह- 2020), लोकार्पण- श्री रामजी प्रसाद मण्डल

86. अकास गंगा: (गीत संग्रह- 2020), लोकार्पण- श्री राम विलास साहु

87. सुचिता: (उपन्यास) 2020), लोकार्पण- डॉ. अशोक अविचल

88. कर्ताक रंग कर्मक संग: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- डॉ. योगानन्द झा

89. गामक सूरत बदैल गेल: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- श्री अरविन्द प्रसाद

90. अन्तिम परीक्षा: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- डॉ. शिव कुमार प्रसाद

91. घरक खर्च: (कथा संग्रह- 2020), लोकार्पण- प्रो. विद्यानाथ झा

92. मोड़पर: (उपन्यास- 2021), लोकार्पण- प्रो. शंकर झा

93. संकल्प: (उपन्यास- 2021), लोकार्पण- श्री राम कृष्ण परार्थी

94. अन्तिम क्षण: (उपन्यास- 2021), लोकार्पण- श्री अरविन्द प्रसाद

95. नीक ठकान ठकेलौं: (कथा संग्रह- 2021), लोकार्पण- डॉ. ज्वालानाथ तेज

96. कुण्ठा: (उपन्यास- 2021), लोकार्पण- श्री अशोक

97. पयस्विनी: (निबन्ध-प्रबन्ध- 2021), लोकार्पण- श्री अरविन्द ठाकुर

98. जीवनक कर्म जीवनक मर्म (कथा संग्रह- 2021), लोकार्पण- डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास

99. संचरण: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

100. भरि मन काज: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- ई. शैलैन्द्र मण्डल

101. आएल आशा चलि गेल: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- श्रीमती शीला मण्डल

102. जीवन दान: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- श्री विनोद कुमार साह

103. अप्पन साती: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- श्री शारदा नन्द सिंह

104. साहित्यकारक विवेक: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- डॉ. विभूती आनन्द

105. नब बनक नब फल: (कथा संग्रह- 2022), लोकार्पण- श्री हीरेन्द्र कुमार झा

106. सुनयना बेटी: (उपन्यास- 2023), लोकार्पण- डॉ. कमल कान्त झा

107. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल: (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- डॉ. धनाकर ठाकुर

108. बासभूमि: (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- डॉ. महेन्द्र नारायण राम

109. टकुआटान: (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- श्री राम नरेश यादव

110. एकलव्यपन: (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- श्री चन्द्रेश

111. एक चुटकी खुशी: (कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- श्री झौली पासवान

112. नियति आ पुरुषार्थ: (बाल कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- शीघ्र

113. श्रद्धा: (बाल कथा संग्रह- 2023), लोकार्पण- शीघ्र

❑❑❑

❑❑

❑

Notes